# दिव्य प्रबन्ध

## आऴ्वार प्रणीत पद संचयन



संकलन, सम्पादन एवं रूपान्तर

एन. सुन्दरम

आल्वारों की प्रेमभक्ति का अनुभव—परीवाह तमिळ में पद्यमाला के रूप में वैष्णव भक्ति साहित्य के नाम से प्रसिद्ध है, जिसमें 4000 पद्य हैं। इस विपुल साहित्य को *नालायिर दिव्य प्रबन्धम्* कहते हैं। भाषा की सरलता और भक्ति-भाव से परिपूर्ण होने के कारण ये पद्य-प्रबन्ध दक्षिण में अधिक लोकप्रिय हैं। यह ग्रंथ चतुःसहस्री चौबीस प्रबन्धों में विभक्त है।

द्रविड़ प्रदेश में उत्पन्न वैष्णव भक्त **आल्वार** कहलाते हैं। 'आल्वार' *शब्द का अर्थ भगवत्प्रेमसागर में डूबनेवाले अर्थात् ईश्वरीय ज्ञान के मूल-तत्त्व तक पहुँचकर उनके ध्यान में मग्न रहनेवाले हैं।* इन भक्तों ने अपने आराध्यदेव का साक्षात्कार करके, उसके सौलभ्य, परत्व गुणों के अनुभव को अपने ललित पदों में व्यक्त किया है। ये आल्वार बारह हैं—1. पोॅयूगै आल्वार 2. बूदत्तु आल्वार 3. पेयाल्वार 4. तिरुमलि़शै आल्वार 5. नम्माल्वार 6. मदुर कवि आल्वार 7. कुलशेकराल्वार 8. पेॅरियाल्वार 9. आण्डाळ 10. तोॅण्डर् अडिप्पोॅडि आल्वार 11. तिरुप्पाणाल्वार और 12. तिरुमंगै आल्वार।

आल्वारों का समय छठी शताब्दी से नवीं शताब्दी तक है। इनका सिद्धान्त है कि श्रियः पति नारायण ही परतत्त्व हैं, जो जगतकारण हैं। वही प्रपंच की सृष्टि, स्थिति और संहार का मूल कारण हैं। समस्त चेतन और अचेतन उनके शरीर हैं। आल्वार भक्तों ने प्रभु को स्वामी और अपने को दास मानकर उसकी कृपा से, उसकी चरणों की सेवा करना ही पुरुषार्थ बतलाया है।

आल्वार प्रभु-सामीप्य रूप मोक्ष को उत्तम मानते हैं। उनके लिए दास्य भाव से प्रभु की सेवा करना ही मोक्ष है। समस्त जगत् और वस्तुओं को भगवान के शरीर रूप में अनुभव करते हैं। सर्वत्र ईश्वर स्वरूप को ही देखनेवाले आल्वार नीलाकाश निहारकर श्रद्धा के साथ कहते हैं, "यह मेरे प्रियतम का बैकुण्ठ है।" समुद्र को देखकर कहते हैं, "यह मेरे प्रभु का विश्राम स्थल है।"

आल्वारों ने अपने आराध्य देव श्रीमन्नारायण के स्वरूप, रूप, गुण और लीला का अनुभव विभिन्न प्रकार से किया है। यह अनुभव भी विचित्र रूप से हुआ, कभी भक्त के रूप में, कभी नायिका के रूप में, कभी माता के रूप में, कभी पिता के रूप में। इस विलक्षण अनुभव का रसास्वादन करने के लिए ही प्रस्तुत संकलन तैयार किया गया है।

ISBN 81-260-1813-5

**मूल्य : एक सौ बीस रुपये**

# दिव्य प्रबन्ध

अस्तर पर छपे मूर्तिकला के प्रतिरूप में राजा शुद्धोदन के दरबार का वह दृश्य, जिसमें तीन भविष्यवक्ता भगवान बुद्ध की माँ—रानी माया के स्वप्न की व्याख्या कर रहे हैं, इसे नीचे बैठा लिपिक लिपिबद्ध कर रहा है । भारत में लेखन-कला का सम्भवतः सबसे प्राचीन और चित्रलिखित अभिलेख ।

नागार्जुन कोण्डा, दूसरी सदी ई.

सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली

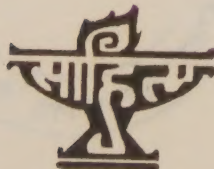
# दिव्य प्रबन्ध

## आऴ्वार प्रणीत पद संचयन

संकलन, सम्पादन एवं रूपान्तर

**एन. सुन्दरम**






साहित्य अकादेमी

**Divya Prabandh** : Compiled & Edited by N. Sundaram in Hindi of selected padas from Alwar's *Divya Prabandham* in Tamil, Sahitya Akademi, New Delhi (2004). Rs. 120

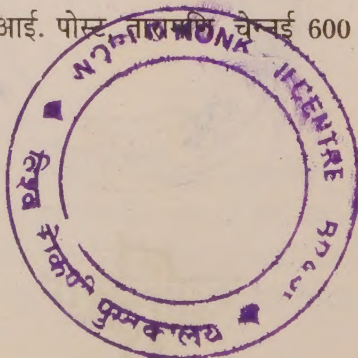

प्रथम संस्करण : 2004 ई.

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय
रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली 110 001
विक्रय विभाग : स्वाति, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली 110 001

क्षेत्रीय कार्यालय
जीवनतारा बिल्डिंग, चौथी मंज़िल, 23 ए/44 एक्स,
डायमंड हार्बर रोड, कोलकाता 700 053
172, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग, दादर, मुंबई 400 014
सेंट्रल कॉलेज परिसर, डॉ. बी. आर. आम्बेडकर वीथी, बंगलौर 560 001

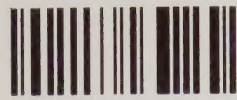
चेन्नई कार्यालय
सीआईटी कैम्पस, टी.टी.टी.आई. पोस्ट, तारमणि, चेन्नई 600 113



ISBN 81-260-1813-5

मूल्य : एक सौ बीस रुपये

शब्द संयोजक एवं मुद्रक :
विकास कम्प्यूटर एण्ड प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032




# अनुक्रम

# वक्तव्य

आऴ्वारों की प्रेमभक्ति का अनुभव—परीवाह तमिल में पद्यमाला के रूप में वैष्णव भक्ति साहित्य के नाम से प्रसिद्ध है, जिसमें 4000 पद्य हैं। इस विपुल साहित्य को *नालायिर दिव्य प्रबन्धम्* कहते हैं। भाषा की सरलता के कारण, भक्ति-भाव से परिपूर्ण होने के कारण ये प्रबन्ध दक्षिण में अधिक लोकप्रिय हैं। ये आऴ्वार बारह हैं। यह चतुःसहस्री चौबीस प्रबन्धों में विभक्त है। यह चार खण्डों में है। आऴ्वार शब्द का अर्थ है प्रेमभक्ति सागर मग्न।

आऴ्वारों ने अपने आराध्य देव श्रीमन्नारायण के स्वरूप, रूप, गुण और लीला का अनुभव विभिन्न प्रकार से किया है। यह अनुभव भी विचित्र रूप से हुआ, कभी भक्त के रूप में, कभी नायिका के रूप में, कभी माता के रूप में, कभी पिता के रूप में। इस विलक्षण अनुभव का रसास्वादन करने के लिए ही प्रस्तुत संकलन तैयार किया गया है। प्रत्येक आऴ्वार के साहित्य से कुछ चुने हुए पद मूल रूप के साथ लिप्यन्तरण के साथ भावानुवाद सहित दिए गए हैं। इस अनुवाद के विषय में कुछ निवेदन करना है। हिन्दी पाठकों को ध्यान में रखकर स्वतन्त्रता के साथ भावानुवाद यहाँ प्रस्तुत है। अनुवाद के विषय में मेरा पूरा प्रयास यही रहा कि मूल कविताओं के अर्थ को स्पष्ट करनेवाले पर्यायवाची शब्दों का यथासम्भव प्रयोग हो। यह शब्दानुवाद नहीं है। इसे छायानुवाद अथवा भावानुवाद कहना ही समीचीन होगा। अनुवाद मूलपाठ के समान प्रतीत हो, हिन्दी भाषी को सहज और स्वाभाविक लगे, और सम्प्रेषणीयता में यथासम्भव दूरी कम हो जाए—यही मेरा पूरा ध्येय रहा है। पाद टिप्पणी अधिक देकर पाठ को बोझिल बनाना नहीं चाहता। पौराणिक कथाएँ और सांस्कृतिक शब्दावलियों के लिए आवश्यक पाद टिप्पणी देकर समझाने का प्रयास किया गया है। संकलन के लिए पदों को चुनते समय भक्ति के विविध रूप, आऴ्वारों का नाना प्रकार के अनुभव, शैली, सिद्धान्त आदि का ध्यान रखा गया है।

मैंने इस संकलन के अनुवाद के लिए शान्तिनिकेतन से प्रकाशित पं. श्रीनिवास राघवन कृत *दिव्य प्रबन्ध* के अनुवाद ग्रन्थों से पूरी सहायता ली है। कई शब्दावलियों को बिना परिवर्तन किए मूल रूप से लिया है। *दिव्य प्रबन्ध* का अनुवाद करते समय मैंने पण्डित श्रीनिवास राघवन के साथ पूरा सहयोग दिया था। इतना ही नहीं, अनुवाद में भी हाथ बँटाया था इसलिए उनके अनुवाद ग्रन्थों से कई शब्दावलियों को लेने का

अधिकार मुझको है। इस अधिकार में पण्डितजी का वात्सल्य, स्नेह, ममता आदि निहित है। इसके अतिरिक्त *मीरा और आण्डाळ का तुलनात्मक अध्ययन ग्रन्थ* से भी सहायता ली है। भाषान्तर में मत वैभिन्य हो सकता है। पर मैंने मूल पाठ के साथ पूरा न्याय किया है। इस अनुवाद में कहाँ तक सफल हो पाया हूँ, यह मेरे पाठक ही जाने। अनन्त कृपालु श्रीमन्नारायण से प्रार्थना है कि सहृदय पाठकों के लिए अरुळ-कृपा, प्रेम, आनन्द का मार्ग दिखाने का अनुग्रह करें।

**एन. सुन्दरम**

# दिव्य प्रबन्ध–एक परिचय

## भक्ति का उदय

इस देश की एकता का सबसे प्रमुख स्रोत है भक्ति। भक्ति देश की ही एकता नहीं, विश्व की एकता को प्रेरणा देनेवाली शक्ति के रूप में प्रवहमान रही है। इस भक्ति के विकास में वैष्णव-भक्ति का योगदान सर्वोपरि है। सौर देवताओं में सूर्य के गतिशील, व्यापनशील और ऋतुचालक रूप को विष्णु में केन्द्रित किया गया। विष्णु के साथ शंख-चक्र का प्रतीक आया। विष्णु के साथ नैतिक मूल्यों के दूसरे शब्दों में धर्म के रक्षक होने का भाव जुड़ा। विष्णु के व्यापक अप्रमेय रूप को अभिव्यक्त करने के लिए ही उनको श्याम वर्ण दिया गया तथा भू देवी या श्री से सम्बद्ध मानकर उनके एक हाथ में कमल का सम्बन्ध स्थापित किया गया।[1]

विष्णु की इस कल्पना में, पुरुष कल्पना का भी योग है। इस पुरुष कल्पना में प्रजापति, विश्व के आदि पुरुष तथा सृष्टि की अव्यक्त अवस्था की उद्‌बोधक शक्ति इन तीनों का योग है। *इन तीनों के योग से ही नारायण की कल्पना मूर्त रूप धारण कर सकी है।*

वैदिक सामाजिक व्यवस्था, आनृण्य-ऋण से मुक्ति पर आधृत थी। *शतपथ ब्राह्मण* में चार ऋणों की कल्पना है।[2] इस आनृण्य व्यवस्था ने निष्काम कर्म की भूमिका बनाई तथा सन्यास का आदर्श प्रस्तुत किया। मनुष्य दायित्व लेकर उत्पन्न होता है, अधिकार लेकर नहीं। *इस प्रकार की विनम्रता का भाव ही भक्ति की नैतिक आधारशिला का निर्माण करता है।*

## आगम परम्परा

भक्ति के उदय में दूसरा महत्त्वपूर्ण योग तान्त्रिक या आगम परम्परा का है। वैदिक परम्परा का प्रभाव भक्ति के आध्यात्मिक आधार तक सीमित है। भक्ति के वाह्य अनुष्ठान को तथा रागात्मक अभिनिवेश को आकार मिला है आगम परम्परा से ही। वैदिक उपासना ने जो पूजा का रूप ग्रहण किया और इष्टदेवता एवं आराध्यदेव

---

1. *The Philosophy of the Srimad Bhagavatha*-Sidheswar Bhattacharya. Pp.64-65
2. ऋषिऋण से मुक्ति, पितृ ऋण से मुक्ति, देवऋण से मुक्ति, मनुष्यऋण से मुक्ति।

एक अमूर्त कल्पना न होकर मूर्त एवं अनुभाष्य सत्ता के रूप में आया, वह तान्त्रिक अनुष्ठान का ही प्रभाव था। जहाँ वैदिक अनुष्ठान में देवता की आवाह्न-स्तुति होती है वहाँ अब देवता का ध्यान कल्पित हुआ। यह ध्यान मन को एकाग्र करने में तथा दूसरे विषयों में विनिवृत्त करने में सहायक हुए। पूजा के उपकरण वस्तुतः प्रतीक हैं। चन्दन जीवन की उस वासना का प्रतीक है, जो इष्ट देवता के लिए अर्पित है। पुष्प बौद्धिक जीवन के सार रूप का प्रतीक है। नैवेद्य अशेष भोग को अर्पित करने का प्रतीक है। तान्त्रिक पूजा में देवता अधिक वैयक्तिक सन्निधि में आए और उनका सत्कार षोडशोपाचार इस प्रकार किया गया कि वे अपने प्रिय अतिथि हैं। वैदिक दृष्टि और तान्त्रिक दृष्टि में यह समानता है कि प्रत्येक व्यक्ति एक साथ दोनों है, व्यष्टि भी समष्टि भी।[1] तन्त्र का यह एक मूलभूत सिद्धान्त है कि मनुष्य प्रकृति के भीतर से गुज़रकर प्रकृति के माध्यम से ही उठता है न कि प्रकृति का निषेध करके। तान्त्रिक पद्धति विषयों के प्रति आसक्ति को छिन्न नहीं करती है बल्कि एक नियमित दिशा में प्रवाहित करती है। **वह देह में ही देवता का अधिष्ठान मानती है।** इसलिए तान्त्रिक दृष्टि में अपनी अन्तर्वृत्तियों के अनुशासन या दूसरे शब्दों में योग का महत्त्व अधिक है। योग और भूत शुद्धि का महत्त्व अधिक है। यह भूत शुद्धि प्राणायाम के द्वारा कुण्डलिनी को मूलाधार से जागृत करके ऊपर उठाने से होती है। इस उन्नयन का क्रम क्रमशः पाँच भूतों को पार करके एक तत्त्व तक पहुँचने का क्रम है।

तान्त्रिक साधना में देवता के आगे दास्य भाव से अपने व्यक्तित्व का पूर्ण विलयन किया जाता है। तदनुसार अभ्यास के द्वारा अपने भीतर की दिव्य शक्ति का अभ्युत्थान किया जाता है। सख्य भाव के उदय से अपने को सहचर बनाया जाता है तथा प्रेम भाव के उदय के द्वारा आराध्य देवता को अपने में आत्मसात् किया जाता है। **भक्ति माया का निषेध नहीं है।** एक उद्देश्य और सार्थक लीला में रूपान्तर है। यह लीला विघटन नहीं है, संयोजन है। यह लीला साकांक्ष दिव्यता की पूर्ति से प्रेरित है।

तान्त्रिक दृष्टि के प्रभाव के कारण ही जप, लीलानुकरण, नृत्य, संगीत, कला जैसे सौन्दर्य-बोध के साधनों का भक्ति में समावेश हुआ है। यह भक्ति ही उच्च-से-उच्च भारतीय सांस्कृतिक चेतना की अभिव्यक्ति का केन्द्र बनी, चाहे वह मन्दिर रचना या निर्माण हो, शिल्प रचना हो, चित्र आलेखन हो, काव्य रचना हो, नाट्य या संगीत रचना हो, इस प्रत्येक रचनात्मक सौन्दर्य-बोध का केन्द्र भगवत् भक्ति है।

*तन्त्र का दूसरा प्रभाव है, गुरु दीक्षा का महत्त्व।* वैदिक परम्परा में गुरु का स्थान इतना महत्त्वपूर्ण नहीं है। तान्त्रिक दृष्टि में गुरु-दीक्षा जन्म-जन्मान्तर के लिए होती थी। सारा जीवन ही अर्पित हो जाता है। उससे निवृति की कोई सम्भावना ही नहीं रह जाती थी।

---

1. *Philosophies of Heinrich Zimmer*, Pp. 575

## पौराणिक परम्परा :

### अवतार सिद्धान्त

इन दोनों परम्पराओं का संश्लेष पौराणिक परम्परा में हुआ। पौराणिक परम्परा में तन्त्र के लोकप्रिय और लोकमोहक विश्वास को, वैदिक परम्परा के नैतिक बोध से जोड़ा। अवतारवाद का सिद्धान्त इसलिए स्वीकृत हुआ कि ईश्वर अधिक मानवीय संवेदना के समीप आ सके। अवतारवाद ने मनुष्य को विश्वास और शक्ति दोनों प्रदान की। पुराणों ने अहिंसा और करुणा, ईश्वर भक्ति, मानववाद, कर्त्तव्य-बोध तथा सामाजिक गुणों एवं परम्परागत मूल्यों के प्रति आदर भाव—इनके ही ऊपर अपने नैतिक बोध का निर्माण किया। *पुराणों की सबसे बड़ी सफलता जन चेतना को विभिन्न ईश्वरीय लीलाओं के सौन्दर्य, औदार्य और नैर्मल्य के साथ रागबद्ध करने में हैं। पुराणों ने दिव्य अनुभव को कथाओं और प्रतीक योजनाओं से इतना सुगम बनाया कि नर और नारायण के बीच का सम्बन्ध एकदम सीधा या निकट का हो गया।* चाहे वह प्रेमी के रूप में हो, चाहे वात्सल्यमयी माता के रूप में हो, चाहे कृपालु प्रभु के रूप में, स्नेही-सखा के रूप में, या वत्सल शिशु के रूप में। उनकी लीला इतिहास की सीमाओं को विगलित करके शाश्वत सत्य के रूप में प्रेरक हो गई।

### भक्ति का सामाजिक रूप

भक्ति ईश्वर के प्रति परम प्रेममय तथा अमृतानन्दमय भाव है।[1] यह परमप्रेम काम के स्पर्श से रहित[2] क्योंकि इसमें लौकिक या पारलौकिक किसी भी प्रकार की प्रवृति का अपने आप निरोध हो जाता है।

भक्ति ने सामाजिक कर्त्तव्य के अनुष्ठान की गारण्टी पाप-पुण्य के विवेक के आधार पर नहीं बल्कि ईश्वर केन्द्रित होने के आधार पर दी। इसने ईश्वर के विरोधी के प्रति भी घृणा भाव जागृत न करके उपेक्षा भाव जागृत किया। इसने व्यक्ति के मोक्ष को उतना महत्त्व नहीं दिया जितना कि मुक्त व्यक्ति के द्वारा बद्ध जीव के क्लेश को। इसलिए भक्त के लिए जन्म, विद्या, कुल गोत्र, पुण्य के आधार पर ऊँच-नीच का बोध व्यर्थ हो गया, क्योंकि सभी एक समान ईश्वरमय है। बिना विषय त्याग किए सन्यास इसलिए सम्भव हो सका कि ईश्वर को अर्पित कर देने मात्र से सन्यास पूरा हो सकता है।

व्यक्ति के दुख को समष्टि के दुख से एकाकार करके देखने की प्रवृति पर भक्ति ने जो बल दिया है उसके कारण व्यक्ति का दुख छोटा हो गया और मोक्ष से भी अधिक उदार जीवन का प्रयोजन सामने आ गया।

---

1. 'सा' त्वस्मिन परम प्रेमरूपा अमृतस्वरूप च' *नारद भक्तिसूत्र*-2-3, गीता प्रेस, गोरखपुर
2. सा न कामयमाना निरोधरूपत्वात्—*नारद भक्तिसूत्र*

### भक्ति का लक्ष्य

भक्ति का चरम लक्ष्य 'मैं' और 'तुम' का बोध समाप्त हो जाए। उसी हालत में *भक्ति का प्रयोजन न तो आत्म पीड़न है न अन्धकार का बोध है। न अनचीह्नी स्थिति का तादात्म्य है। भक्ति का मार्ग ही अधिक स्पष्ट और अधिक आह्लादमय तथा अधिक उदार है।*[1]

## वैष्णव भक्ति आन्दोलन

हमें यहाँ जिस भक्ति से विशेष रूप से सम्बन्ध है वह है वैष्णव भक्ति। वैष्णव भक्ति का प्रतिपादन एक निश्चित सम्प्रदाय के रूप में ईसा की पहली शताब्दी के आसपास अवश्य हो चुका था। उस समय तक कुछ प्रमुख पांचरात्र संहिताओं की रचना भी हो चुकी थी। दक्षिण भारत की संहिताओं में सबसे प्राचीन 'ईश्वर संहिता' है। इसमें द्रविड़ी श्रुति या तमिल़ वेद का प्रामाण्य स्वीकार कर लिया है। 'उपेन्द्र संहिता' में श्रीरंग मन्दिर का विवरण है।[2] उनमें पाँच मुख्य बातें कही गई हैं–तत्त्व, सृष्टि-रहस्य, मुक्ति, भक्ति-योग और वैशेषिक इन्द्रिय-विषय हैं। *ये ही आगे चलकर नारायण की पंचविध अभिव्यक्तियों के कारण प्रसिद्ध हुए–पर, व्यूह, विभव, अन्तर्यामी और अर्चा।* पांचरात्र संहिताओं में ईश्वर के छः गुण बताए गए–ज्ञान, ऐश्वर्य, शक्ति, बल, श्रम-हानि और धारण सामर्थ्य। *इन छः गुणों के समुदाय को ही 'वासुदेव' पर-रूप कहते हैं। चार व्यूह–कृष्ण, संकर्षण, प्रद्युम्न और अनिरुद्ध हैं। इन्हीं व्यूहों या व्यूहान्तरों का जब भूमि पर अवतरण होता है तो वे अवतार कहलाते हैं।* इन अवतारों की संख्या दस से लेकर उनचास तक बतलाई गई है। पांचरात्र दर्शन की विशेषता यह है कि इसमें अद्वैत की भाषा तो है पर मायावाद नहीं है। *सबके मन में रहनेवाले भगवान को अन्तर्यामी कहते हैं। मन्दिरों में मूर्ति अर्चा का प्रयोजन ही है लोक बुद्धि को सन्तुष्ट और प्रेरित करनेवाला भगवान का रूप।* अर्चा पूजन की परम्परा–आगमों, स्मृतियों और पुराणों में मिलती है।

## विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त

आल़वार साहित्य के आधार पर ही विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त का निर्माण हुआ।[3] अद्वैत सिद्धान्त में परब्रह्म ही परम तत्त्व माना जाता है। शेष सब–जीवात्मा, जगत्

---

1. *The social aspect of the Bhakti Movement, An approach by* Dr. Vidya Niwas Mishra
2. *Introduction of the Pancharatra and the Ahirbudhnya* : F. Otto Schrader, Ph. Pp.17-34
3. "रामानुज, आल़वार सन्तों की मानस सन्तान थे। भक्ति की भावनात्मक अनुभूति पहले →

उसी परम तत्त्व के अन्दर स्वप्नवत् क्षणभंगुर माना जाता है परन्तु विशिष्टाद्वैत में चित, अचित और ईश्वर सत्य हैं। इस सिद्धान्त का नाम विशिष्टाद्वैत इसलिए पड़ा—ब्रह्म ही कारणावस्था और कार्यावस्था दोनों में रहता है।

प्रलय काल में चेतन और अचेतन सूक्ष्म रूप में तथा सृष्टि के समय स्थूल रूप में परब्रह्म के शरीर होकर रहते हैं। इन दोनों अवस्थाओं में विशिष्ट रूपों में अद्वैत होने के कारण यह सिद्धान्त विशिष्टाद्वैत कहलाता है।

यद्यपि यामुनाचार्य, नाथमुनि, शटकोपाचार्य जैसे पूर्ववर्ती आचार्य इस सिद्धान्त के पहले प्रतिपादक रहे हैं तथापि रामानुजाचार्य के द्वारा यह सिद्धान्त व्यवस्थित रूप से अधिक प्रकाश में लाया गया। उन्होंने अद्वैत सिद्धान्त का खण्डन करके विशिष्टाद्वैत को सर्वमान्य सिद्ध किया। विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त संक्षेप में इस प्रकार है—

1. यह भुवन सत्य है। 2. इस भुवन के नियन्ता श्रियः पति नारायण हैं। 3. श्रियः पतिस्वरूप श्री परब्रह्म हैं। 4. यह भुवन ही उनका शरीर है। 5. चेतनस्वरूप समस्त जीव परब्रह्म से भिन्न हैं। 6. परमात्मा के संकल्प से इस सत् संसार की सृष्टि होती है। 7. भक्ति ही संसार से मुक्त होने का एकमात्र उपाय है। 8. इसी मार्ग से जीव परमपद को प्राप्त कर भगवान के समस्त गुणों का अनुभव करता है।

मधुसूदन सरस्वती ने भक्ति की 11 भूमिकाएँ बतलाई हैं। इन भूमिकाओं में सबसे प्रथम महत्त्व भगवद्भक्तों की सेवा का है। भक्ति भगवान में निरन्तर रहनेवाले सन्तों की सेवा के बिना प्राप्त नहीं होती। सन्त के आचरण के प्रति श्रद्धा होने पर ही भगवान के गुण सुनने में रुचि जगती है। तब भगवद् प्रेम अंकुरित होने पर स्वरूप का बोध होता है और प्रेम बढ़ते-बढ़ते ईश्वर के समक्ष ला देता है। इसी विधान का वर्णन नवधा भक्ति में हैं।[2] भगवदनुभूति में शब्द अपर्याप्त रह जाता है। वह दिव्य अनुभव की गूँज मात्र बनकर आता है। इन्हीं सिद्धान्तों के आधार पर आल़वारों की भक्ति-साधना यहाँ प्रस्तुत की जाती है।

## आल़वार साहित्य का संक्षिप्त परिचय :

श्रीमद्भागवत के माहात्म्य में द्रविड़ प्रदेश को भक्ति का जन्म स्थान कहा गया है। कबीरदास भी 'भक्ति उपजी द्राविडी' मानते हैं।[3] माहात्म्य के अनुसार भक्ति

---

→ आल़वार सन्तों को हुई थी। रामानुज ने उन अनुभूतियों से भक्ति का दार्शनिक सिद्धान्त निकाला था।" *राजर्षि अभिनन्दन ग्रन्थ,* रामधारी सिंह दिनकर : पृष्ठ 359

2. श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं, पादसेवनम्।
   अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यमात्म निवेदनम्॥

3. भक्ति द्राविड उपजी, लाए रामानन्द।
   परगट कियो कबीर ने, सात दीप नौ खंड॥

कर्नाटक में युवती बनकर रही, वही महाराष्ट्र, गुजरात में आते-आते वृद्धावस्था के कारण शिथिल हो गई, आगे चलते-चलते उसके ज्ञान, वैराग्य प्रभृति पुत्रों का निधन हो गया और वृन्दावन में पहुँचते ही पुनः उसने जीवन प्राप्त कर लिया।[1] श्रीमद्भागवत में कहा गया है कि वैष्णव भक्त दक्षिण के ताम्रपर्णी, कृतमाला (वैगै), पयस्विनी (पालारु), कावेरी, और महानदी (पेरियार) के पवित्र तटों पर उत्पन्न होंगे।[2]

द्रविड़ प्रदेश में उत्पन्न वैष्णव भक्त **आऴ्वार** कहलाते हैं। 'आऴ्वार' *शब्द का अर्थ भगवत्प्रेमसागर में डूबनेवाले अर्थात् ईश्वरीय ज्ञान के मूल-तत्त्व तक पहुँचकर उनके ध्यान में मग्न रहनेवाले हैं।* इन भक्तों ने अपने आराध्यदेव का साक्षात्कार करके, उसके सौलभ्य, परत्व गुणों के अनुभव को अपने पदों में व्यक्त किया है। ये आऴ्वार बारह हैं।[3] वे–

| तमिऴ् नाम | अनूदित संस्कृत नाम |
|---|---|
| 1. पोॅयूगै आऴ्वार | सरोयोगिन् |
| 2. बूदत्तु आऴ्वार | भूतयोगिन् |
| 3. पेयाऴ्वार | महायोगिन् |
| 4. तिरुमऴिशै आऴ्वार | भक्ति सार |
| 5. नम्माऴ्वार | शठकोप |
| 6. मदुर कवि आऴ्वार | मधुर कवि |
| 7. कुलशेकराऴ्वार | कुलशेखर |
| 8. पेॅरियाऴ्वार | विष्णुचित्त |
| 9. आण्डाळ | गोदा |
| 10. तोॅण्डर् अडिप्पोॅडि आऴ्वार | भक्ताङ्घ्रिरेणु |
| 11. तिरुप्पाणाऴ्वार | योगिवाह |
| 12. तिरुमंगै आऴ्वार | परकाल |

---

1. उत्पन्ना द्राविडे चाहं, कर्णाटे वृद्धिमागता।
स्थिता किंचिन्महाराष्ट्रे, गूर्जरे जीर्णतां गता ॥ *पद्मपुराण* व *श्रीमद्भागवत*
2. कलौ खलु भविष्यन्ति नारायणपरायणाः। क्वचित् क्वचित् महाभागाः द्रविडेषु च भूरिशः।
ताम्रपर्णी नदी यत्र कृतमाला पयस्विनी। कावेरी च महाभागा प्रतीची च महानदी ॥
*श्रीमद्भागवत* : 11-5-38
3. "भूतं सरश्च महदाह्वय भट्टनाथ श्री भक्तिसार कुलशेखर योगिवाहा।
भक्ताङ्घ्रिरेणु परकाल यतीन्द्र मिश्रान् श्रीमत्परांकुश मुनि प्रणतिऽस्मि नित्यम् ॥"
पिल्लान के इस श्लोक में आण्डाळ का नाम नहीं है। सम्भवतः वे उसको पेॅरियाऴ्वार की मानसपुत्री मानते हों।

इन आल़वारों द्वारा रचित कुल पद चार हजार हैं। इन पदों का संग्रह 'चार हजार दिव्य प्रबन्ध'–*नालायिर दिव्य प्रबन्ध*–कहलाता है। इसका पूरा विवरण नीचे दिया जाता है–

| | पद संख्या |
|---|---|
| नम्माल़वार | 1296 |
| तिरुमंगै आल़वार | 1253 |
| पे॑रियाल़वार | 473 |
| तिरुमलि़शै आल़वार | 213 |
| आण्डाळ | 173 |
| कुल शेखर आल़वार | 105 |
| पो॑यूगै आल़वार | 100 |
| भूदत्तु आल़वार | 100 |
| पेयाल़वार | 100 |
| तो॑ण्डर अडि पो॑डियाल़वार | 55 |
| मधुरकवि आल़वार | 11 |
| तिरुप्पाणाल़वार | 10 |

इसके अतिरिक्त वैष्णव सम्प्रदाय के प्रवर्तक और आचार्य रामानुज स्वामी के प्रति रचित 108 स्तोत्र पद भी *चार हजार दिव्य प्रबन्ध* में संग्रहीत हैं। यह विवरण 'निगमान्त महादेशिकन' द्वारा सम्पादित *चार हज़ार दिव्य प्रबन्ध* में दिया गया है। इन चार हज़ार पदों को विषयानुसार एक-एक हज़ार के चार भागों में विभाजित किया गया है। इन चार भागों के अलग नाम भी यथाक्रम प्रसिद्ध हैं–

**पहला हज़ार (इशैप्पा)**

| रचयिता | कृति | पद संख्या |
|---|---|---|
| 1. पॅरियाल़वार | पे॑रियाल़वार तिरुमो॑लि़ | 473 |
| 2. आण्डाळ | तिरुप्पावै | 30 |
| 3. कुलशेखराल़वार | नाच्चियार तिरुमो॑लि़ | 143 |
| 4. तिरुमलिशैयाल़वार | पे॑रुमाळ तिरुमो॑लि़ | 120 |
| 5. तॉण्डरडिप्पॉडियाल़वार | तिरुच्चन्दवृत्तम् | 45 |
| 6. तिरुप्पाणाल़वार | तिरुमालै | |
| 7. मधुरकवियाल़वार | तिरुप्पळि़ळये॑लुच्चि | 10 |
| | अमलनादिपिरान् | 10 |
| | कण्णिनुण् शिरुत्ताम्बु | 11 |

दूसरा हज़ार (तिरुमॉलि़)

| रचयिता | कृति | पद संख्या |
|---|---|---|
| 1. तिरुमंगैयाल़वार | पॅरिय तिरुमॉलि़ | 1085 |
| | तिरुक्कुरुन्ताण्डकम् | 20 |
| | तिरुनॅडुन्ताण्डकम् | 30 |

तीसरा हज़ार (तिरुवाय्मोलि़)

| रचयिता | कृति | पद संख्या |
|---|---|---|
| 1. नम्माल़वार | तिरुवाय्मॉलि़ | 1102 |

चौथा हज़ार (इयर्पा)

| रचयिता | कृति | पद संख्या |
|---|---|---|
| 1. पॉयूगै आल़वार | प्रथम तिरुवन्तादि | 100 |
| 2. भूदत्तु आल़वार | द्वितीय तिरुवन्तादि | 100 |
| 3. पेयाल़वार | तृतीय तिरुवन्तादि | 100 |
| 4. तिरुमलि़शैयाल़वार | नान्मुकन् तिरुवन्तादि | 96 |
| 5. नम्माल़वार | तिरुवृत्तम् | 100 |
| 6. तिरुमंगैयाल़वार | तिरुवाशिरियम् | 7 |
| | पॅरिय तिरुवन्दादि | 87 |
| | तिरुवॅलुकूर्रिरुक्कै | 1 |
| | शिरिय तिरुमड़ल | 40 |
| | पॅरिय तिरुमडल | 78 |
| | रामानुज नूट्रन्दादि | 108 |

इस प्रकार *चार हज़ार दिव्य प्रबन्ध* में चौबीस ग्रन्थ संगृहीत हैं। *दिव्य प्रबन्ध* का यह रचना-संग्रह नाथमुनि के समय में सम्पादित हुआ था। आल़वन्दार ने नम्माल़वार को आचार्य के स्थान पर प्रतिस्थापित किया। रामानुजाचार्य ने इस *दिव्य प्रबन्ध* की सहायता से अन्य धर्मावलम्बियों को पराजित कर वैष्णव धर्म की प्रतिस्थापना की। उन्होंने इन आल़वारों द्वारा रचित प्रबन्ध को आधार बनाकर *ब्रह्मसूत्र भाष्य* की रचना की। तब से वे भाष्यकार के नाम से प्रसिद्ध हुए। कूरत्ताल़वान और उसके सुपुत्र पराशर भट्ट ने *दिव्य प्रबन्ध* के सार को संस्कृत में स्तोत्रों के रूप में चित्रित किया है।

यह *दिव्य प्रबन्ध* 'दक्षिण वेद' कहलाता है। चौदहवीं शताब्दी के आसपास श्रीवेदान्त देशिक ने *दिव्य प्रबन्ध* की निन्दा करनेवाले अन्य धर्मावलम्बियों को पराजित कर यह सिद्ध किया कि 'दक्षिण वेद' (*दिव्य प्रबन्ध*) संस्कृत में विरचित वेद की तुलना में किसी भी स्तर में कम नहीं कहा जा सकता है। वेदान्त देशिक के कारण

ही वैष्णव सिद्धान्त (उभय वेदान्त) के रूप में प्रसिद्ध हुआ।

समस्त *दिव्य प्रबन्ध* के लिए संस्कृत मिश्रित तमिऴ् में, जिसे 'मणिप्रवाळ शैली' कहते हैं, टीका लिखनेवालों में 'पॅरियवाच्चान रिळळै' का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इसी 'मणिप्रवाळ शैली' में 'अऴकिय मणवाळप् पॅरुमाळ' ने आऴ्वार भक्तों की रचनाओं से सार संग्रह के रूप में *आचार्य हृदयम्* नामक ग्रन्थ की रचना की।

## आऴ्वारों का समय

आऴ्वारों के पदों के आधार पर तथा तमिऴ् शैली को ध्यान में रखकर देखें तो यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि आऴ्वारों का समय 'तृतीय संघोत्तर काल' के उपरान्त ही है क्योंकि सारे सन्त कवि अपनी रचना के अन्त में 'संघत् तमिऴ्' घोषित करते हैं।[1]

इसके अलावा आऴ्वारों की रचना में संघ काल साहित्य का प्रभाव अधिक मात्रा में उपलब्ध है और अपने समय के राजाओं का तथा मन्दिर निर्माण के दाताओं का उल्लेख इनके पदों में मिलता है। *इन सबके आधार पर हम कह सकते हैं कि आऴ्वारों का समय छठी शताब्दी से नवीं शताब्दी तक है।*[2] *प्रपन्नामृत* ग्रन्थ के आधार पर कह सकते हैं कि नाथमुनि 825 ईस्वी में पैदा हुए थे। वे 93 वर्ष तक जीवित रहे। इससे यह सिद्ध होता है कि इसके पूर्व ही आऴ्वारों का समय रहा होगा।

## आऴ्वारों का सिद्धान्त

सभी आऴ्वारों का सिद्धान्त है कि श्रियः पति नारायण ही परतत्त्व हैं, जो जगतकारण है। वही प्रपंच की सृष्टि, स्थिति और संहार का मूल कारण हैं। समस्त चेतन और अचेतन उनके शरीर हैं। आऴ्वार भक्तों ने प्रभु को स्वामी और अपने को दास मानकर उसकी कृपा से, उसकी चरणों की सेवा करना ही पुरुषार्थ बतलाया है। आऴ्वार परमात्मा को प्रेमी और अपने को उसके मिलन के लिए तड़पनेवाली प्रेयसी का अनुभव करते हैं। यही मधुर भक्ति या रागानुराग भक्ति कहलाता है। प्रियतमा के सदृश ('साजन') से मिलन का सुख और विरह का दुख भोगते हैं।

आऴ्वारों की भक्ति में दास्य, वात्सल्य तथा कान्ता तीनों भावों की प्रधानता है। कुलशेखराऴ्वार ने तो अपने को माता कौशल्या या देवकी मानकर श्यामसुन्दर को

---

1. संगमुकत् तमिऴ् मालै पत्तुम, वल्लाय 3-4-10
   *पॅरिय तिरुमॉऴि*–3-4-10 संगत् तमिऴ् माले मुप्पदुम्, तिरुप्पावै, पद-30
2. तमिऴ् इलक्किय वरलारु : ई. एस. वरदराजय्यर
   (कोंच् चॅगणान् के मन्दिर निर्माण कार्य और नन्दिवर्मन नामक पल्लव राजा के युद्ध आदि तिरुमंगै आऴ्वार से वर्णित है।)

अपना लाडला पुत्र समझकर भावानुभूति को प्रकट किया है। तिरुमंगैयाल़्वार का अनुभव तो और भी विलक्षण है। वे श्रीरामचन्द्रजी का अनुभव करते-करते रावण को अपना शत्रु मानकर युद्ध के लिए प्रस्तुत हो जाते हैं। पेॅरियाल़्वार द्वारा परतत्त्व का वर्णन तथा वात्सल्य का वर्णन अत्यन्त विलक्षण है। पेॅरियाल़्वार सूरदास की भाँति वात्सल्य के रसराज हैं। आण्डाळ तो कृष्ण की भक्ति में और स्वयं को गोपी समझती है। नम्माल़्वार का मत है जैसे पत्नी अपने पति के आश्रय में रहती है वैसे ही भक्त को भगवान के आश्रय में रहना चाहिए। उनकी भक्ति 'दास्य भाव' की है। वे आत्मनिवेदन द्वारा प्रभु के समक्ष अपने पापों को अनावृत कर रख देते हैं। आपका मत है कि यदि भक्त के हृदय में प्रभु के लिए पवित्र श्रद्धा और प्रेम की भावना हो तो प्रभु का अहेतुक प्रेम भक्त को अनायास प्राप्त होता है। नम्माल़्वार अपने को प्रभु की पत्नी के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

आल़्वारों का सिद्धान्त यही है कि वे प्रभु-सामीप्य रूप मोक्ष को उत्तम मानते हैं। दास्य भाव से प्रभु की सेवा करना ही मोक्ष है। समस्त जगत् और वस्तुओं को भगवान के शरीर रूप में अनुभव करते हैं। उनका स्पष्ट निर्देश है कि श्रीमन्नारायण के अलावा अन्य देवों पर आस्था नहीं रखनी चाहिए। आल़्वार, सर्वत्र ईश्वर स्वरूप को ही देखते हैं। नीले आसमान को निहारकर श्रद्धा के साथ कहते हैं, "यह मेरे प्रियतम का बैकुण्ठ है।" समुद्र को देखकर कहते हैं, "यह मेरे प्रभु का विश्राम स्थल है।" सर्प के पीछे दौड़ते हुए गदगद् भाव से कहते हैं, "देखो! मेरे प्यारे की शय्या को।" "मेरे खाने का भोजन, पीने का पानी, चर्वण का पान सब कृष्ण हैं।"[1] इसी भगवदनुभव से प्रफुल्लित होकर भक्त श्रीमन्नारायण की जय-जयकार करते हैं।



1. नम्माल़्वार के पद

# प्रथम तीन आऴ्वार

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पॉय्गै आऴ्वार | (सरोयोगिन्) | - | प्रथम तिरुवन्तादि | - | 100 |
| भूततु आऴ्वार | (भूतयोगिन्) | - | द्वितीय तिरुवन्तादि | - | 100 |
| पेयाऴ्वार | (महायोगिन्) | - | तृतीय तिरुवन्तादि | - | 100 |

## जीवनी एवं साहित्य

प्रथम तीन आऴ्वारों की रचना क्रमशः पहला, दूसरा और तीसरा तिरुवन्तादि के नाम से प्रसिद्ध हुई। इन्होंने कुल तीन सौ पद रचे हैं। इन तीनों आऴ्वारों का परमात्मा के सभी रूपों पर प्रेम है, विशेषकर वामन अवतार के प्रति इनका आकर्षण है। अर्चा में (मन्दिर की मूर्ति) तिरुप्पति के वेंकटाद्रि नाथ पर इनका अधिक मोह है। भगवदनुभव के प्रसारण में अन्य आऴ्वारों के लिए ये तीनों मार्गदर्शक हैं। अतः ये प्रथम तीन आऴ्वार कहलाते हैं।

बहिर्साक्ष्य के आधार पर डॉ. कृष्ण स्वामी अय्यंगार ने इन तीनों आऴ्वारों का आविर्भाव दूसरी शताब्दी के आसपास माना है। दूसरी शताब्दी से पाँचवीं शताब्दी तक तमिऴ् प्रदेश कळप्पिरर् नामक राजाओं द्वारा शासित रहा। इस काल में धार्मिक आन्दोलन के लिए कहीं भी प्रावधान नहीं रहा है। अतः अन्तःसाक्ष्य के आधार पर प्रथम तीन आऴ्वारों का समय छटी शताब्दी के आसपास माना जा सकता है। इन आऴ्वारों के पदों में पल्लव राजा नरसिंह पल्लव द्वारा निर्मित मामल्लपुर का उल्लेख मिलता है। नरसिंह पल्लव ने ई. 625 से 660 तक राज किया था।[1] इन आऴ्वारों की जीवनी के बारे में अनेक प्रकार की दन्तकथाएँ प्रचलित हैं।

गुरु परम्परा के अनुसार तीनों आऴ्वारों का जन्म द्वापर युग के अन्त में हुआ। पॉयूगै आऴ्वार का जन्म काँचीपुर के निकट एक सरोवर में पुष्पित सुन्दर कमल से, भूत्तु आऴ्वार का जन्म महाबलिपुरम् में माधवी लता के सुगन्धित पुष्प से और पेयाल्वार का जन्म मैलापुर के मन्दिर के कुएँ के लाल कमल से हुआ। तीनों को क्रमशः विष्णु के शंख (पांचजन्य) गदा (कौमोदकी) और खड्ग (नन्दक) के अवतार मानते हैं। तीनों जाति के ब्राह्मण हैं। इनके बारे में एक प्रसिद्ध घटना इस प्रकार

---

1. आऴ्वारकल् काल निलै—मु. राघव अय्यंगार, पृष्ठ 24
   अर्ली हिस्ट्री ऑफ़ वैष्णविज़्म् इन साउथ, पृष्ठ 67-73

है—रात में वर्षा हो रही थी। पांयूगैयाल्वार एक फूटी-टूटी कुटिया के अन्दर पहुँचे। थोड़ी देर में भूत्तुआऴ्वार ने वहाँ आकर दरवाज़ा खटखटाया। तब अन्दर से आवाज़ आई कि एक ही व्यक्ति के लिए यहाँ सोने का स्थान है। इस पर दूसरे आऴ्वार ने कहा, "ठीक है हम दोनों बैठ सकते हैं।" इतने में तीसरे आऴ्वार भी वहाँ पहुँचे। अन्दर से आवाज़ आई कि यहाँ दो ही व्यक्तियों को बैठने के लिए स्थान है। तब वे यह कहते हुए अन्दर आ पहुँचे कि तीनों के लिए खड़े होने की जगह तो है। इतने में तीनों ने यह अनुभव किया कि कोई चौथा व्यक्ति उनको ढकेल रहा है। तीनों को यही अनुभूति हुई कि भगवान् श्रियःपति ही उनके अपने बीच खड़े हैं। अपने आराध्यदेव के दर्शन से गद्‌गद होकर तीनों प्रभु की स्तुति करते हुए गाने लगे।"[1]

प्रथम तीन आऴ्वार बड़े ज्ञानी और सात्त्विक पुरुष हैं। वे यही विचार करते थे कि हम ईश्वर की विभूति हैं और वही हमारा सर्वस्व है। ज्ञान, भक्ति और वैराग्य में डूबकर तीनों प्रभु के गुणगान करते हुए घूमते रहते थे। उनकी प्रेमानुभूति को निम्नलिखित पदों में देख सकते हैं—

*"भगवान इतना सुलभ है कि उनके भक्त जिस रूप को चाहते हैं वही रूप वह अपने लिए बना लेता है। जो नाम भक्त को पसन्द है, वही नाम रख लेता है।"* [2]

*"भगवान के नामोच्चारण करने के लिए मुँह के अन्दर ही जिह्वा है जिसे अन्यत्र खोजने की आवश्यकता नहीं है। जपने के लिए मधुर 'नमो नारायण' शब्द है। आश्चर्य है कि लोग अपने पास के साधन को न अपनाकर भगवान को प्राप्त करना छोड़कर दिशा-भ्रमित मार्ग पर क्यों चलते हैं।"* [3]

*"मेरे आराध्यदेव कमलनयन वासुदेव को प्रणाम करने के उपरान्त, इस तुच्छ रजोगुणमय संसार में क्या सार है अथवा नित्यसूरियों के साथ बैकुण्ठ में जाकर रहने में क्या आनन्द है।* [4]

*"तपस्या करने के लिए पहाड़ की चोटी पर जाना, पानी में खड़े रहना या पंचाग्नि तपाने की कोई आवश्यकता नहीं है। सर्वेश्वर के चरणकमलों में भक्ति-भाव से फूल चढ़ाकर हाथ जोड़ो तो पाप स्वयं यह सोचकर कि उसके रहने का स्थान यहाँ नहीं है, भाग जाएगा।"* [5]



---

1. *तमिऴ् इलक्किय वरलारु* ई. एस. वरदराजय्यर एवं वैष्णवमुम् तमिलुम तथा प्रथम तीन आऴ्वार—श्री. श्रीनिवास राघवन्, नृसिंहप्रिया पत्रिका
2. प्रथम तिरुवन्तादि : पद 44
3. वही पद 95
4. दूसरा तिरुवन्तादि पद : 10
5. तीसरा तिरुवन्तादि पद : 76

# मुदल् तिरु अन्दादि

## (प्रथम शतक अन्त्यादि)

(1) *वैयम् तहळिया वार् कडले नॅय् आह*
*वॅय्य कदिरोन् विळक्कु आह-शॅय्य*
*शुडर् आलियान् अडिक्के शूट्टिनेन् शॉल् मालै*
*इडर् आलि नीङ्गुहवे ऍन्रु ॥*

भावार्थ

यह पृथ्वी एक दिवली है।
घिरा हुआ उछलता सागर घृत है।
उष्णकिरण सूर्य ही ज्वाला है।
ऐसा एक दीप जलाकर
रक्तिम ज्वाला युक्त चक्रधारी
भगवान के चरणों में, मैंने एक शब्दमाला पहनाई।
इससे दुख-सागर मिट जाएगा।

(2) *शॅवि, वाय्, कण्, मूक्कु, उडल, ऍन्रु ऐम् पुलनुम्, शॅन्ती*
*पुवि काल्, नीर् विण्, बूदम्, ऐन्दुम्-अवियाद*
*ज्ञानमुम वेळ्वियुम् नल् अरमुम् ऍन्बरे*
*ऍनम् आय् निन्रार्कु इयल्वु ॥*

भावार्थ

लोग कहते हैं,
कान, जिह्वा, नयन, नाक, त्वचा—ये पंच ज्ञानेन्द्रियाँ
अग्नि, भूमि, वायु, जल, आकाश—ये पंच भूत
अविच्छिन्न ज्ञान, यज्ञ, सद्धर्म ये सब वराह बनकर
परमात्मा के अनुरूप उपाय हैं।

[भगवान को प्राप्त करने के लिए एकमात्र उपाय भक्ति-योग ही है। पंचेन्द्रियाँ, यज्ञ, धर्म आदि भक्ति योग के साधन हैं। वे मोक्ष मार्ग के लिए उपाय हैं।]

(3) *पॅररार् तळै कल़ल-प् पेन्दु ओर् कुरळ् उरु आय्*
*शॅर्रार् पड़ि कडन्द शॅङ्गण् माल्-नल् ता*
*मरै मलर्-च् चेवडियै वानवर् कै कूप्पि*
*निरै मलर् कॉण्डु एत्तुवराल निन्रु ॥*

**भावार्थ**

माता-पिता की बेड़ियाँ छुड़ाने के लिए कृष्ण बनकर मथुरा आया।
वामनावतार लेकर भूमि को मापनेवाला सर्वेश्वर,
कमलपुष्प सम अरुण-चरणोंवाला,
सर्वेश्वर! भक्त हाथ जोड़कर फूलों के गुच्छों से
पूजा करके स्तुति करते हैं।
हाय! वह भाग्य मुझे नहीं मिला है।

(4) *ऍलुवार् विडै कॉळ्वार ईन् तुल़ायानै*
*वलुवा वहै निनैन्दु वैकल्-तॉलुवार्*
*विनै-च् चुडरै नन्दुविक्कुम् वेङ्कडमे वानोर्*
*मन-च् चुड़रै-त् तूण्डुंम् मलै ॥*

**भावार्थ**

कुछ प्रभु की वन्दना करते हैं,
कुछ प्रभु को सच्चे दिल से चाहते हैं,
कुछ सुन्दर तुलसीमाला धारण करके
प्रभु का ध्यान करते हैं।
सबकी पापाग्नि को बुझाकर,
मन-ज्योति को प्रदीप्त करनेवाला वेंकटगिरि है।

(5) *तेळिदु आह उळळत्तै-च् चेन्नि रीइ ज्ञानत्तु*
*ऍळिदु आह नन्गु उणवार् शिन्दै ऍळिदु आह-त्*
*ताय् नाडु कन्रे पोल् तण् तुल़यान् अड़िक्के*
*पोय् नाडि-क् कॉळ्ळुम् पुरिन्दु ॥*

**भावार्थ**

मन को पवित्र रखकर शुद्ध ज्ञान से,
प्रभु को जाननेवाला चित्त
बहुत आसानी से शीतल तुलसीमालाधारी,

श्रीमन् नारायण के चरणों को प्राप्त करके
आनन्द से गद्‌गद् होकर स्तुति करेगा।
जैसे बछड़ा अपनी माँ को पहचानकर स्वयं उसके पास पहुँचता है।

(6) *पण् पुरिन्द नान् मऱैयोन् शेन्ऩि-प्पलि एऱ्ऱ*
*वेण पुरी नूल मार्बन् विनै तीर-पुण् पुरिन्द*
*आकत्तान् ताळ पणिवार् कण्डीर् अमरर् तम्*
*बोगत्ताल बूमि आळ्वार्॥*

[पुराणों में यह कथा प्रसिद्ध है। शिव ने ब्रह्मा का एक सिर काट दिया। ब्रह्मा ने शाप दिया कि इस सिर के कपाल को हाथ में लेकर भीख माँगते फिरो। जब भिक्षा से कपाल भर जाएगा तब वह हाथ से छूट जाएगा। शिव भीख माँगते फिरे। अन्त में विष्णु के पास जाकर भीख माँगी। विष्णु ने अपने शरीर के एक भाग को चीरकर रक्त बहाया और कपाल भरा, तब कपाल शिव के हाथ से छूट गया।]

**भावार्थ**

ब्रह्मा मधुर स्वरों के ज्ञान से युक्त वेद विज्ञ हैं।
उसके सिर के कपाल में जो भीख माँगते थे
जिसका वक्ष धवल सूत्र से शोभित था,
उस शिव के पाप को दूर करने के लिए
प्रभु ने अपना शरीर चीरकर रक्त बहाया।
उस प्रभु के चरणों पर वन्दना करनेवाले स्वर्ग प्राप्त करेंगे।

(7) *महिल् अलहु ओॅन्ऱे पोल् मास्म् पल् याक्कै*
*नेकिल़ मुयलुहिर्पार्कु आल्लाल्-मुहिल विरिन्द*
*शोदि पोल् तोन्ऱुम् शुडर् पोन्, नेडु मुडि ऍम्*
*आदि काप्पार्कुम अरिदु॥*

**भावार्थ**

एक बकुल बीज के समान परिवर्तित होनेवाले
नाना शरीरों से मुक्ति पाने के प्रयत्न करनेवाले,
लोगों के अलावा अन्य सबको भगवान दुर्लभ,
वे मेरे लिए पूर्ण विकसित (ज्योति सम है),
कान्तियुक्त हैं, दर्शनीय हैं, उन्नत किरीट से भूषित हैं।

[बकुल बीज—प्राचीन काल में गणित शास्त्र में बकुल बीजों का उपयोग करते थे। यह कभी अल्प संख्या का द्योतक था। वही कोटि संख्या का द्योतक हो जाता था। वैसे ही जीवात्मा कर्म के अनुसार एक जन्म में ब्रह्मा के शरीर में था तो एक समय में मनुष्य के शरीर में।]

(8) *नयवेन् पिरर् पॉरुळै नळ्ळेन् कीऴारोडु*
*उयवेन् उयर्न्दवरोडु अल्लाल्-वियवेन्*
*तिरुमालै अल्लदु दॅयवम् ऍन्रु एत्तेन्*
*वरुम् आरु ऍन-ऍन मेल् विनै ॥*

भावार्थ

मैं दूसरों के पदार्थों का लोभ नहीं करूँगा।
नीचों की संगति में नहीं रहूँगा।
ऊँचे स्वभाववाले सज्जनों के अतिरिक्त
किसी से संगति नहीं रखूँगा।
प्रभु श्रीमन् नारायण के अलावा
किसी को देवता मानकर वन्दना नहीं करूँगा।
तब बुरे कर्म हमारे पास कैसे आएँगे?

(9) *अवर् अवर् ताम् अरिन्दवारु एन्ति*
*इवर् इवर् ऍम् पेरुमान् ऍन्रु-शुवर् मिशै-च्*
*चार्त्तियुम् वैत्तुम् तोलुवर् उलहु अळन्द*
*मूर्त्ति उरुवे मुदल् ॥*

भावार्थ

लोग यही समझते हैं,
भिन्न-भिन्न देव ही हमारे पूज्य भगवान हैं।
दीवार पर चित्र खींचकर,
उसकी पूज़ा करते हैं।
परन्तु लोक-नायक त्रिविक्रम भगवान ही
हमारे पूज्य आराध्य देव हैं।

(10) *नान्ऱ मुलै त्तलै नञ्जु उण्डु, उऱि वें ण्णय्*
*तोन्ऱ उण्डान् वेन्ऱि शूल् कळिऱ्रै-ऊन्ऱि-प्*
*पोरुदु उडैवु कण्डानुम् पुळ् वाय् कीण्डानुम्*
*मरुदु इडै पोय् मण् अळन्द माल् ॥*

भावार्थ

जिसने शिथिल स्तन का विष पी लिया,
जिससे छींके में रखा मक्खन ऐसा खाया

जिससे चोरी प्रकट न हो जाए
जिसने कुवलयापीड़ हाथी का संहार किया,
जिसने बकासुर का मुँह चीर डाला,
जिसने युगल अर्जुन वृक्ष को तोड़ डाला,
वही भूमि को मापनेवाला प्रभु है।

(11) *आऱिय अऩ्बु इल् अडियार् तम् आर्वत्ताल्*
*कूऱिय कुऱ्ऱमा-क् कोळ्ळल् नी-तेरि*
*नेडियोय्! अडि अडैदऱ्कु अऩ्ऱे ईर् ऐन्दु*
*मुडियाऩ् पडैत्त मुरण ?*

भावार्थ

पूर्ण प्रेमरहित होने पर भी,
केवल तुम्हारे दास होने का ज्ञान रखने मात्र से,
तुम्हारे लिए जो अनर्गल बात लोग कहते हैं,
उसे तुम ग़लत मत समझो।
दस सिरोंवाले रावण ने जो अनुचित कार्य किया
वही तुम्हारे अनुग्रह का कारण बना।

(12) *आमे अमरर्क्कु अऱिय? अदु निऱ्क*
*नामे अऱिहिऱ्पोम् नल् नेञ्जे!—पू मेय*
*मा तवत्तोऩ् ताळ् पणिन्द वाळ् अरक्कऩ् नीळ् मुडियै*
*पादम् अत्ताल् ऍण्णिमनाऩ् पण्बु ॥*

भावार्थ

मेरे सुन्दर मन!
सरसिज आसन ब्रह्मा के चरणों पर,
खड्गधारी रावण नतमस्तक हो,
वर माँगता है।
ब्रह्मा के अंक में शिशु रूप में लेटे हुए विष्णु
वरदायी ब्रह्मा को सचेत करते हैं।
ऐसे विष्णु की महिमा को कौन समझ सकता है?



**टिप्पणी**

*उपर्युक्त कथा का उल्लेख सन्त वेताल और सन्त भक्तिसार के प्रबन्धों में भी है, किन्तु पुराणों में इसका उल्लेख नहीं मिला।*

(13) *ऍऴिदिल् इरण्डु अडियुम् काण्बदऱ्कु ऍन् उळ्ळम्।*
*तेऴिय तेॅऴिन्तोॅऴियुम् शेब्बे—कऴिविल्*
*पोरुन्दादवने-प् पोरल् उऱरु अरिवाय्*
*इरुॅन्दान् तिरु नामम् ऍण॥*

**भावार्थ**

मेरे मन!
परमात्मा के चरण-कमलों का सघनता से दर्शन करने के लिए,
तुम्हें निर्मल होना पड़ेगा,
तभी क्रोध त्याग, परमात्मा भी प्रसन्न होगा।
अहंकार से पूरित हिरण्य से युद्ध के लिए,
जो नरसिंह बना—
उसके सुन्दर नामों का स्मरण करो।

(14) *अयल् निनऱवल् विनैयै अञ्जिनेन् अञ्जि*
*उय निन् तिरुॅवडिये शेर्वान्-नयम् निन्ऱ्*
*नल् मालै कोण्डु 'नमो नारणा' ऍन्नुम्*
*शोल् मालै कऱरेन् तोलुदु॥*

**भावार्थ**

अपने सन्निकट तीव्र पापों से ग्रसित होने पर,
मेरे अपने आत्मोद्धार के लिए,
माधुर्य से पूर्ण तुम्हारे नामों की
नमो नारायण शब्दमाला सीख ली।

(15) *उलहुम् उलहु इऱन्द ऊऴियुम् ओण् केल्*
*विलहु करुम् कडलुम् वेऱ्पुम्-उलहिनिल्*
*शेन् तीयुम् मारुदमुम् वानुम् तिरुमाल्-तन्*
*पुन्दियिल् आय पुणर्प्पु॥*

भावार्थ

संसार,
संसार का विनाश
सुन्दर विशाल विनाश लहरों से पूर्ण काला सागर
विशाल पहाड़,
संसार में स्थित प्रज्वलित अग्नि,
वायु और आकाश
यह सब श्रीनारायण की संकल्पित सृष्टि है।

(16) *विनैयाल् अडर्प्पडार् वेम् नरहिल् शेरार्*
*तिनैयेनुम् तीक्कदिक्कण शेल्लार्-निनैदरकु*
*अरियानै, शेयानै आयिरम् पेर्-च् चेङ्गण*
*करियानै-क् कै तोलुद-क् काल् ॥*

भावार्थ

जो अविनाशी है,
जो दृष्टि से परे है,
जिसके हज़ारों नाम हैं।
जिसकी आँखों में अरुणाई है।
वह श्याम सुन्दर है,
उसे करबद्ध प्रणाम करने से पाप-पुष्प से मुक्ति मिलेगी,
नरक से छुटकारा मिलेगा,
कुमार्ग से बचेंगे।

(17) *उणर्वार् आर् उन् पेरुमै ऊऴि तोरु ऊऴि*
*उणर्वार् आर् उन् उरुवम् तन्तै?—उणर्वार् आर्*
*विण्णहत्ताय्। मण्णहत्ताय्! वेङ्गडत्ताय्! नाल्देव-प्*
*पण्णहत्ताय्! नी किडन्द पाल्?*

भावार्थ

ऐसे कौन हैं जो तुम्हारी महिमा जानते हैं?
ऐसे कौन हैं जो तुम्हारा रूप जानते हैं?
ऐसे कौन हैं जो तुम्हारा शयन क्षीरसागर जानते हैं?
हे परमधामवासी,
हे पृथ्वी के अधिवासी,

वेंकटाचल के स्वामी,
चारों वेदों के स्वरों में ध्वनित।

(18) *अन्बु आलियानै अणुह ऍन्नुम् ना अवन्-तन्*
*पण्बु आलि-त् परवि एत्तु ऍन्नुम्-मुन्बु ऊलि*
*काणानै-क् काण् ऍन्नुम् कण् शॆवि केळ् ऍन्नुम्*
*पूण आरम् पूण्डान् पुहल् ॥*

भावार्थ

प्रेम चक्रधारी के पास जाने के लिए कहता है,
जीभ कहती है उस पराक्रमी की लगातार स्तुति करो,
आँखें कहती हैं उस अनादि काल से अदृश्य शाश्वत को देखो
कान कहते हैं—हार आदि आभूषणों से सुसज्जित
नारायण के गुणों का श्रवण करो।

(19) *पिडि शेर् कळिरु अळित्त पेराळा! उन्-तन्*
*अडि शेर्न्दु अरुळ् पॆर्राळ् अन्रे-पॊडि शेर्*
*अन्रकु अम् कै एर्रान् अविर् शडै मेल् पायन्द*
*पुनल् गङ्गै ऍन्नुम् पेर्-प् पोन्?*

भावार्थ

हस्तिनी से युक्त गजेन्द्र की रक्षा करनेवाले महिमामण्डित।
भस्म को धारण करनेवाले,
हाथों में अग्नि को लेनेवाले शिव की जटा पर—
गिरनेवाली जल से पूरित स्वर्ण नई देवी गंगा भी—
तुम्हारे चरणों को प्राप्त कर, पवित्र हुई,
तुम्हारी कृपा की पात्र हुई।



# इरण्डाम् अन्दादि

## (द्वितीय अन्त्यादि)

(20) *नहर् इलैत्तु नित्तिलत्तु नाल़ मलर् कॉण्डु-आङ्गे*
*तिहलुम् मणि वयिरम् शेर्त्तु-निहर् इल्ला-प्*
*पैङ कमलम् ऍन्दि-प् पणिन्देन् पनि मलराळ्*
*अङगम् वलम् कॉण्डान् अड़ि ॥*

भावार्थ

एक शहर का निर्माण कर,
उसमें मोती सम सुन्दर पुष्प लेकर,
ज्वलन्त मणि हीरा साथ रखकर
कमल पुष्प हाथ में लेकर
पद्मजा लक्ष्मी को
अपने वक्ष के दक्षिणी भाग में आश्रय देनेवाले
प्रभु नारायण के चरणों की वन्दना की।

[भगवान के रहने के लिए भक्त अपने हृदय को ही नगर बना देते हैं। पवित्र स्नेह ही मोती सम प्राकार है। प्रेम और आदर ही प्राचीर है। हृदय में लक्ष्मी के साथ प्रभु के रूप को स्थापित कर भक्ति रूप पुष्प से पूजा करते हैं।]

(21) *तनक्कु अड़िमै पट्टदु तान् अरियानेलुम्*
*मनत्तु अड़ेय वेप्पदु आम् माले-वन्-त्-तिड़रै*
*एरि आम् वण्णम् इयररुम् इदु अल्लाल्*
*मारि यार् पेय्हिरपार् मररु?*

भावार्थ

ज्ञान के अभाव में प्रभु का दास होना धर्म है।
हमें मन को पवित्र रखना चाहिए

ताकि परमात्मा आकर निवास करें।
वन की बंजर भूमि को खोदकर
झरने के समान बना तो सकते हैं।
पर वर्षा के जल से प्रभु ही उसे भर सकता है।

(22) *शिरियार् पेरुमै शिरिदिन् कण् ऍय्दुम्*
*अरियारुम् ताम् अरियार् आवर्-अरियामै*
*मण् कॉण्डु मण् उण्डु मण् उमिल्न्द मायन् ऍन्रु*
*ऍण् कोण्डु ऍन् नेञ्जे! इरु ॥*

**भावार्थ**

नीच मनुष्यों का स्वाभिमान, उन्हें और भी नीच स्थिति में पहुँचा देगा।
मूढ़ जन मूढ़ ही रहेंगे।
मेरे मानस! जिस महाबलि से तीनों लोकों की भूमि ग्रहण की,
भूमि को निगलकर उगल दिया,
वह मायावी प्रभु ही मेरे लिए सर्वेश्वर है
इस बात का स्मरण कर प्रभु का ध्यान करते रहो।

(23) *पेरु ओन्रुम् मुन् अरियेन् पॅरु अरियेन् पेदैमैयाल्*
*मारु ऍन्रु शॉल्लि वणङ्गिनेन्-एरिन्*
*पॅरुत्तेरुत्तम् कोडु ओशिय पेण् नशैयिन् पिन् पोय्*
*एरुत्तु इरुत्त नल्-आयर् एरु ॥*

**भावार्थ**

नप्पिन्नै प्रेमवश वृषभों के ककुद तथा सींग तोड़कर कन्धे को विनष्ट
करनेवाले श्री कृष्ण ही मेरे पापों का विनाशक है।
मैं प्रभु की वन्दना करता हूँ।
इसके पूर्व ऐसा सुन्दर पुरुषार्थ मैंने नहीं देखा था।
ज्ञान के अभाव में उसकी प्राप्ति नहीं की।

(24) *इदु कण्डाय् नल् नेञ्जे! इप्पिरवि आवदु*
*इदु कण्डाय् ऍल्लाम् नाम् उर्रदु-इदु कण्डाय्*
*नारणन् पेर् ओदि नरकत्तु अरुकु अणैया-क्।*
*कारणमुम् वल्लैयेल् काण् ॥*

भावार्थ

मेरे अनुकूल मन!
देखो इस जन्म की हालत।
देखो हमने सांसारिक दुख प्राप्त किया।
देखो नारायण के भजन से नरक न पहुँचने के कारण,
यदि तुम भलाई चाहते हो तो,
अपने निस्तार का मार्ग ढूँढ़ लो।

(25) *याने तवम् शॆय्देन् एल़ पिरप्पुम् ऍप्पॊलुदुम्*
*याने तवम् उड़ैयेन् ऍम् पॆरुमान्। याने*
*इरुत्तमिल् नल् माले इणै अडिक्के शॊन्नेन्*
*पॆरुन्तमिल़न् नल्लेन् पॆरुकु॥*

भावार्थ

सात जन्मों में, सभी कालों में,
मैंने तपस्या की,
प्रभु! तपस्या का फल मैं ही हूँ।
उत्तम तमिल़ की सुन्दर माला
दोनों श्री चरणों के लिए, मैंने ही रची।
मैं तमिल़ का महाकवि हूँ।
मैं अति सद्-गुणवान् हूँ।
[यह आत्मप्रशंसा भाषाभिमान सात्विक है।]

(26) *कुऱैयाह वॆम् शॊऱ्कळ् कुरिनैन् कूरि*
*मऱै आङ्गु ऍन उरैत्त माले-इऱैयेनुम्*
*ईयुम् कॉल ऍन्रे इरुन्देन् ऍनै-प् पकलुम्*
*मायन् कण् शॆन्र वरम्॥*

भावार्थ

मैंने प्रभु के विषय में वेद से परे कुछ कठोर वचन कहे थे,
इससे प्रभु की महिमा को क्षति पहुँची है।
मैं चिरकाल से प्रभु की प्रतीक्षा में था।
वे मुझमें प्रविष्ट होकर वर प्रदान करेंगे?

(27) *अडि मून्रिल् इव् उलहम् अन्रु अळन्दाय् पोलुम्*
*अडि मून्रु इरन्दु अवनि कॊण्डाय्-पडि निनर*
*नीर् ओद मेनिनॆंडु माले! निन् अडियै*
*यार् ओद वल्लार् अऱिन्दु?*

**भावार्थ**

रत्नाकार के जल के रंग के समान शरीरवाले—भूमि पर अवतरित सर्वेश्वर,
प्राचीन काल में यह संसार तुमने तीन पगों में मापा,
तीन पग भूमि माँगकर भूमि प्राप्त की,
ऐसे चरणों का महात्म्य कौन वर्णित कर सकता है?

(28) *मऱ्रु आर् इयल् वानवर् कोन मा मलरोन्*
*शुऱरुम् वणङ्गुम् तॊलिलानै-ओऱैप्*
*पिऱै इरुन्द शॆञ् जडैयान् पिन् शॆन्ऱु मालै-क्*
*कुऱै इरन्दु तान् मुडित्तान् कॊण्डु?*

**भावार्थ**

श्री नारायण ही मात्र हमारे रक्षक हैं।
देवराज इन्द्र और महाकमल से उत्पन्न ब्रह्मा,
दोनों उस परमात्मा के अद्‌भुत क्रियाकलापों को देखकर,
उसकी परिक्रमा करते हुए उसको प्रणाम करते हैं।
चन्द्रकला और अरुण जटा धारण करनेवाले शिव भी—
उस परमात्मा के अनुकूल रहकर अपना शाप-दुःख दूर करते हैं।

(29) *शॆन्रदु इलङ्गै मेल् शॆव्वे तन् शीऱत्ताल*
*कॊन्रदु इरावणनै-क् कूरुङ्गाल्-निन्रुदुवुम्*
*वेय ओङ्ग तण् शारल् वेङ्गडमे विण्णवर्-तम्*
*वाय् ओङ्गु तॊल् पुहलान् वन्दु॥*

**भावार्थ**

नित्यसूरियों से स्तुत्य,
शाश्वत कीर्ति से पूरित भगवान लंका की ओर गए।
अपने क्रोध से रावण का वध किया।
वर्णन करने मात्र से वह वेंकट गिरि पर उपस्थित हो गया,
जिसकी शीतल तराइयों में बाँस के झुरमुट विद्यमान हैं।

(30) *तुणिन्दु शिन्दै तुऴाय् अलङ्गल् अङ्गम्*
*अणिन्दवन् पेर् अळ्ळत्तु-प् काल्-पणिन्दुवुम्*
*वेय् पिऱङ्गु शारल् विऱल् वेङ्गडवनैये*
*वाय् तिऱङ्गळ् शोॅल्लुम् वहै ॥*

भावार्थ

तुलसीमाला धारण करनेवाले भगवान का नाम—
ध्यान करने का मेरे हृदय ने निश्चय किया।
मेरे अंगों ने भी उन्हें प्रणाम करने का निश्चय किया।
बाँस-वृक्षों से भरी तराईवाले वेंकटगिरि के
शक्तिशाली भगवान के गुण कथन में मेरी वाणी स्वयं ही लग गई।

(31) *निऱम् करियन् शेॅय्य नेडु मलराळ् मार्वन्*
*अऱम् पेॅरियन् आर् अदु अरिवार्-मऱम् पुरिन्द*
*वाळ् अरक्कन् पोल्वानै वानवर् कोन तानत्तु*
*नीळ इरुक्केक्कु उयत्तान् नेॅऱि?*

भावार्थ

जो कृष्ण वर्णवाला है,
जिसके वक्ष पर विशाल अरुण पद्‌म से उत्पन्न लक्ष्मी—
विराजमान हैं,
जो धर्म में श्रेष्ठ हैं,
जिसके दया करने के उपाय कोई नहीं जानता,
अनीतिकारी, खड्‌गधारी रावण के समान जो महान बलि था,
उसको इन्द्र के समान स्थान देकर,
चिर समय के लिए पाताल में रख दिया।

(32) *कण्डेन् तिरु मेनि कनविल् आङ्गु अवन् कै क्*
*कण्डेन् कनलुम् शुडर् आलिकण्डेन्*
*उऱु नोय् इरण्डुम् ओट्टुवित्तमु-प् पिन्नुम्*
*मऱु नोय् शेरवान् वलि॥*

भावार्थ

मैंने श्री विग्रह का स्वप्न में दर्शन किया,
उसके हाथ में अग्निपुंज के समान तेजमय चक्र देखा,

दुःख देनेवाली पाप-पुण्य नामक दोनों व्याधियों को मिटाकर,
पुनः उत्पन्न होनेवाली कामनाओं को नष्ट करनेवाली शक्ति भी देखी।

(33) *पे॑रुहु मद वेल़म् मा-प् पिडिक्कु मुन् निन्रु*
*इरु कण् इळ मूङ्गिल् वाङ्गि-अरुहु इरुन्द*
*तेन कालन्द नीट्टुम् तिरुवेङ्गडम् कण्डीर्*
*वान् कलन्द वण्णन् वरै॥*

**भावार्थ**

जिसके मस्तक से मद जल प्रवाहित हो रहा है ऐसा हाथी,
कोमल बाँस का दो गाँठोंवाला छोटा वृक्ष तोड़कर,
मधु में भिगोकर, अपनी सूँड में लेकर,
अपनी प्यारी हथिनी के सामने बढ़ाता है,
ऐसा ही स्थान परमपुरुष का वेंकटगिरि है।

(34) *इन्रा अरिहिन्रेन् अल्लेन् इरु निलत्तै-च्*
*चे॑न्रु आङ्गु अळन्द तिरुअडियै-अन्रु*
*करुक्कोट्टियुळ् किडन्दु कै तोलुदेन कण्डेन्*
*तिरुक्कोट्टि ऐन्दै तिरम्*

**भावार्थ**

गर्भ स्थान में ही रहते हुए,
मैंने श्री गोष्ठीपुर के भगवान की महिमा देखी,
हाथ जोड़कर उनकी वन्दना की,
विस्तृत भूमि में जाकर सभी प्रदेशों को मापनेवाले चरणों को
मैंने आज ही नहीं देखा।
उनका साक्षात्कार तो मुझे गर्भदशा में ही हो गया था।

(35) *इऱै एम् पे॑रुमान्! अरुळ् ऍन्रु इमैयोर्*
*मुऱै निन्ऱ मो॑य्-म् मलर्हळ् तूव-अऱै कल्ल*
*शेवडियान् शे॑ङ्गण् ने॑डियान् कुऱळ् उरुवाय्*
*मा वडिविन् मण् को॑ण्डान् माल्॥*

**भावार्थ**

हे भगवान!
थोड़ी कृपा करो,

ऐसा कहकर, उसके ही स्वरूपवाले देवताओं ने,
उसकी सुन्दर पुष्पों से अर्चना की,
उसने त्रिविक्रम रूप धरकर, वामन होकर,
भूमि ग्रहण की,
उस परम पुरुष के चरणों में सुन्दर नूपुर ध्वनित हो रहे हैं,
वह सर्वेश्वर अरुण नयनोंवाला है।



# मून्राम् अन्दादि

## (तृतीय अन्त्यादि)

(36) *नामम् पल शॉल्लि नारायणा ऍन्रु*
*नाम् अङ्कैयाल् तॉलुदुम् नल् नॆञ्जे वा मरुवि*
*मण् उलहम् उण्डु उमिल़न्द वण्डु अरैयुम् तण् तुळाय्*
*कण्णनैये काण्ग नम् कण् ॥*

**भावार्थ**

असंख्य नामों से भजन करके,
नारायण का नाम स्मरण कर,
हम प्रभु का करबद्ध नमन करें,
मेरे अनुकूल मन,
हमारे नयन कान्ह का दर्शन करें।
वे प्रभु मधुगुंजित शीत तुलसीमाला से भूषित हैं।
उस प्रभु ने इस भूलोक को निगलकर उगला था।

(37) *नी अन्ऱे नीर् एऱ्रु उलहम् अडि अळन्दाय्?*
*नी अन्रे निन्रु निरै मेय्त्ताय्?—नी अन्रे*
*मा वाय् उरम् पिळन्दु मा मरुदिन् ऊडु पोय्*
*देवासुरम् पॉरुदाय् शॅर्रु ॥*

**भावार्थ**

जल ग्रहण करते ही प्रभु! तीनों लोकों को
तुम्हीं ने नहीं मापा?
वन में तुम ही ने गायें नहीं चरायीं?
क्या तुमने ही केशी घोड़े का बलिष्ठ मुख नहीं फाड़ा था?
तुम अर्जुन वृक्षों के बीच से होकर नहीं चले?
तुम्हीं ने देवासुर युद्ध में असुरों का नहीं संहार किया था?

(38) *अङ्गर् कु इडर् इन्रि अन्दि प्पॉलुदत्तु*
*मङ्ग इरणियनदु अकत्तै-पॉङगि*
*अरि उरुवम् आय्-प् पिळन्द अम्मान-अवने*
*करि उरुवम् कॉम्बु ओशित्तान् काय्न्दु ॥*

भावार्थ

प्रह्लाद को दुख न देने के लिए,
सन्ध्या समय नरहरि रूप लेकर,
हिरण्यासुर का संहार किया था,
उसके शरीर को जिस स्वामी ने चीर डाला
उसी ने क्रोधित होकर कुवलयापीड हाथी के
शरीर के दाँत तोड़ डाले।

(39) *कवियिनार् कै पुनैन्दु कण् आर् कल़ल् पोय्*
*शॅवियिनार् आर् केळ्वियराय्-च् चेर्न्दार पुवियिनार्*
*पोऱ्रि उरैक्क पोॅलियुमे पिन्नैक्कु आय्*
*एऱ्रु उयिरै अट्टान् ऍल़िल्?*

भावार्थ

हाथ जोड़कर स्तोत्र करते हैं,
अपने नयनों को भगवान के चरणों में रखते हैं,
कान से प्रभु की कथा सुनते हैं,
मिलकर प्रभु की जय जयकार करते हैं।
क्या इन सबसे प्रभु की महिमा बढ़ती है?
नप्पिन्नै को प्राप्त करने के लिए
वृषभों का संहार करनेवाला
प्रभु की महिमा का वर्णन करना असम्भव है!

*(40)* पडि वट्ट-त् तामरै पण्डु उलहम् नीर् एऱ्रु
*अडि वट्टत्ताल् अळाप नीण्ड मुडि चट्टम्*
*आहायम् ऊड़रुन्तु अण्डम् पोय् नीण्डदे*
*मा कायमाय् निन्ऱ् माऱ्कु ॥*

भावार्थ

प्राचीन काल में,
दान को स्वीकार कर,

कमलरूपी गोलाकार भूमि को गोलाकार चरणों से मापते समय,
जब सर्वेश्वर ने विशालकाय शरीर धारण किया,
तब उनका मुकुट आकाशीय अण्ड-भित्ति तक बढ़ गया।

(41) *कायन्दु इरुळै माऱ़ि कदिर् इलहु मा मणिहल्*
*एयुन्द पण्-क् कदिर् मेल् वेऽवुयिर्प्प-वायून्द*
*मदु कैड्वरुम् वयिरु उरुहि माण्डार्*
*अदु केडु अवर्क्कु इऱुदि आड्गु।*

भावार्थ

अन्धकार से क्रोधित होकर,
विनाशकारी किरणों एवं प्रकाशमान रत्नों से युक्त आदिशेष के फणों की किरणों पर,
सर्वेश्वर ने तप्त श्वास ली,
उसके कारण सन्निकट आए मधु और कैटभ राक्षस,
अस्तव्यस्त होकर मर गए,
वहाँ आना ही उन पर आई हुई विपत्ति थी,
उनका अन्त था।

(42) *इमम् शूल् मलैयुम् इरु विशुम्बुम् काऱ़ुम्*
*अमम् शूऴन्दु अऱ विळ्गि-त् तोन्ऱुम्-नमन् शूल्*
*नरहत्तु नम्मै नणुहामल् काप्पान्*
*तुरगत्तै वाय् पिळन्दान् तोट्टु॥*

भावार्थ

हिम पूरित पर्वत,
ऊँचे आकाश से भी बड़े आकारवाले,
वायु से भी अधिक वेगवाले घोड़े केशी का
मुँह पकड़कर जिसने फाड़ दिया,
वह कृष्ण हमें नर्क में जाने से अवश्य बचाएगा।



# तिरुमऴिशै आऴ्वार

## (भक्ति सार)

साहित्य

| | |
|---|---|
| *तिरुच्चन्दवृत्तम्* | 120 पद |
| *नान्मुकन् तिरुवन्तादि* | 93 पद |

गुरु परम्परा के अनुसार इनके जन्म के विषय में यह जनश्रुति प्रसिद्ध है कि काँचीपुरम् के निकट इनका जन्म हुआ। इनके माता-पिता का नाम कनकांगी और भार्गव महर्षि था। परन्तु वे तिरुवाळन नामक चतुर्थवर्ण के लकड़हारे के यहाँ पले। तिरुमऴिशैयार ने कट्टर वैष्णव बनने के पूर्व सांख्य, योग, शंकर का अद्वैत सिद्धान्त आदि दर्शनों का गहरा अध्ययन किया। वे इन दर्शनों से प्रभावित न हुए। वे पेयाऴ्वार के उपदेश से विष्णु भक्त बनकर परतत्त्व का प्रचार करने के लिए भ्रमण करते रहे। वे तीव्र कट्टर वैष्णव हैं। अन्य धर्मों के प्रति इनमें सहिष्णुता की भावना नहीं है। इन्होंने शैव, जैन धर्म की कटु आलोचना की और यहाँ तक कहा है कि जैन, बौद्ध धर्मावलम्बी अज्ञानी हैं, शिव भक्त तो मूढ़ हैं।[1]

इस आऴ्वार के काल निर्णय में भी विभिन्न मत-मतान्तर 'प्रचलित हैं। स्वामिकण्णु पिळ्ळै प्रथम चार आऴ्वारों को ईस्वी 720 के आसपास मानते हैं। अन्तर्साक्ष्यों में एक पद के आधार पर यह धारणा प्रचलित है कि महेन्द्रवर्म के राज्यकाल में अर्थात् ई. 625 के आसपास भक्त सार रहे होंगे।[2] मु. राघव अय्यंगार का जन्म ईस्वी 700 के निकट माना है। परन्तु बहिर्साक्ष्य के आधार पर अनेक विद्वानों का मत है कि इस आऴ्वार के समय को छठी शताब्दी के अन्त में माना जा सकता है क्योंकि इसी काल में शैव सम्प्रदाय के भक्तों में श्रेष्ठ 'अप्पर और सम्बन्ध पर' ने शिवजी के माहात्म्य का बढ़ा-चढ़ाकर अपनी रचना में वर्णन किया है। हो सकता है इस आऴ्वार ने उनके खण्डन करने के निमित्त कट्टर मार्ग अपना लिया होगा। यह युक्तिसंगत भी प्रतीत होता है।

---

1. नान्मुकन् तिरुवन्तादि, पद-6
2. नान्मुकन तिरुवन्तादि, पद-93

इन्होंने दो प्रबन्ध रचे–(1) नान्मुकन (चतुर्थ) तिरुवन्तादि। (2) तिरुच्चन्दवृत्तम्। इनमें परतत्त्व पर विचार करते हुए कहते हैं कि श्रीमन्नारायण ही परमात्मा हैं। शेष देवतागण सृष्टि आदि करनेवाले उनके सहचर हैं। अपने आराध्य देव को सर्व शक्तिमान कहते हुए कहते हैं–

"मैंने यह जान लिया कि तू ही सर्वशक्तिमान है तथा ब्रह्म और रुद्र का ईश्वर तू ही है। तू ही जगत् कारण है। जो कुछ जान गया है और जो कुछ ज्ञात होनेवाला है सब तू ही है। सब कर्मों का आराध्य भूत ईश्वर तू ही है।"[1]

"हे मेरे मन, भगवान, माता-पिता की तरह हमारा हित करता है। स्वामी की तरह हमारी रक्षा करता है। वही मुक्ति देनेवाला है। वह हमारे सांसारिक दुखों को दूर करने के लिए उद्यत है। इस दशा में तुम क्यों दुःख में पड़े हो।"[2]

उनकी जीवनी के बारे में अनेक दन्त कथाएँ प्रचलित हैं। कहा जाता है कि एक बार कुम्भकोणम जाते समय मार्ग में किसी ब्राह्मण के घर की देहली में थोड़ी देर ठहरे। वहाँ ब्राह्मण वेदपाठ कर रहे थे। आल़वार को चतुर्थ वर्ण समझकर पाठ बन्द कर दिया। उनके चले जाने पर ब्राह्मणों को इसका स्मरण नहीं आया कि इन्होंने पाठान्त कहाँ किया था। उन्होंने आल़वार में भगवान विष्णु के दिव्य रूप का दर्शन कर क्षमा माँगी।

यह भी प्रसिद्ध है कि नम्माल़वार द्वारा विरचित पदों को सुनकर और उन पदों के सामने अपने पदों को निकृष्ट मानकर सभी पदों को फाड़कर कावेरी में फेंक दिया।[3]



---

1. नान्मुकन तिरुवन्तादि पद-96
2. तिरुमल़िशैयाल़वार–श्री श्रीनिवास राघवन, नृसिंहप्रिया पत्रिका
3. तिरुमल़िशैयाल़वार–श्री श्रीनिवास राघवन, नृसिंहप्रिया पत्रिका

# नान्मुकन तिरुवन्दादि

(1) *तॅरुड्गाल् देवन् ओंरुवने ऍन्रु उरौप्पर्*
*आरुम् अऱियार् अवन् पॅरुमै—ओरुम्*
*पॉरुळ् मुड़िवुम् इत्तनैये ऍत् तवम् शेय्दार्क्कुम्*
*अरुळ् मुड़िवदु अलियान् पाल् ॥*

भावार्थ

सोच-विचारकर लोग कहते हैं कि प्रभु एक ही है,
कोई भी उनका महत्त्व नहीं जानता। हमें यह जानना चाहिए,
लक्ष्य पुरुष को प्राप्त करने की सीमा भी यही है।
तपस्या करनेवालों को भी यह मालूम होना चाहिए कि
प्रभु चक्रधारी में ही फल वितरण करने का संकल्प निहित है।

(2) *अऱियार् शमणर् अयर्त्तार् पवुन्तर्*
*शिरियार् शिव-प् पट्टार् शॅप्पिल्-वॅरियाय*
*मायवनै मालवनै मादवनै एत्तादार्*
*ईनवरे आदलाळ इन्रु*

भावार्थ

मूढ़ है श्रमण! मति भ्रष्ट है बौद्ध!
नीच है शिव भक्त भट्ट!
सच कहें, सुगन्धी मायावी, सर्वेश्वर माधव की
स्तुति जो नहीं करते, वे तुच्छ हैं, नीच हैं।

(3) *अहैप्पु इल् मनिशरै आरु शमयम्*
*पुहैत्तान् पॉरुळहल् नीर वण्णन् उहक्कुमेल्*
*ऍत्-तेवर् वालआट्टुम् ऍव्वारु शॅरकेयुम्*
*अप्पोदु ऑऴियुम् अळैप्पु ॥*

**भावार्थ**

अज्ञानियों को प्रभु ने षट् धर्मों में समझा दिया कि
"भगवान तरंगायुक्त सागरजलवर्ण है।
यदि उस प्रभु की कृपा नहीं हो तो स्वाभिमान से काम करना,
नाना प्रकार की क्रियाएँ
योगों में देवों का आह्वान, सब छूट जाएँगे।"
(पट् धर्म-सांख्य, योग, तर्क, बौद्ध, जैन और शैव)

(4) *अलै़प्पन् तिरुवेङ्कडत्तानै-क्-काण*
*इलैप्पन् तिरु-क् कूड़ल-कूड़-मलै-प् पेऱ्*
*अरुवि मणि वरन्ऱि वन्दु इऴिय यानै*
*वॆऱुवि अरवु ऑडुङ्गुम् वॆऱ्पु॥*

**भावार्थ**

मैं श्रीवेंकटेश्वर के दर्शन करने के लिए, उन्हें बुलाता हूँ।
मिलन होगा कि नहीं, यह जानने के लिए
मैं संयोग रेखाएँ खींचकर देखता हूँ।
जिस गिरि वर्षधारा के कारण
बड़े-बड़े निर्झर मणियों के साथ बहाकर गिरते हैं,
उन ज्वलन्त रत्नों को अग्नि कण समझकर, हाथी भयभीत होते हैं।
सर्प उन्हें बिजली समझकर बिल में छिप जाते हैं।
[इसमें नायिका भाव का वर्णन है। तमिल़ साहित्य में नायिका यह जानने के लिए उपाय करती है कि प्रियतम का संयोग प्राप्त होगा कि नहीं। आँखें बन्द करके उँगली से रेत में एक चक्र की रेखा खींचती है। चक्र पूरा हो जाता है तो समझती है प्रियतम आएगा। चक्र पूरा नहीं हो तो वियोग ही सम्भव है।]

(5) *इल्लऱम् अल्लेल् तुरवरम् इल् ऍन्नुम्*
*शॉल् अऱम् अल्लनवुम् शोल् अल्ल-नल्-अऱम्*
*आवनवुम् नाल्वेद मात्तवमुम् नारणने*
*आवदु इदु अन्ऱु ऍन्बाऱ् आऱ्?*

**भावार्थ**

गृहस्थ धर्म नहीं हो तो सन्यास धर्म भी नहीं है,
यह कथन विश्वसनीय प्रमाण नहीं है,

जो सही धर्म है, जो चार वेदों से उपदिष्ट है
वह नारायण ही है, कौन कहता है यह कथन ठीक नहीं।

(6) *उयिऱ् कॉण्डु उडल् ओऴिय ओडुम्बोदु ओडि़*
*अयर्वु ऍनऱ तीर्प्पान् पेर पाडि़-शेयल् तीर-च्*
*चिन्दिन्तु वाऴवारे वाऴवार शिरु शमय-प्*
*पन्दनैयार् वाऴवेल् पलुदु॥*

**भावार्थ**

जब आत्मा शरीर छोड़कर चलती है,
तब सब कुछ छोड़कर प्रभु का नाम लेकर,
प्रभु का चिन्तन-मनन कर सुखी होते हैं।
वे ही सुखी हैं जो बन्ध बान्धवों के लिए,
नीच कर्म करके जीते हैं, उनका जीवन बेकार है।

(7) *काप्पु मऱन्दु अऱियेन् कण्णने ऍनरू इरुप्पन्*
*आप्पु अङ्गु लिवुम् पल् उयिर्क्कुम-आक्कै*
*को॑डुत्तु अळित्त कोने! कुण-प् परने! उन्नै*
*विड़-त् तुणियार् मेय्-तकिन्दार्-ताम् ॥*

**भावार्थ**

मैं इसी भाव से रहता हूँ कि कान्ह ही मेरा रक्षक है।
उसको भुलाना ही मुझको मालूम नहीं
प्रलय काल में जीवों के शरीर नष्ट होने पर
फिर उन्हें शरीर देकर रक्षा करनेवाले हे प्रभु!
तत्त्वज्ञानी भक्त तुम्हें त्याग करने का साहस नहीं करेंगे।

(8) *मेय् तेळिन्दार् ऍन् शे॑य्यार वेरु आनार नीरु आह*
*कै ते॑ळिन्दु काट्टिक्-कळ-प् पडुत्तु पै ते॑ळिन्द*
*पाम्बिन् अणैयाय्! अरुळाय् अड़ियेरकु*
*बेम्बुम् करि आहुम् ऍन्रु ॥*

**भावार्थ**

पाण्डवों के शत्रु दुर्योधनादि को भस्म करने के लिए व्यूहरचना कर
युद्ध क्षेत्र में उन्हें विनष्ट करनेवाले प्रभु श्री कृष्ण!
पवित्र फणयुक्त सर्वशायी, इस दास पर कृपा करो।

यदि नीम का पत्ता भी सब्ज़ी के समान खा लेते हैं।
शरणागत की रक्षा के लिए तत्त्वदर्शी क्या नहीं करेंगे।

**तिरु-च्-चन्द विरुत्तम्**

(9) *आऱुम्-आऱुम्-आऱुम् आय् ओर् ऐन्दुम्-ऐन्दुम्-ऐन्दुम् आय्*
*एऱु शीर् इरण्डु मून्रुम् एलुम् आऱुम् ऍट्टुम् आय्*
*वेऱु-वेऱु ज्ञानम् आहि मॆयियिनोडु पॊय्युम् आय्*
*ऊरोडु ओशैयाय ऐन्दुम् आय-आय! मायने।*

**भावार्थ**

षट् कर्म, षट ऋतुएँ, षट् याग तुम हो,
पंच महायज्ञ, पंचाहुति, पंचाग्नि तुम हो,
महिमावाले दो और तीन सात, षट् और आठ तुम ही हो,
भिन्न-भिन्न ज्ञान तुम ही हो
सत्य के साथ असत्य भी तुम ही हो
स्पर्श के साथ शब्द आदि पाँच होनेवाले अहीर भी तुम हो,
मायावी भी तुम हो।
कौन तुम्हारे स्वरूप को समझ सकता है?

(षट् कर्म – वेद पढ़ना, वेद पढ़ाना, यज्ञ करना, यज्ञ कराना, दान देना, दान लेना—ये ब्राह्मण के षट् कर्म हैं।
षट् ऋतुएँ – वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमन्त और शिशिर
षट् याग – पूर्णिमा के दिन किए जानेवाले तीन याग, अमावस्या के दिन किए जानेवाले तीन याग। कुल छः याग।
पंच महायज्ञ – देव-यज्ञ, पितृ-यज्ञ, भूत-यज्ञ, मनुष्य-यज्ञ, ब्रह्म-यज्ञ, ये गृहस्थों के करणीय पाँच यज्ञ बताए गए हैं।
पंच्र आहुति – प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान रूप से पाँच प्राणों की आहुति।
पंच अग्नि – गार्हपन्थ, आह्वनीय, दक्षिणाग्नि, सभ्य और आवसथ्य।
दो – ज्ञान और वैराग्य
तीन – परा भक्ति, परा ज्ञान, परमभक्ति—ये भक्ति योग के तीन हैं।
सात – विवेक, विमोक, अभ्यास, क्रिया, कल्याण, अनवसाद, अनुद्धर्ष—ये सात पराभक्ति के साधन।
षट् – ज्ञान, बल, ऐश्वर्य, वीर्य, शक्ति, तेज—छः गुणों से पूर्ण।

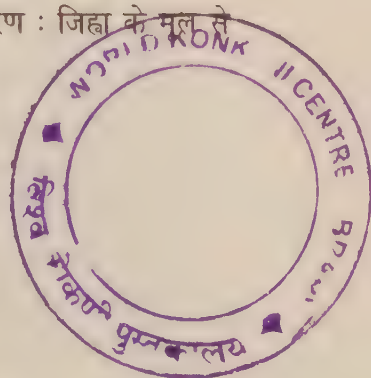
अष्ट — पाप, जरा, मृत्यु, शोक, भूख, प्यास आदि से रहित होना और सत्य काम होना और सत्य संकल्प होना।
सत्य होना — सत्य स्वरूप
असत्य होना — असत्य स्वरूप होना। अज्ञानियों के लिए।)

(10) *मून्रु मुप्पदु आरिनोडु ओर् ऐन्दुम् ऐन्दुम् ऐन्दुम् आय्*
*मून्रु मूरत्ति आहि मून्रु मून्रु मुन्रुम् आय्*
*तोन्रु शोदि मून्रुम् आय्-त् तुळक्कम्-इल् विळक्कमाय्*
*एन्र्न् आवि उळ् पुहुन्दु ऍन् कॉलो एम् ईशने!*

भावार्थ

तीन, तीन तीन तीन—द्वादश अक्षरवाले वासुदेव
ज्योतिस्वरूप तीन-तीन अक्षरवाले प्रणव
निर्मल प्रदीप, नित्य स्वयं प्रकाशमान
तुम तीन और तीस हो।
तुम छः, पाँच और पाँच स्वर हो।
तुम पाँच अक्षर हो।
तुम तीन मूर्ति हो।
तुम तीन, तीन, तीन, तीन हो।
तुम ज्योतिस्वरूप तीन हो।
तुम निर्मल प्रदीप हो।
हमारे प्रभु।
कितना अच्छा होता, तुम इस दिव्य रूप में मेरे मन में प्रविष्ट होते!

[**तीन तीस**—तैंतीस व्यंजन अक्षर।
**6, 5, 5**—सोलह स्वर अक्षर
**पाँच**—ल, क्ष, ज्ञ, जिह्वामूलक, उपध्यानीय अक्षर, उच्चारण : जिह्वा के मूल से होते हैं।
**तीन मूर्ति**—ऋगवेद्, सामवेद्, यजुर्वेद]




*(11)* इन्नै ऍन्रु शोल्लावदु इल्लै यादुम् इट्टु इडै-प्
*पिन्नै केळ्वन् ऍन्पर् उन् पिणक्कु उणर्न्द पॅर्रियोर्*
*पिन्नै आय कोलमोडु पेरुम् ऊरुम् आदियुम्*
*निन्नै यार् निनैक्क वल्लर्? नीर्मैयाल् निनैक्किले।*

**भावार्थ**

तुम्हारे दिव्य स्वरूप के बारे में कोई कुछ भी नहीं जानता।
भक्त स्तुति करते हैं।
"तुम सूक्ष्म कटिवाली नाप्पिन्नै के प्रियतम हो।"
तुम्हारा नाम, स्थान, दिव्य रूप का स्मरण करते हैं तो
वह तुम्हारे सौलभ्य का फल है।

(12) *कङ्गै नीऱ् पयन्द पाद पङ्गयत्तु ऍम् अण्णले*
*अङ्गै आऴि शङ्गु तण्डु विल्लुम् वाळुम् एन्दिनाय्!*
*शिङ्गमाय तेव तेव। तेन् उलावु मेव् मलर्*
*मङ्गै मन्नि वाळु माऱ्प! आऴि मेनि मायने!*

**भावार्थ**

गंगा के मूल स्रोत! पादपंकज के स्वामी!
शंख, चक्र, गदा, धनुष, खड्ग, धारण करनेवाले स्वामी!
सिंह सदृश हमारे प्रभु!
भ्रमर मण्डित कोमल कमल पर
विराजमान लक्ष्मी के नित्य आवास वक्षवाले!
सागर वर्ण मायावी!
तुम्हारी महिमा कौन जान सकता है?

(13) *आणिनोडु पॆण्णुम् आहि अल्लवोडु नल्लवाय्*
*ऊणोडु आशै ऊरुम् आहि ओन्रु अलाद मायैयाय्*
*पूणि पेणुम् आयन् आहि-प् पॊयिनाडु मॅय्युम् आय्*
*काणि पेणुम् माणियाय्-क् करन्दु शेन्र कळ्वने।*

**भावार्थ**

तुम पुरुष भी हो, स्त्री भी हो।
तुम भलाई भी हो, बुराई हो।
तुम रस के साम, शब्द और स्पर्श हो।
तुम प्रकृति तत्त्व हो।
तुम गो समूह के रक्षक ही हो।
तुम असत्य हो, साम सत्य हो।
तुम भूमि का आदर करनेवाले वामन हो।
छिप-छिपकर चलनेवाले चोर
तुम्हें दर्शन करने में सब समर्थ हैं।

(14) *आदि आदि आदि नी ओ॑रु अण्डम् आदि आदलाल्*
*शोदियाद शोदि नी अदु उण्मैयिल् विळङगिनाय्*
*वेदम् आहि वेळ्वि आहि विण्णिनोडु मण्णुमाय्*
*आदि आहि आयन् आय मायम् एन्न मायमे?*

भावार्थ

तुम आदि, आदि आदि हो।
तुम ब्रह्माण्ड के आदि हो।
तुम ज्योति स्वरूप हो।
तुम प्रकाशमान हो।
तुम वेद हो, यज्ञ हो, आकाश के साथ भूमि भी हो।
तुम आदि भी हो, अहीर भी हो।
यह कैसी माया है।

(15) *कायृत्त नीळ विळङ्कानि उदिरत्तु एॅदिर्न्द पूङ् कुरुन्दु*
*शायृत्त मा पिळन्द कैत् तलत्त कण्णन् एन्पराल्*
*आयृच्चिपालै उण्डु मण्णै उण्डुवेण्णेय उण्डु पिन्*
*पेयृच्चि पालै उण्डु ओरु एनमाय वामना!*

भावार्थ

ऊँचे कपित्थ वृक्षों के फलों को नीचे बिखेरकर
सुन्दर कुन्द वृक्षों को गिराकर
केशी राक्षस के रूप में आए हे राक्षस-संहारी प्रिय कान्ह!
तुम अहीरन का दूध पीकर,
मिट्टी खाकर, मक्खन सेवन कर,
दानवी का दूध पीकर,
तुम पूर्वकाल में वराह अवतार लेनेवाले वामन हो।

(16) *पत्तिनोडु पत्तुमाय् ओर् एलिनोडु ओर् ऑन्नपदाय्*
*पत्तिनाल् तिशैक्कण् निन्र नाडु पे॑र्र नन्मैयाय्*
*पत्तिनाय तोऱ्ऱमोडु ओ॑रु आऱ्ऱल् मिक्क आदि पाल्*
*पत्तराम् अवर्क्कु अलादु मुत्ति मुऱ्ऱल आहुमे?*

भावार्थ

दस दिशाओं के साथ दस दिक्पालक भी हो
सप्त स्वरों के साथ नव रस भी हो

दस और चार भुवनों से प्राप्त भोग हो
तुम दसावतार हो।
क्या भक्तों को मुक्ति का फल सम्भव है

(17) *तऩ्नुळे तिरैत्तु ऍलुम् तरङ्ग वॆण् तडङ्-कडल्*
*तऩ्नुळे तिरैत्तु ऍलुन्दु अडङ्गु किऩ्ऱ तऩ्मै पोल्*
*निऩ्नुळे पिऱन्दु इऱन्दु निऱपवुम् तिरिपवुम्*
*निऩ्नुळे अडङ्गुकिऩ्ऱ नीर्मै निऩ्कण् निऩ्ऱदे।*

**भावार्थ**

विशाल धवल सागर का स्वभाव है,
अपनी उमड़ती तरंगों को अपने में ही शान्त कर लेना,
उसी प्रकार तुमसे जन्मते और मृत होते जड़, जंगम,
तुम्हीं में लीन हो जाते हैं,
यह महिमा तुम्हारे अन्दर स्थित है।

(18) *कूशम् ओॆऩ्ऱुम् इऩ्ऱि मा-शुणम् पडुत्तु वेलैनीर्*
*पेश निऩ्ऱ देवर् वन्दु पाड मुऩ् किडन्दतुम्*
*पाशम् निऩ्ऱनीरिल वाळुम् आमैयान केशवा।*
*एश अऩ्ऱु नी किडन्द वाऱु कूऱु तेऱवे।*

**भावार्थ**

तुम निशंक हो पुराकाल में,
आदिशेष की शय्या बना सोए,
सागर-जल गर्जन के साथ देवता खड़े हो,
तुम्हारा यशोगान करते रहे
निकटस्थ जल में तुमने कूर्म रूप धारण किया,
हे केशव! उस दिन उस रूप पर अन्य लोग उपहास करते रहे,
तुम गहरे जल के नीचे शपित होने का प्रकार बताओ,
जिससे मुझे आश्वासन मिले।

(19) *कालनेमि कालने। कणक्कु इलाद कीऱतियाय्।*
*ञालम् एलुम् उण्डु पण्डु ओऱ बालन् आय पण्बने।*
*वेले वेव विल् वळैत्त वॆल् शिनत्त वीर्। निऩ्*
*पालर् आय पत्तर् चित्तम् मुत्ति शॆय्युम् मूऱत्तिये।*

भावार्थ

हे कालनेमि के वध करनेवाले।
संख्यातीत यशवाले!
सात लोकों को निगलकर,
हे बाल स्वभाववाले!
जिसके धनुष नत करने मात्र से
सागर में बड़वाग्नि उठी,
ऐसे क्रोध करनेवाले योद्धा,
अपने सन्निकट स्थित भक्तों के चित्त को
मुक्ति प्रदान करनेवाले,
देवमूर्ति तुम ही हो।

(20) *मऩ्नु मा मलर्-क् किल़त्ति वैय मङ्गै मैन्दनाय्*
*पिऩ्नुम् आयर् पिन्नै तोळ् मणम् पुणर्न्दु अदन् ऱियुम्*
*उन्न पादम् ऍन्न शिन्तै मन्न वैत्तु नल़किनाय्*
*पोॅन्नि शूल़ अरङ्गम् मेय पुण्डरीकन् अल़्लैये।*

भावार्थ

नित्य सुन्दर पुष्पों पर विराजमान महिषी लक्ष्मी
और भू देवी के प्रियतम तुम्ही हो,
आभीर कुल की नप्पिन्नै का भुजालिंगन करने के साथ,
अपने चरणों को मेरे हृदय में स्थिर रखने की भी कृपा की।
कावेरी नदी से घिरे श्रीरंगम के कमल तुम ही हो।

(21) *शेलुम् कोलुम् पेरुम् पनि पोल़िन्दिड उयरन्द वेय्*
*विलुन्द उलर्न्दु ऍलुन्दुविण् पुडैक्कुम् वेङ्गडत्तुळ् निऩ्ऱ्*
*ऍलुन्दु इरुन्दु तेन् पोॅरुन्दु पूम् पोॅलिल् तल़ै-क् कोलुम्*
*शेलुम् तडङ् कुडन्दैयुळ् किडन्द मालुम् अल़्लैये।*

भावार्थ

अतिविपुल तुषार बरसने के कारण,
जहाँ ऊँचे बाँस गिरते हैं, सूखते हैं तथा उन्नत होकर,
आकाश का भी भेदन करते हैं,
उस वेंकटगिरि पर जहाँ भ्रमर भी मँडराकर,
विश्राम से रहते हैं।

हरीतिमा से युक्त सुन्दर उपवन में, विशाल तालाबयुक्त,
कुडन्दै में शयित प्रभु तुम ही हो।

(22) *कडेन्द पार् कडल् किडन्दु काल नेमियै-क् कडिन्दु*
*उडेन्द वालि तन्रनक्कु उदव वन्दु इरामनाय्*
*मिडैन्द एल़ मरङ्गळुम् अडङ्ग ऍय्दु वेङ्गडम्*
*अडैन्द माल पादमे अडैन्दु नाळुम् उय्म्मिनो।*

**भावार्थ**

शायित क्षीरसागर पर शयन कर;
कालनेमि का संहार कर,
विखण्डित शक्तिवाले बालि के अनुज का उपकार करने के लिए,
राम ने वन में सटकर खड़े सात शाल वृक्षों के
भेदन के लिए एक ही बाण चलाया और वेंकटगिरि पहुँचे,
ऐसे प्रभु के चरणों की शरण में जाकर उज्जीवित हो जाओ।

(23) *पण्णुलावु मॆन् मोलि-प् पडै-त् तडम् कणाल् पॊरुट्टु*
*ऍण्णिला अरक्करै नॆरुप्पिनाल् नॆरुक्किनाय्*
*कण्णलाल् ओर कण् इलेन् कलन्द शुऱ्ऱम् मऱ्ऱु इलेन्*
*ऐण्णिलाद माय। निन्नै ऍन्नुळ् नीक्कल् ऍन्रुमे।*

**भावार्थ**

गीतात्मक मृदु वचन, तीक्ष्ण आयुध लोचन हेतु,
असंख्य राक्षसों को अपने बाणों की अग्नि से सन्तप्त करनेवाले
रक्षक तुम ही हो।
तुम्हारे अतिरिक्त मेरा कोई रक्षक नहीं,
और कोई अनुकूल बान्धव नहीं,
असंख्य मायावी।
अपने को मेरे अन्तर से पृथक मत करो।

*(24)* अत्तन् आहि अन्ने आहि आलुम् ऍम् पिरानुम् आय्
*ऒत्तु ऒव्वाद पल् पिऱप्पु ऒलित्तु नम्मै आट् कोळ्वान्*
*मुत्तनार् मुकुन्दनार् पुहुन्दु नम्मुळ् मेविनार्*
*ऍत्तिनाल् इडर्-क कडल् किडत्ति एलै नॆञ्जमे।*

भावार्थ

रे मूढ़ मन, तू किस कारण दुःख सागर में पड़ा रहता है?
जो मुक्त, मुकुन्द हैं वे हमारे
एक रूप तथा अनेक रूपों में होनेवाले जन्मों का अन्त करके,
हमें अपना दास बनाने के लिए माता-पिता बनते हैं
और जो हमारे ऊपर शासन करनेवाले स्वामी भी हैं।
वे हमारे अन्तर में विराजमान हैं।



# नम्मालवार

## (श्री शठकोप)

**साहित्य :**

| | | |
|---|---|---|
| तिरुवृत्तम | - | 100 पद |
| *तिरुवाशिरियम्* | - | *7 पद* |
| पॅरिय तिरुवन्तादि | - | 87 पद (पॅरिय तिरुवन्त्यादि) |
| तिरुवाय् मॉलि | - | 1102 |

**नम्मालवार :**

शठकोप आलवार को सब प्यार और श्रद्धा से नम्मालवार अर्थात् 'हमारे आलवार' कहते हैं। ये आलवारों में प्रधान माने जाते हैं। इनका जन्म पाण्ड्य देश में ताम्रपर्णी नदी के किनारे तिरुक्कुरुकूर नगर में चतुर्थ वर्ण के कुल में हुआ। गुरु परम्परा के अनुसार वे 'कौस्तुभ' का अवतार माने जाते हैं। कहा जाता है कि वे सोलह साल की अवस्था तक मौन रहे। अन्तःप्रेरणा से प्रभावित होकर मधुर नामक कवि नम्मालवार से मिलने आए। नम्मालवार को जगाकर उन्होंने पूछा कि "शरीर में बद्ध जीव क्या खाकर कहाँ रहता है?" उन्हें उत्तर मिला, "उसी को खाकर वहीं निवास करता है।" अर्थात् जीव शरीर सम्बन्ध से प्राप्त सुख ओर दुख का अनुभव करते हुए वहीं पड़ा रहता है। इस उत्तर से प्रभावित होकर मधुर कवि उनके शिष्य बनकर वहीं रहने लगे।

नम्मालवार के जीवन काल के सम्बन्ध में अनेक मत प्रचलित हैं। डॉ. श्रीनिवास अय्यंगार का मत है कि नम्मालवार ईस्वी 935 के लगभग रहे होंगे।[1] वे नाथमुनि, मधुर कवि दोनों को नम्मालवार के शिष्य मानते हैं। इस मत का खण्डन करते हुए डॉ. कृष्णस्वामीय्यंगार कहते हैं—नाथमुनि नम्मालवार के समकालीन नहीं हैं। उनके मत में नम्मालवार का जीवन काल छठी शताब्दी के मध्य में है। अधिकतर विद्वान अन्तर्साक्ष्य एवं बहिर्साक्ष्य के आधार पर नम्मालवार को पेरियालवार का

---

1. तमिल स्टडीज़—एस. श्रीनिवास अय्यंगार

समकालीन मानते हैं। नम्मालवार 'करिमारन', 'शठकोप', 'बकुलापरणन', 'परांकुश' आदि नामों से प्रसिद्ध हैं। नम्मालवार का लक्ष्य है कि सारी आत्माओं की रक्षा करनी चाहिए। अतः वे अपने प्रबन्धों में ईश्वर स्वरूप, जीव स्वरूप, ईश्वर प्राप्ति का उपाय, उपाय के विघ्न और प्रपत्ति, आत्म रक्षा के लिए शरणागति मार्ग पर अधिक ज़ोर देते हैं। इसी कारण ये 'प्रपन्नजनकूटस्थ' कहलाते हैं। ये परमात्मा के गुणों का अनुभव कभी निजरूप में, कभी स्त्री के रूप में करते हैं। कहीं भगवान से संयोग का आनन्द का अनुभव करते हैं तो कहीं वियोग का। अपने को कहीं परमात्मा की कृपा का पात्र मानते हैं और कभी प्रणय-रोष की भावना से मुँह मोड़कर कहते हैं कि अब, तू अन्य गोपियों के पास जा।

नम्मालवार सर्वत्र ईश्वर स्वरूप को ही देखते हैं। नीले आसमान को देखकर हाथ जोड़कर कहते हैं, "यह मेरे प्रियतम का बैकुण्ठ हैं।" समुद्र को देखते ही कहते हैं, "यह मेरे प्रियतम का विश्राम स्थल है।" पर्वत को देखकर प्यार से बुलाते हैं, "मेरे प्यारे आ जाओ।" सूर्य को दिखाकर कहते हैं, "मेरे श्रीमन्नारायण को देखा!" सर्प के पीछे-पीछे दौड़ते हुए गदगद् होकर कहते हैं, "देखो मेरे प्यारे की शय्या को।" इस प्रकार नम्मालवार साधुओं में, सज्जनों में, बादलों में, समुद्र में सर्वत्र अपने प्रियतम की मूर्ति के दर्शन करते हैं। कभी उन्मत्त होकर प्रभु के ध्यान में नाचते, गाते, मूर्च्छित हो जाते हैं। वे कहते हैं, "सोते समय में भी श्रियःपति का ध्यान करो।" अहंकार, ममकार को जड़ से उखाड़ फेंको और दीनहीन दशा को निःसंकोच करते हुए परमात्मा के चरण में जाओ। आनन्द से नाचते हुए कहते हैं, "मेरे खाने का भोजन, पीने का पानी, भुगतने का पान 'सब कृष्ण हैं'।"

## नम्मालवार साहित्य

### तिरुवृत्तम

100 पद्यों का *तिरुवृत्तम* ऋग्वेद का सार माना जाता है। इस ग्रन्थ की विशेषता यह है—प्रत्येक पद में वाच्यार्थ और लक्ष्यार्थ दोनों लिए जाते हैं। वाच्यार्थ से नायक और नायिका का प्रेम सम्बन्ध सूचित होता है तो लक्ष्यार्थ से जीव और ब्रह्म सम्बन्ध।

### तिरुवाशिरियम्

सात पद्यों का *तिरुवाशिरियम्* यजुर्वेद का सार माना जाता है। इसमें आलवार लौकिक लाभ को प्रभु भक्ति के समक्ष तुच्छ समझकर आत्मनिवेदन द्वारा अपने को भगवान के समक्ष अर्पित करके भगवान के दिव्य रूप के अनुभव में विस्मृत हो जाते हैं।

## पे॑रिय तिरुवन्तादि

इसमें 87 पद्य हैं। यह अथर्ववेद का सार माना जाता है। इसमें आऴ्वार कहते हैं कि "प्रभु का अनुभव जो हुआ है वह किंचित् मात्र है। जो अनुभव होनेवाला है वह अत्यधिक भक्त के हृदय में प्रभु के लिए पवित्र श्रद्धा तथा प्रेम की भावना हो तो प्रभु का अहेतुक प्रेम भक्त को अनायास मिल जाता है।"

## तिरुवाय् मो॑ऴि

यह सामवेद का सार माना जाता है। इसमें 1102 पद्य हैं। इसमें समस्त कल्याणगुणों से परिपूर्ण श्रियःपति का गुणगान वर्णित है और भक्त का अपनी इच्छानुसार भगवदनुभव प्राप्त करके मुक्ति पाने का वर्णन है।

नम्माऴ्वार की भक्ति दास्य भाव की है। वे मोक्ष की अपेक्षा प्रभु सामीप्य को उत्कृष्ट मानते हैं। उनका विचार है कि भगवान के दर्शन अन्तःचक्षुओं से होने हैं। वे अपने को प्रभु की पत्नी के रूप में प्रस्तुत करते हैं। नम्माऴ्वार की भाषा अत्यन्त सुन्दर एवं परिमार्जित है। वह चलताऊ होने पर भी अत्यन्त साहित्यिक है। तमिऴ् के प्रचलित मुहावरों, कहावतों का प्रयोग तथा माधुर्य, चित्रमयता के कारण भाषा प्रवाहमयी एवं शुद्ध है। उनकी शैली में वचन चातुरी और रस संचारी भावों का स्वाभाविक और रोचक मेल है। व्यंजना शैली पर संघ-काल साहित्य का तथा अपने समकालीन शैव साहित्य का प्रभाव लक्षित होता है। उनके अलंकारों का प्रयोग प्रशंसनीय है। उनके पदों में प्राचीन तमिऴ् प्रदेश के सांस्कृतिक जीवन की सुन्दर झलक मिलती है। शकुन परीक्षा की प्राचीन परिपाटी, प्रियतमा के प्रेम से निराश हुआ नायक के प्राण त्याग के दर्शन आदि चित्र दर्शनीय हैं।



# तिरुविरुत्तम

**तनियन**

*करु विरुत्त-क् कुलि़ नीत्त पिन् काम-क् कडुम् कुलि़ वील़न्दु*
*ऑरु विरुत्तम् पुक्कु उल़ल् उरुवीर्! उयिरिन् पॉरुळ्हट्कु*
*ऑरु विरुत्तम् पुहुदामल् कुरुहैयर कोन् उरैत्त*
*तिरुविरुत्तत्तु ओर् अड़ि कऱ्ऱु इरीर् तिरु नाट्टहत्ते।*

## सन्त वन्दना

**भावार्थ**

(तमिल़ साहित्य के छन्द शास्त्र में विरुत्तम् एक छन्द का नाम है। इसमें प्रस्तुत पद्य रचित है। इसमें सन्त नम्माल़वार के प्रभु के अनुभव के वृत्तान्तों का उल्लेख है।)

गर्भ से छूट जाने के बाद,
कामदेव के घोर जाल में फँसकर,
अतुलनीय वृद्धावस्था में प्रवेशकर,
मारे-मारे भटकनेवाले लोगो!
आत्मा के लिए मिलनेवाला पुरुषार्थों के विरुद्ध
विषय वासना में फिर से प्रवेश को रोकने के लिए
कुरुका वासियों में
प्रधान भक्त नम्माल़वार के
प्रोक्त तिरुविरुत्तम का एक पद् सीख लो,
प्रभु के परमधाम में पहुँचने के लिए तैयार हो जाओ।

(2) *शेलु नीर्-त् तडत्तु-क् कयल् मिळिर्न्दाल ऑप्प शेयरि-क् कण्*
*अलु नीर् तुळुम्ब अलमरूहिन्रन वालि़यरो!*
*मुलु नीर् मुकिल् वण्णन् कण्णन् विण्नाट्टवर् मूदुवर् आम्*
*तॉलु नीर् इणै अड़िक्के अन्पु शूट्टिय शूल़ कुलऱ्के।*

**भावार्थ**

(नायिका की विरह-दशा देखकर सखी के वचन। प्रभु नायक है, नम्मालवार विरह में तड़पनेवाली नायिका है। भक्ति प्रणयभाव से युक्त है। नायिका पुष्प-संग्रह के लिए सखियों के साथ वाटिका में आती है शिकार में नायक हाथी के पीछे गया है। वह अब उस वाटिका में आता है। नायक-नायिका का मिलन होता है। बाद में वियोग दशा का वर्णन ही यहाँ प्रस्तुत है)

नीलमेघ वर्ण कृष्ण के दोनों चरण सिद्ध नित्यसूरियों से वन्दित हैं।
प्रेम की माला पहनी हुई नायिका के, नयन विरह पीड़ित अश्रुपूर्ण हैं
ये नयन जलसमृद्ध, जलाशय में उछलनेवाली मछलियों के समान चमकते हैं।
(प्रियतम के संयोग प्राप्त होने पर ही ये नयन हर्षित होंगे।)

(3) *काण्किन्ऱनकळुम केट्किन्ऱनकळुम् काणिल् इन् नाळ्*
*पाण् कुनऱ नाडर् पयिल्हिन्ऱन इदु एल्लाम् अऱिन्दोम्*
*माण् कुन् ऱम् एन्दि तण् मा मलै वेङगडत्तु अम्बर् नम्बुम्*
*शेण् कुन्ऱम् शॅन्ऱु पॉरुळ् पड़ैप्पान कऱ्ऱ तिण्णनवे।*

**भावार्थ**

(सखी से नायिका कहती है कि धन कमाने की इच्छा से नायक उसे छोड़कर जानेवाला है)

पहाड़ी प्रदेशों के राजा हमारे नायक की प्रवृत्तियाँ,
उनके वचन और विचार सुनने से,
यही भाव समझ में आता है
"ये सब दिखावे मात्र हैं
गिरिधारी शीतल और उन्नत, वेंकटगिरि के ऊँचे-ऊँचे शिखर,
जो नित्यसूर्यों का वांछित स्थान है, वहाँ जाकर प्रभु धन सम्पादन के इच्छुक हैं
उनके ये चतुर कार्य हमें धोखे में डालने के लिए हैं
हमने इसे जान लिया है।"

(4) *अरियन याम् इन्ऱु काण्गिन्ऱन कण्णन् विण् अनैयाय्!*
*पॅरियन कादम् पॉरुट्को पिरिवु ऍन आलम् ऍयदर्कु*
*उरियन ऑण् मुत्तुम् पैम् पॉन्नुम् एन्दि ओरो कुडङ्गै-प्*
*पॅरियन कॅण्डै-क् कुलम् इवैयो वन्दु पेर्हिन्ऱवे!*

### भावार्थ

(नायिका के विरह पीड़ित शरीर को देखकर नायक सखी से कहता है—)

जो कुछ हम देख रहे हैं,
वह इस लोक में दुर्लभ है,
जब मैं बोलता हूँ तो ये नयन,
मेरी आँखों के सामने आकर घूमते हैं,
अर्थ उपार्जन के लिए नायक के बाहर जाने की रीत है,
नायिका इस विरह में तड़पती है,
उनके नयन पृथ्वी को वश में करनेवाले हैं,
हथेली-जैसे बड़े-बड़े हैं, उत्तम मत्स्यों के समान हैं।
वे नयन मोती और स्वर्ण का रूप लेकर
मेरे सामने आ जाते हैं।

(5) *इऩ्ऩऩ्ऩ दूदु ऍम्मै आळ् अऱर-प् पट्टु इरन्दाळ् इवळ् ऍनरु*
*अऩ्ऩऩ् शॉल्ला पॅडियॉडुम् पोय् वरुम् नीलम् उण्ड़*
*मिऩ् अऩ्ऩ मेनि-प् पेस्माऩ् उलहिल् पॅण दूदु शॅल्ला*
*अऩ्ऩऩ्ऩ नीर्मै कॉला कुड़ि-च् चीर्मै इल् अऩ्ऩङ्गळे।*

### भावार्थ

(नायिका सोचती है) उच्च कुल में उत्पन्न होने से वंचित हंसिनियाँ सोचती हैं,
दूत के रूप में जाने के लिए, व्यक्तियों के न मिलने पर,
हमसे प्रार्थना करती हैं,
वे नायक के पास जाकर सन्देश नहीं सुना पाते,
परन्तु ये अपनी हंसिनियों के संग घूमते रहते हैं।
इसके लिए कारण क्या हो सकता है?
सम्भवतः बिजली के समान चमकनेवाले नील वर्णवाले प्रभु से
हम महिलाओं के लिए दूत के रूप में जाने की प्रथा ही नहीं!
(प्रार्थना करने पर भी हंस नायक के पास दूत के रूप में जाने के लिए तैयार नहीं।
नायिका अपना असन्तोष प्रकट करती है।)

(6) *विळरि-क् कुरल् अनऱिल् मेन् पॅड़े मेहिऩ्ऱ मुनऱिल् पे॑ण्णै*
*मुळरि-क् कुरम्बे इदु इदु आह मुहिल् वण्णऩ् पेर्*
*क़िळरि-क् किळरि-प् पिदऱुम् मे॑ळ् आवियुम् नैवुम् ऍल्लाम्*
*तळरिऩ् को॑लो अऱियेन् उय्यल् आवदु इत्-तैयलुक्के?*

**भावार्थ**

(विरहिणी नायिका की विरह वेदना देखकर सखी का कथन)

ये घोंसले! विळरि[1] स्वर में गानेवाले क्रौंच जोड़ों के मिलने के स्थान हैं।
ये घर के सामने स्थित ताल वृक्ष पर काँटों को हटाकर बने हैं,
पक्षियों के स्वर से दुखी होकर,
नायिका मेघ वर्ण नायक का नाम लेकर रोती रहती है।
उसकी आत्मा दुखी होती है और शरीर कमज़ोर।
क्या इस नायिका की वेदना प्रियतम के आगमन से दूर होगी?

(7) *अड़ैक्कलत्तु ओङ्गु कमलत्तु अलर् अयन् शॅन्निनि ऍन्नुम्*
*मुड़ै-क् कलत्तु ऊण् मुन् अरनुक्कु नीक्कियै, आलि शङ्गम्*
*पड़ै-क् कलम् एन्दियै वॅण्णेयक्कु अन्रु आय्च्चि वन् ताम्बुहळाल्*
*पुड़ै-क् कलन्दानै ऍम्मानै ऍन् शॉल्लि-प् पुलम्बुवने?*

**भावार्थ**

(नायक के विरह में नायिका रोती है।)

कमल से उत्पन्न ब्रह्मा के सिर के कपाल पात्र में,
भोजन करने के शाप से प्रभु ने शिव को मुक्त किया।[2]
शङ्ख चक्रधारी प्रभु को मक्खन की चोरी के लिए
उस दिन यशोदा ने मोटी रस्सी से बाँधकर मारा।
वे विचलित नहीं हुए।
मेरे प्रभु के सम्बन्ध में क्या कहकर रोऊँ?

---

1. तमिल़् संगीतशास्त्र में सात स्वरों में छठे स्वर का नाम विळरि है।
संस्कृत संगीत शास्त्र में षड्ज, ऋषभ, गान्धार, मध्यम, पंचम, धैवत और निषाद—ये सप्त स्वर हैं। तमिल् में क्रमशः वे कुरल्, तुत्तम् कैक्किळै, उळै, इळि, विळरि, तारम् नामों से प्रसिद्ध हैं। क्रौंच : क्वणति मध्यम् इस वाक्य के अनुसार क्रौंच पक्षी का स्वर मध्यम है वही तमिल़् में विळरि कहलाता है। तमिल़् संगीत शास्त्र में विळरि एक रागिनी का नाम है।
*दिव्य प्रबन्ध*—भाग-8, पृष्ठ 59

2. **शिव-शाप दूर होने की कथा :** ब्रह्मा के पाँच सिर थे। शिव ने ब्रह्मा का एक सिर काट लिया। शिव को ब्रह्म-हत्या का पाप लगा। उसे शाप दिया कि इस कपाल पात्र में भिक्षा लेकर जीवन व्यतीत करो। जब यह भिक्षा से भर जाएगा तभी वह हाथ से छूटेगा। शिव भीख माँगते भटकते फिरे। अन्त में उन्होंने बदरिकाश्रम जाकर प्रभु श्रीमन् नारायण से भीख माँगी। प्रभु ने कपाल में 'अक्षय' कहकर भिक्षा डाली तो कपाल भर गया और कपाल शिव के हाथ से छूट गया। *दिव्य प्रबन्ध*—भाग-8, पृष्ठ 61

## तिरुवाशिरियम्

(8) *ऊऴि तोरु ऊलि ओवादु वाऴिय*
*ऍन्रु याम् तॉऴ इशैयुम् कॉल् यावहै*
*उलहमुम् यावरुम् इल्ला मेल् वरुम्*
*पॅरुम् पाऴक् कालत्तु इरुम पॉरुट्कु ऍल्लाम्*
*अरुम् पॅरल तनि वित्तु ऑरुतान् आहि*
*देय्व नान्मुह-क् कॉलु मुळै ईन्रु*
*मुक्कण् ईशनॉडु देवु पलनुदलि*
*मूवुलकम् विळैत्त उन्दि*
*माय-क् कडवुळ् मा मुदल् अडिये?*

**भावार्थ**

कल्प काल से प्रभु की 'जय हो, जय हो' उच्चारण करते हुए,
मैं कान्तियुक्त प्रभु के चरणों में क्या विनती कर पाऊँगा?
जब कोई लोक नहीं था, कोई जीव नहीं था,
जब सब कुछ शून्य ही था, जब वांछित वस्तुएँ दुष्प्राप्य थीं
तब अद्वितीय बीज स्वयं बनकर
प्रभु ने चतुर्थ मुख देव रूप उर्वरा अंकुर उत्पन्न किया।
त्रिनेत्र ईश और देवों को उत्पन्न किया
संकल्प करके नाभि में तीनों लोकों की सृष्टि की।

## इयरूपा-पॅरिय तिरुवन्तादि

(9) *पुहऴवोम् पऴिप्पोम् पुहऴोम् पलियोम्*
*इहऴवोम् मदिप्पोम् मदियोम्-इहलऴोम् मरु*
*ऍङ्गळ माल्! शॅङ्कण् माल्! शीरल् नी तीविनैयोम्*
*ऍङ्गळ् माल् कण्डाय् इवै।*

**भावार्थ**

हम तुम्हारी स्तुति करते हैं तो तुम्हारी निन्दा करनेवाले भी होंगे।
तुम्हारी कीर्ति नहीं गाते तो वे निन्दा भी नहीं करते,
यदि हम तुम्हारी याद करते हैं, तो वे निन्दा करते होंगे।
स्मरण नहीं करते तो निन्दा भी नहीं करते,

हम पर कृपा दिखानेवाले अरुणनयन प्रभु हम पर नाराज़ मत होओ!
स्तुति करना या निवृत्त होना, ये सब
हम महापापियों के व्यामोहों का फल है यही समझो।

(10) *विनैयार् तर मुयलुम् वॅम्मैयै अंजि*
*तिनै आम् शिऱिदु अळवुम् शॅल्ल-निनैयादु*
*वाचकहत्ताल ऍत्तिनेन् वानोर् तॉलुदु इरैञ्जुम्*
*नायकत्तान् पॉन् अडिक्कळ् नान्*

भावार्थ

मैं अत्यल्प काल भी व्यर्थ नहीं बिताना चाहता
दुख देनेवाले दुष्कर्म के प्रति
मैं भयभीत होता हूँ
मैं प्रभु की स्तुति कर आनन्दित होता हूँ
मैं यथाशक्ति शब्द-माला
देवों से स्तुत्य प्रभु के चरणों में अर्पित कर वन्दना करता हूँ।

(11) *तॅरिन्दु उणर्वु ओॅन्ऱू इन्मैयाल् ती विनैयेन् वाळा*
*इरुन्दु ऑलिन्देन कीऴ नाळ्हळ् ऍल्लाम्-करन्दुरुविन्*
*अम् मानै अन्-नान्ऱू पिन् तोड़न्द आलि अङ्कै*
*अम्मानै एत्तादु अयर्त्तु।*

भावार्थ

मैं घोर पापी था।
मुझमें सोचने की शक्ति नहीं थी।
मुझमें विवेचन करने की शक्ति नहीं थी।
माया मृग मारीच के पीछे, चलनेवाले,
अंगुलीय से अलंकृत मेरे प्रभु,
रामचन्द्र की स्तुति किए बिना, अज्ञान में पड़कर
व्यर्थ में अपना जीवन बिताता रहा।

## तिरुवाय् मोॅलि

(12) *उयर्वु अऱ उयर नलम् उड़ैयवन् ऍवन् अवन्*
*मयर्वु अऱ मदि नलम् अरुळिनन् एवन् अवन्*

*अयर्वु अऱुम् अमर्हळ् अदिपति ऍवन् अवन्*
*तुयर् अऱु शूड़र् अड़ि तॉलुदु ऍलु ऍन् मनने!*

भावार्थ

जो प्रभु उत्कर्ष एवं आनन्द से सम्पन्न हैं,
जो अज्ञान विनाशक ज्ञान एवं आनन्द प्रदान करनेवाले हैं,
जो अज्ञानविहीन अमरों के अधिपति हैं,
मेरे मन!!
सर्वदुख निवारण करनेवाले और
ज्वलन्त चरणोंवाले
उस प्रभु का नमन करो।

(13) *नाम् अवन् इवन् उवन् अवळ् इवळ् उवळ् ऍवळ्*
*ताम् अवर् इवर् उवर् अदु इदु ऊदु ऍदु*
*बीम् अबे इवै उवै अवै नलम् तीङ्गु अवै*
*आमवै आयवै आय् निन्ऱ अवरे।*

भावार्थ

हम, वह, यह, तू, तुम, आप में (पुरुषवाचक)
वह, यह, तू, तुम, आप हम-में (स्त्रीवाचक)
प्रश्नवाचक पदार्थों में, दूरवर्ती, समीपवर्ती जनसमूह में,
अचेतन वस्तुओं में
वे ही भलाई, बुराई हैं।
वे ही भविष्य, भूत पदार्थों में विद्यमान हैं
सब वस्तुओं का स्वरूप भगवदधीन है।

(14) *निन्ऱन्ऱ इरुन्दनर् किडन्दनर् तिरिन्दनर्*
*निन्ऱिलऱ इरुन्दिलर् किडन्दिलर् तिरिन्दिलर्*
*ऍन्ऱुम् ऑरु इयल्विनर् ऍन् निनैवरियवर*
*ऍन्ऱुम् ऑरु इयल्वोडु निनऱ एम् तिडरे।*

भावार्थ

खड़े हैं, बैठे हैं, लेटे हैं, घूमते हैं
खड़े नहीं, बैठे नहीं, लेटे नहीं, घूमते नहीं,
इंन सब प्रवृत्ति तथा निवृत्ति अवस्था में
भगवान का ही स्वरूप विद्यमान है।

सभी कालों में उनका स्वभाव एक ही प्रकार का है।
यह नहीं कह सकते प्रभु का निज स्वभाव क्या है।
(प्रभु अस्तित्व-स्वभाव से युक्त हैं)

(15) *वीडुमिन् मुऱ्ऱवुम् वीडु शॅय्दु उम् उयिर्*
*वीडुडैयानिडॅ वीडु शॅय्म्मने।*

भावार्थ

तज दीजिए सभी विषय वासनाओं को,
तजकर अपनी आत्मा को,
मोक्ष के निर्वाहक परमात्मा में समर्पित कर दीजिए।

(16) *यारुम् ओर् निलैमैयन् ऍन् अऱिवरिय ऍम् पॅरुमान्*
*यारुम् ओर् निलैमैयन् ऍन् अरिवेलिय ऍम् पॅरुमान्*
*पेरुम् ओर आयिरम् पिऱ पल उड़ैय ऍम् पॅरुमान्*
*पेरुम् ओर उरुवमुम् उळदिल्लै इलदु इलळै पिणक्के।*

भावार्थ

ज्ञानवत पर अभक्त हों प्रभु का स्वभाव समझना दुर्लभ है
अशिक्षित पर भक्त हों तो प्रभु का स्वभाव समझना सुलभ है।
उनके एक सहस्र नाम हैं।
मेरे प्रभु के रूप भी अनेक हैं।
कोई कहते हैं न कोई उनका नाम है न कोई रूप है,
कोई-कोई कहते हैं उनके अनन्त नाम और रूप हैं।

(17) *नाळुम् निन्रु अडुम नम पऴमै अङ्कॉडुविनै उडने*
*माळुम् ओर् कुरैबु इल्लै मनन अहम् मलम् अऱ्-क् कलुवि*
*नाळुम् नम् तिरुवुड़ै अड़ि अड़िहक् तम् नलम् कऴल् वणङ्गि*
*माळुम् ओर् इडत्तिलुम् वणकॉडु माळ्वदु वलमे।*

भावार्थ

मन में स्थित मल मिटने पर,
शुद्ध मन से प्रभु के श्री चरणों की वन्दना करोगे,
सभी पीड़ाएँ अनादि घोर पाप सब विनष्ट हो जाएँगे।
मरणासन्न अवस्था में भी
प्रभु वन्दना के साथ मरना श्रेयस्कर है।

(18) *नीयुम् नानुम् इन् नेर् निऱ किल् मेल्-मऱ्ऱु ओर्*
*नोयुम् शार् को ड़ान् नेञ्जमे! शॉन्नेन्*
*तायुम् तन्दैयुम् आय् इव् वुलहिनिल्*
*वायुम ईशन् मणिवण्णन् एँन्दैये।*

भावार्थ

मन तनिक सुनो!!
तुम और मैं भगवान के समक्ष खड़े होंगे तो
वे भविष्य में हमें किसी प्रकार के रोग होने न देंगे।
मेरे प्रभु इस लोक में हमारे माता-पिता हैं।

(19) *मादवन् ऍन्ऱदे कॉण्डु ऍन्नै इनि इप्पाल पट्टदु*
*या तवङ्गलुम् शेर् कॉडेन् एँन्रु ऍन्नुळ् पुहुन्दु इरुन्दु*
*तीदु अवम् कॅडुक्कम् अमुदम् शेम् तामरै-क् कण कुनऱम्*
*कोदु अवम् ऍन् कन्नल कट्टि ऍम्मान् एँन् गोविन्दने।*

भावार्थ

माधव नाम रटते ही,
प्रभु ने मेरी रक्षा करने का संकल्प किया,
वे ही मुझे दोष और कलंक से बचानेवाले हैं,
मेरे प्रभु अरुणकमलनयन पर्वत हैं,
वे इक्षु रसस्वरूप हैं,
वे ही मेरे गोविन्द हैं।
(दोष = बुद्धिरहित अवस्था के पाप
कलंक = बुद्धिपूर्वक पाप
इक्षुरसस्वरूप = इसमें न कोई निस्सार अंश है, न दोष)

(20) *ऑरू नायकम आय् ओड़ उलहु उडन् आण्डवर्*
*करु नाय् कवर्न्द कालर् शिदैहिय पानैयर्*
*पॅरू नाडु काण इम्मैयिले पिच्चै ताम् कॉळ्वर्*
*तिरु नारणन् ताळ् कालम् पॅर-य् चिन्दित्तु उय्म्मिनो।*

भावार्थ

एक युग में अद्वितीय नायक होकर सब पर शासन किया,
वे ही शासन से वंचित होने पर भीख माँगने निकलते हैं तो,

काला कुत्ता उनका पैर काटता है।
हाथ में स्थित मिट्टी का घड़ा नीचे गिरकर टूट जाता है!
इसी जन्म में दण्ड भोगकर स्वयं भीख माँगते फिरते हैं!
ऐश्वर्य अनित्य है, यह जान लो,
विलम्ब किए बिना समय के रहते,
प्रभु श्रीमन् नारायण के चरणों का स्मरण कर उद्धार पाओ।

(21) *एक मूर्त्ति इरु मूर्त्ति मून्रु मूर्ति पल मूर्त्ति*
*आहि ऍन्दु पूदमाय् इरण्डु शुडरु आय् अरु आहि*
*नाहम् एरि नडु-क् कडलुळ् तुयिनऱ नारायणने! उन्*
*आहम् मुररुम् अहत्तु अडक्कि आवि अल्लल् माय्त्तदे।*

**भावार्थ**

एक मूर्ति, द्विमूर्ति, त्रिमूर्ति, अनेक मूर्ति तथा पंचभूत होकर
दो ज्योति तथा सूक्ष्म होकर आदि शेष पर चढ़कर
सागर मध्य पर निद्रित नारायण!
प्रभु तुमने सब रूपों को मेरे हृदय में रखा।
मेरी आत्मा समस्त दुखों से निवृत हो गई।
(एक मूर्ति—सृष्टि के पूर्व की अवस्था, द्विमूर्ति—सृष्टि काल की अवस्था
त्रिमूर्ति—सत्व, राजस, तामस, अहंकार की अवस्था
(अनेक मूर्ति—बृहद अवस्था, पंच भूत—पृथ्वी, जल, तेज, वायु तथा आकाश की अवस्था, दो ज्योति—सूर्य, चन्द्र की अवस्था, सूक्ष्म—सब पदार्थों के अन्तर्यामी होने की अवस्था।)

(22) *पॉलिह पो॑लिह पॉलिह पोयिररु वल् उयिर्-च् चापम्*
*नलियुम् नरकमुम् नैन्द नमनुक्कु इङ्गु यादु ऑन्रुम् इल्लै*
*कलियुम् कॅडुम् कण्डु कॉण्मिन् कडल् वण्णन् पूदङ्गळ् मण् मेल्*
*मलिय-प् पुहुन्दु इश पाड़ि आड़ि उलि तर-क् कण्ड़ोम्।*

**भावार्थ**

(नम्माल़वार गदगद् होकर श्री वैष्णवों का मंगल करते हैं।)

समृद्धि हो! समृद्धि हो! समृद्धि हो!
आत्माओं के सभी कलंक नष्ट हो गए।
दुखप्रद नरक यातना शिथिल हो गई,
यम को यहाँ कुछ काम नहीं, कलि दोष भी नष्ट होगा।

आप ही देख लीजिए;
सागरवर्ण श्रीमन् नारायण् के भक्त श्री वैष्णवजन
इस पृथ्वी में गा-गाकर नाच-नाचकर आनन्दित होते, हम देखते हैं।

(23) *कड़ल् ञालम् शॆय्दनुम् याने ऍन्नुम्*
*कड़ल् ञालम् आवेनुम् याने 'ऍन्नुम्*
*'कड़ल् ञालम् कॉण्डेनेम् याने' ऍन्नुम्*
*'कड़ल् ञालम् कीण्ड़ेनुम् याने ऍन्नुम्*
*'कड़ल ञालम् उण्ड़ेनुम् याने' ऍन्नुम्*
*कड़ल ञालत्तीर्क्कु इवै ऍन शॉलॅलुहेन*
*कड़ल ञालत्तु ईशन् वन्दु एर-क् कॉलो?*
*कड़ल ञालत्तु ऍन् महळ् कऱ्किन्ऱवे?*

**भावार्थ**

(भगवान की प्रीति में आनन्दातिरेक होकर स्वयं भक्त नायिका अवस्था में आ जाते हैं। नायिका की दशा का वर्णन उसकी माँ करती है।)

(मेरी पुत्री) कहती है कि "सागर सहित इस जगत् की सृष्टि करनेवाली मैं ही हूँ।
सागर सहित जगत् का स्वरूप भी मैं ही हूँ।
सब मेरे शरीर हैं और मैं उनकी आत्मा सागर से घिरे हुए
इस जगत को क्षमा कर अपनानेवाली भी मैं ही हूँ (त्रिविक्रम अवतार)
सागर से घिरी हुई पृथ्वी को उठा ले आनेवाली भी मैं ही हूँ (वराह अवतार)
सागर से परिवृत जगत् को विनिष्ट करनेवाली भी मैं ही हूँ।"
मैं तुम लोगों से क्या कहूँ?
मेरी पुत्री का कथन कैसा विलक्षण है?
क्या यह सम्भव है कि प्रभु स्वयं आकर इस पर आविष्ट हुआ है?
(इसी प्रकार का वर्णन विद्यापति ने राधा के विषय में भी कहा है।)

(24) *निन्ऱ् आरुम् इरुन्द आरुम् लिड़न्द आरुम् निनैप्पु अरियन*
*ऑन्ऱु अला उरु आय् अरु आय् निन् मायङ्गळ्*
*निन्ऱु निन्ऱु निनैक्किन्ऱेन उन्ने ऍङ्ङनम् निनैकिऱपन्?*
*पावियेऱ्कु ऑन्ऱू नन्गु उरैयाय् उलहम् उण्ड़ ऑम् शुड़रे।*

**भावार्थ**

·प्रलयकाल के दिव्य-ज्योति!
खड़े होने का ढंग, विराजने का ढंग, सोने का ढंग—

ये तीनों मेरी स्मरण शक्ति से परे हैं।
तुम्हारी अद्भुत चेष्टाएँ अनेक प्रकार की हैं
अप्रमेय हैं, अधिक सूक्ष्म हैं।
बार-बार इन्हें स्मरण करना चाहता हूँ।
परन्तु मैं उन्हें स्मरण करने में असमर्थ हूँ।
मुझ पापी को सुन्दर एवं अद्वितीय उपाय बताओ।
(ताकि मैं दृढ़ रहकर स्मरण कर सकूँ)

**रामावतार में** — धनुर्धारी होकर युद्ध क्षेत्र में खड़े रहना, चित्रकूट में पर्णशाला में आसीन होना, समुद्र किनारे पर उसकी दया के लिए प्रतीक्षा करते हुए सोने की अवस्था में रहना।

**कृष्णावतार में** — रथ में खड़े रहना, बैठे रहना और सोने की अवस्था में रहना।

**अर्चावतार में** — खड़े रहने का ढंग, चित्रकूट में विराजमान होने का ढंग। श्रीरंग में शयन मूर्ति।

(25) *पुण्णियम् पावम् पुणर्च्चि पिरिवु एन्रू इवै आय्*
*ऍण्णम् आय् मऱप्पु आय् उण्मैयाय् इन्मैयाय् अल्लनाय्*
*तिण्ण माड्ङ्गळ शूऴ् तिरु विण्णहर् शेर्न्द पिरान्*
*कण्णन् इन् अरुळ कण्डु केण्मिन्गळ कैतवमे॥*

**भावार्थ**

जो पुण्य और पाप हैं, जो संयोग और वियोग हैं,
जो स्मरण और विस्मरण हैं,
जो सद्गुण और असद्गुण हैं, जो सबसे भिन्न हैं,
जो अट्टालिकाओं से परिवृत तिरुवण्णगर के,
प्रभु कान्ह हैं,
उनकी कृपा का क्या ही महत्त्व है!
क्या यह कैतव है?

(26) *निऴल् वॆॅयिल् शिरुमै पॆॅरुमै कुरुमै नॆॅडुमैयैम् आयम्*
*शुऴलवन निर्पन मर्रुम् आय् अवे अल्लनुम् आय्*
*मऴलै वाय् वण्डु वाऴ् तिरु विण्णहर् मन्नु पिरान्*
*कऴल्कक अन्रि मऱरोर् कळैहण इलम् काण्मिन्गळे॥*

भावार्थ

जो छाया और धूप हैं,
जो अल्प और महान हैं,
जो ह्रस्व और दीर्घ हैं,
जो स्थिर और अस्थिर पदार्थ हैं,
जो भिन्न और अभिन्न हैं,
जो अव्यक्त और भ्रमरों के मधुर गुंजारों से गुंजित,
तिरुवण्णगर में नित्य वास करनेवाले उपकारी हैं,
उनका आश्रय छोड़कर हमें दूसरी कोई गति नहीं,
यह तुम भली-भाँति समझ लो।

(27) *कुरवै आय्च्चियरोडु कोत्तदुम् कुन्ऱम् ऑन्रु एन्दियदुम्*
*उरवु नीर्-प् पॉय्है नाहम् काय्न्ददुम् उट्पड़ मर्ऱुम् पल*
*अरविल् पळळि-प् पिरान् तन् माय विनैहळैये अलऱरि*
*इरवुम् नन् पहलुम् तविर्हिलन् ऍन्न कुऱैवु एनक्के?*

भावार्थ

(श्रीकृष्ण की लीलाओं को देखकर भक्त का गदगद् होना)

गोपियों के साथ रासलीला करना,
गोवर्धन गिरि को धारण करना,
कालिय नाग का मर्दन,
इस प्रकार अनेक अद्‌भुत कार्य
जो सर्पशायी भगवान ने किए हैं,
उन्हें रात-दिन रटते-रटते हम थकते नहीं।
हमें किस बात की कमी है?

(28) *तुवळ् इल् मा मणि माड़म् ओङ्गु तॉलै विल्लि मङगलम् तॉलुम्*
*इवळै नीर् इनि अन्नैमीर्! उमक्कु आशै इल्लै विडुमिनो*
*'दवळ ओण् शङ्गु शक्करम्' एन्ऱुम् तामरै-त् तड़म् कण्' एन्ऱुम्*
*कुवळै ओण् मलर्-क् कण्गळ नीर् मल्ह निन्ऱॅ निन्ऱु कुमुरुमे॥*

भावार्थ

(भक्त, नायिका भाव का अनुभव करता है। प्रियतम के पास जाने के लिए नायिका घर से निकलती है। माता और बन्धु सखी से प्रार्थना करते हैं कि इन्हें समझाकर यहीं पर रखो। तब सखी कहती है)

ऊँचे मणिमय अट्टलिकाओं से परिवृत तोलैविल्लमंगलम् क्षेत्र के
प्रभु की वन्दना करने के लिए, अपने प्रियतम से मिलने के लिए, जानेवाली
नायिका को रोको मत,
माताओं इसे छोड़ दो।
धवल और सुन्दर शंख तथा चक्र दीर्घ कमललोचन का नाम ले रही है।
इनके कुवलय पुष्प सम सुन्दर आँखों में आँसू बह रहे हैं,
यह खड़ी-खड़ी सिसक रही है।
(तोलैविल्लमगलम् सुदूर तिरुनेल्वेली ज़िले में स्थित एक क्षेत्र है। यह ताम्रपर्णी नदी के किनारे पर है नम्माल़वर का जन्म स्थान कुरुहूर के पास है)

(29) *ताळ तामरै-त् तडम् अणि वयल् तिरुस्मोहूर्*
*नाळुम् मेवि नन्गु अमन्दु निऱ्रु अशुररै-तू तहक्कुम्*
*तोळुम् नान्गु उड़ै-च् चुरि कुलल् कमल-क् कण् कनि वाय्-क्*
*काळमेगन्तै अनऱि मऱ्ऱ् ओन्रु इलम् गदिये॥*

भावार्थ

प्रभु मनोहर खेतों से घिरे हुए तिरुमोहूर में आनन्द के साथ विराजमान हैं।
चारों तरफ नालसहित कमल सरोवर परिवृत है,
असुर संहारक चतुर्भुज कुटिलकुन्तल,
कमलनयन बिम्बाधर से युक्त हैं।
उस काले-काले बादल के समान
घनश्याम प्रभु के सिवा,
हमें बचानेवाले कोई नहीं।

(30) *कॅडुम् इड़र् आय ऍल्लाम् केशवा ऍन्र नाळुम्*
*कॉडुविनै शॅय्युम् कूररिन् तमर्हळुम् कुरुह किल्लार्*
*विडम् उड़ै अरविल् पऴि विरुम्बिनान् शुरुम्बु अलऱ्रुम्*
*तडम् उडे वयल् अनन्त-पुर नहर्-प् पुहुदुम् इनऱे॥*

भावार्थ

प्रभु केशव का नाम लेते ही समस्त क्लेश मिट जाते हैं
भयंकर यातनाएँ देनेवाले,
यम के दूत पास तक नहीं आ सकते
विषयुक्त सर्प पर शयन करने के कारण,
वन्दनीय प्रभु अनन्तपुर नगर में हम आज ही,

प्रविष्ट होना चाहते हैं।
यह नगर भ्रमरों के गुंजन से गुंजित तथा जलाशयों और खेतों से सम्पन्न है।

(31) *शार्वे तव नेरिक्कु-त् तामोदरन् ताळ्हळ्*
*कार् मेह वण्णन कमल नयनत्तन्*
*नीर् वानम् मण् ऍरि काल् आय् निनर् नेमियान्*
*पेर् वानवर्हळ पिदर्रुम् पेरुमैयने॥*

भावार्थ

तपो मार्ग के लिए दामोदर के चरण जो नीलमेघ वर्ण हैं,
कमल नयन प्रभु हैं,
जो जल, आकाश, भूमि, अग्नि और वायु के रूप में विद्यमान नेमिधर हैं,
जिनकी महिमा का वर्णन और भजन पूजनीय नित्यसूरिगण करते रहते हैं
वे भगवत्स्वरूप हैं और हमें सब प्रकार से प्राप्य हैं।

(32) *कण्णन् कलल् इणै*
*नण्णुम् मनम् उडैयीर्।*
*ऍण्णुम् तिरु नामम्*
*तिण्णम् नारणमे॥*

भावार्थ

कृष्ण के दोनों चरण प्राप्त करने के इच्छुक सज्जनो!
स्मरण करने के लिए
पवित्र नाम नारायण ही है।
स्मरण करने से उनकी
प्राप्ति निश्चित है।

(33) *शूल विशुम्बु अणि मुहिल् तूरियम् मुलक्किन*
*आल् कडल् अलै तिरै कै ऍडुत्तु आड़िन*
*एळ् पॉलिलुम् वळम् एन्दिय ऍन् अप्पन्*
*वाल पुहल् नारणन् तमरै-क् कण्डु उहन्दे॥*

भावार्थ

प्रभु नारायण ही मेरा स्वामी है
वे ही भूमिदेवी के नाथ हैं।
वे ही कुवलयापीड नामक

हाथी के हन्ता हैं।
वे ही जगत् के कारणकर्ता हैं।

(34) *उण्णुम् शोरु परुहुम् नीर् तिन्नुम् वॅररिलैयुम् ऍल्लाम्*
*कण्णन् ऍम् पॅरुमान् ऍन्नरु ऍन्नरे कणगळ् नीर् मल्हि*
*मण्णिनुळ् अवन् शीर् वळम् मिक्कवन् उर् विनवि*
*तिण्णम् ऍन् इलमान् पुहुम् उर् निरुक्कोळूरे॥*

भावार्थ

(नायिका होश में आने पर अपने प्रियतम से मिलने के लिए घर से निकल जाती है। उसकी यह दशा देखकर माँ रोती है।)

मेरे खाने का भोजन, पीने का पानी, भुगतने का पान,
ये सब मेरे लिए स्वामी कान्हा हैं।
इस प्रकार रटते-रटते, अश्रु बहाते,
मेरी बेटी घर से निकल गई,
इस लोक में श्रेष्ठ और वैभवपूर्ण
अपने प्रियतम के पास,
मेरी बेटी पूछताछ कर उसके पास अवश्य जाएगी,
वही स्थान तिरु-क्-कोळूर् है।

(तिरु-क्-कोळूर नम्मालवार के जन्म-स्थान के पास स्थित क्षेत्र है। यह भक्त कवि मधुर कवि का जन्म-स्थान है।)

(35) *पाय् ओर् अड़ि वैत्तु अदन् कील्-प् परवै निलम् ऍल्लाम्*
*ताय् ओर् अड़ियाल ऍल्ला उलहुम् तड़ वन्द*
*मायोन् उन्नै-क् काण्बान् वरुन्दि ऍनै नाळुम्*
*तीयोडु उडन् शेर् मेॅलुहाय् उलहिल तिरिवेनो?*

भावार्थ

एक चरण आगे बढ़ाकर,
नीचे की सागर परिवृत भूमि को मापकर,
दूसरे चरण से सब लोकों को मापनेवाले मायावी!
तुम्हें देखने की लालसा से, विह्वल होकर
न जाने कितने दिन आग के पास स्थित मोम के सदृश
मैं इस लोक में मारे-मारे फिरता रहूँ।

(आग के पास स्थित मोम, आग के पास रखने पर मोम जलकर भस्म हो जाएगी। दूर

रखें तो स्थिति कठिन रहेगी। उसी प्रकार प्रियतम के दर्शन की लालसा मन को दृढ़ रखती है। उत्कंठा मन को पिघला देती है।)

(36) *कुरुहा नीळा इऱुदि कूड़ा ऍनै उलि*
*शिऱुहा पॅरुहा अळवु इल् इन्बम् शेन्दालुम्*
*मरु काल् इन्रि मायोन् उनक्के आळ् आहुम्*
*शिऱू कालत्तै उऱुमो अन्दो तॅरियिले?*

**भावार्थ**

जिस भगवान के स्वरूप में लघुता और दीर्घता नहीं है,
जो आदि अन्त रहित है,
सभी कालों में जिसकी न क्षय न वृद्धि, जो अपरिच्छिन्न है,
ऐसी आनन्दावस्था में तुम्हारा दास होकर किए जानेवाले
सेवा-सुख के सामने, क्या वह शुद्धात्म सुख टिक सकता है
हम सोच-विचार करके ही कहते हैं
धिक्कार है, यह भी तुम्हें नहीं मालूम।

(37) *कॉण्ड़ पोॅण्डिर् मक्कळ् उऱ्रार् शुऱ्ऱत्तवर् पिऱरुम्*
*कण्ड़दोडु पट्टदु अल्लाल् कादल् मऱ्रु यादुम् इल्लै*
*ऍण् दिशैयुम् कीलुम् मेलुम् मुऱ्रवुम् उण्ड़ पिरान्*
*तोॅण्डरोम् आय् उय्यल् अल्लाल् इल्लै कण्डीर् तुणैये॥*

**भावार्थ**

विवाहिता पत्नी और प्रजा,
बन्धु और बान्धव सब,
हमारे पास के धन से प्रेम करते हैं,
उसके सिवा हमें कोई प्रेम नहीं करता।
अष्ट दिशाएँ, नीचे-ऊपर
सबको विनष्ट करनेवाले
प्रभु का दास बनकर उज्जीवित होना चाहिए
इसके अतिरिक्त दूसरा कोई प्यारा नहीं।

(38) *उरुहुम् आल् नॅञ्जम् उयिरिन् परम् अन्ऱि*
*पॅरुहुम् आल् वेट्कैयुम् ऍन् शॅय्हेन् तोॅण्ड़नेन्?*
*तॅरुवु एल्लाम् कावि कमल तिरु-क् काट्करै*
*मरुविय मायन् तन् मायम् निनैतोॅऱे॥*

**भावार्थ**

जिसकी सब गलियों में, कल्हारों की सुगन्धि बहती हैं,
उस दिव्य तिरु क्-काट्करै क्षेत्र में, निवास करनेवाले मायावी का
जब-जब स्मरण करता हूँ मेरा हृदय पिघल जाता है,
आत्मा की धैर्य शक्ति बाधित होती है,
हाय! चंचल चित्त से मैं क्या करूँ?

(39) *पावियेन् मनत्ते निन्ऱु ईरुम् आल्! ओ!*
*वाड़ै तण् वाड़ै वॅव्-वाड़ै आल्! ओ!*
*मेवु तण् मदियम् वॅम् मदियम् आल! ओ!*
*मैंन् मलर्-प् पळ्ळि वॅम् पळ्ळि आल! ओ!*
*तूवि अम् पुळ् उड़ै-त् तॅय्व वण्डु*
*तुदैन्द एँम् पॅण्मै अम् पू इदु आल्! ओ!*
*आवियिन् बरम् अल्ल वहैकळ् आल्! ओ!*
*यामुड़ै नॅञ्जमुम् तुणै अन्ऱु आल्! ओ!*

**भावार्थ**

(सहस्रों गोप कन्याओं को जो विरह वेदना हुई, वह सब अब नायिका अनुभव करती है।)

पवन मेरे मन में स्थिर होकर पीड़ा देती है, हाय! हाय!
शीतल पवन दाहक पवन हो गया हाय! हाय!
मनपसन्द शीतल चन्द्र दाहक चन्द्र हो गया। हाय! हाय!
कोमल यह पुष्यशय्या दाहक शय्या हो गई। हाय! हाय!
यह सुन्दर पुष्प देव भृंग से उपभुक्त होकर विमर्दित है।
यह महिलाओं का लाड़ला है,
प्रभु का वाहक गरुड़ है
उसके संभोग के प्रकार तो हमारे आत्म के लिए कठिन हैं, हाय! हाय!
आत्मीय हृदयवाली भी मेरा साथी नहीं।

(विरहखंडिता नायिका की विरह वेदना इस में दर्शायी गई है। कृष्ण गाय चराने जाते हैं तो सायं में लौटने में कुछ विलम्ब हो जाता है।)



# मधुर कवि

मधुर कवि आल़वार का जन्म पांड्य देश में कोलूर में हुआ। वे संगीत शास्त्र में निपुण थे इसलिए वे मधुर कवि के नाम से प्रसिद्ध हुए। वे तीर्थाटन में मथुरा, कांची, काशी, अवन्ती, द्वारका आदि के दर्शन कर अन्त में अयोध्या आए। वहाँ अतःप्रेरणा से प्रेरित होकर पुनः दक्षिण आए और नम्मालवार से मिलने गए। नम्मालव़ार तो मूकावस्था में ध्यानमग्न थे। उनके सामने जाकर मधुर कवि ने प्रश्न किया "प्रकृति के अन्दर अति सूक्ष्म जीव जन्म ले तो वह किसे खाकर कहाँ पड़ा रहेगा।" उनको उत्तर मिला "उसे खाकर वहीं पड़ा रहेगा।"

मधुर कवि इस उत्तर से प्रभावित होकर उन्हीं के शिष्य बन गए। वे अपने आचार्य को भगवान से भी बढ़कर मानने लगे।

वे आल़वार आचार्यों की रचनाओं से कई पद राग-रागिनियों में गा-गाकर सुनाते थे।

मधुर कवि की रचना का नाम *कण्णि नुण सिरुत्ताबु* है। इनमें ग्यारह पद्य हैं। पहले दस पदों में अपने आचार्य नम्माल़वार की महिमा का वर्णन है। उन पद्यों का सारांश यह है—मुझे शठकोप का नाम अमृत-सा लगता है। उनके सिवा मुझे कोई अन्य देवता पसन्द नहीं है। वे ही मेरे लिए पुरुषार्थ हैं, माता-पिता, बन्धु हैं। वे ही विषयान्तरों की रुचि को मिटानेवाले एवं भक्ति प्रदान करनेवाले हैं। वे मेरे सब पापों को मिटाकर दया बरसा सकते हैं। वे ही तत्त्व ज्ञान का उपदेश देनेवाले हैं।

कुछ विद्वान मधुर कवि को आल़वार की अपेक्षा आचार्य में रखना ही उचित मानते हैं। मधुर कवि के समय से ही आचार्य की महिमा बढ़ गई। मधुर कवि ने नम्माल़वार को आचार्य का स्थान दिलाकर उन्हें तमिल़ साहित्य का 'सूरज' बना दिया।

(1) *कण्णि नुण् शिरु-त् ताम्बिनाल कट्टुण्ण-प्*
*पण्णिय पॅरु मायन् ऍन् अप्पनिल*
*नण्णि-त् तॅन् कुरुहूर् नम्बि ऍन्र्-क् काल*
*अण्णिक्कुम् अमुदु ऊरुम् ऍन् नावुकळे।*

**भावार्थ**

गाँठोंवाली पतली छोटी रस्सी से अपने को बँधवानेवाले
मायावी प्रभु को छोड़कर सन्त शठकोप की शरण में
हे मन! जाओ, यदि मैं दक्षिणी कुरुहुर के नम्बि कहूँ, तो मधुर लगता है।
मेरी जिह्वा से अमृत बहता है।

(दक्षिण भारत में तिरुनेल्वेली ज़िले में कुरुहुर नाम का एक नगर है। वही सन्त नम्मालवार का जन्म-स्थान है। यह कुरुहूर आजकल आलवार तिरुनगर के नाम से प्रसिद्ध है।)

(2) *नन्मैयाल् मिक्क नान्-मऱै आळरहळ्*
*पुनमैयाह-क् करुदुवर् आदलिल्*
*अन्नैयाय् अत्तनाय् ऍन्नै आण्डिडुम्*
*तन्मैयान् शडगोपन् ऍन् नाम्बिये॥*

**भावार्थ**

चतुर्थ वेद विज्ञ, गुणी लोग मुझे नालायक समझते थे
इसलिए माता होकर पिता होकर शटकोप ही मेरी रक्षा करने आए
वे ही मेरे नम्बि हैं। प्रभु हैं।

(3) *इन्ऱु तोट्टु एलु मॅयुम् ऍम् पिराम्*
*निन्ऱु तन् पुहल् एत्त अरुळिनान्*
*कुन्ऱ माड-त् तिरु-क् कुरुहूर् नम्बि*
*ऍन्ऱुम् ऍन्नै इहलविलन् काण्मिने।*

**भावार्थ**

आज से लेकर सात जन्मों तक खड़े रहकर
अपनी यश स्तुति करने देने की मुझ पर कृपा की है।
देखो पर्वत सम प्रासादवाले तिरुक्कुरुहूर के
नम्बि कभी मेरी उपेक्षा नहीं करते।

(4) *अरुळ् कॊण्डाडुम् अड़ियवर् इन्पु उऱ्*
*अरुळिनान् अव्-अरु-मरैयिन् पॊरुळ्*
*अरुळ् कॊण्डु आयिरम् इन् तमिल् पाडिनान्*
*अरुळ् कण्डीर् इव् उलहिनिल् मिक्कदे।*

**भावार्थ**

भगवान की कृपा का अभिनन्दन करनेवाले दास
जिससे प्रसन्न हों,
जिन्होंने उत्तम वेदार्थ प्रदान करनेवाले सहस्र
मधुर तमिऴ् पदों का कृपा कर गान किया
उन शठकोप की महान कृपा को देखो,
वह इस लोक में श्रेष्ठ हैं।

(5) *पयन् अऩ्ऱु आहिलुम् पाङ्गु अलर् आहिलुम्*
*शेयल् नन्ऱाह-त् तिरुत्ति-प् पणि कॊळ्वान्*
*कुयिल् निन्ऱु आर् पॊऴिल् शूऴ् कुरहूर, नम्बी।*
*मुयल् हिन्रेन् अवन मॊय्-कऴऱ्कु अन्बैचे।*

**भावार्थ**

दूसरों को सुधारने पर स्वयं को कोई फल न प्राप्त होने पर भी लोगों के सुधरने के अनुकूल न होने पर भी, अपने कार्यों से उन्हें सम्यक् सुधार कर दास बनानेवाले कोकिल गान से शाश्वत युक्त उपवन से घिरे कुरूहूर में विराजमान नम्बि! तुम्हारे महिमामंडित चरणों के प्रेम का प्रयत्न करता रहता हूँ।



# कुलशेखराल़वार

## (कुलशेखर)

**साहित्य : पे॑रुमाल तिरुमो॑लि़-105—पद्**

कुलशेखर आल़वार चेर देश (मलबार) के राजा थे। वे अपने को क्षत्रिय और कोल्लि राजधानी के अधिपति मानते हैं। गुरु परम्परा के अनुसार वे प्रभु के कौस्तुभ के अंश माने जाते हैं। वे बड़े ज्ञानी और परम रामभक्त हैं। इनकी भाव-प्रकृति पर अनेक दन्तकथाएँ प्रसिद्ध हैं।

यह प्रसिद्ध है कि एक दिन रामायण-कथा प्रवचन में खरदूषण राक्षसों का प्रसंग आया। कथावाचक कहने लगे कि एक तरफ़ चौदह हज़ार राक्षस हैं, जो कपट युद्ध को छोड़कर और कुछ नहीं जानते तो दूसरी ओर प्रभु श्रीराम अकेले हैं। कैसे धर्म युद्ध करें। यह सुनते ही कुलशेखर भावावेश में आ गए और प्रभु राम की सहायता के लिए सेना लेकर चल पड़े और चिल्लाने लगे कि मैं एक क्षण में सब राक्षसों को मार डालूँगा। एक बार रामनवमी के दिन मन्त्रियों ने राजा से जाकर शिकायत की कि आपके भक्तों में से किसी ने पूजा गृह के एक पात्र को चुरा लिया। भक्तों के ऊपर इस कलंक को कैसे वे सहन कर सकते थे? अपने भक्तों की सच्चरित्रता को निरूपित करने के लिए भरे दरबार में एक भयंकर कृष्ण-सर्प को एक घड़े में ढककर रख दिया और आदेश दिया कि घड़े के ढक्कन को खोल दिया जाए और दरबारियों को देखकर कहा यदि मेरे भक्त दोषी हैं तो यह सर्प मुझे काटे। कृष्ण सर्प ने कुछ नहीं किया और भक्त निर्दोष निरूपित हुए। उसके बाद अपने बेटे को सिंहासन पर बिठाकर वे भक्तों के साथ रंगनाथ के दर्शन के लिए निकल पड़े। वहीं बहुत दिन तक रहे। तिरुप्पति आदि दिव्य क्षेत्रों के दर्शन कर अन्त में मन्नारगुडी (तंजाऊर के पास) आकर प्रभु की सेवा करते करते संसार से चल बसे।

वे 67 वर्ष तक जीवित रहे। प्रसिद्ध विद्वान भंडारकर कुलशेखर का काल बारहवीं शताब्दी मानते हैं। सभी विद्वानों ने इस मत का खंडन किया है। कुलशेखर अपने को कॉल्लि के अधिपति मानते हैं। 900 ई. के बाद राजाओं का शासन समाप्त हो गया। अतः पल्लव राजा नरसिंह वर्म के काल के पूर्व अर्थात् आठवीं शताब्दी में ही इस आल़वार का समय माना जा सकता है।

आल़्वार कुलशेखर के दो प्रधान ग्रन्थ हैं। एक *मुकुन्दमाला* संस्कृत में है। दूसरा *पे॑रुमाळ तिरुमो॑ऴि* तमिल़ में है। दोनों ही अधिक सरल और चलती भाषा में हैं। *मुकुन्द माला* में 45 श्लोक हैं और *पे॑रुमाळि तिरुमो॑ऴि* में 105 पद हैं। वे प्रभु से मिलने की तीव्र अभिलाषा प्रकट करते हुए करते हैं–

"निरन्तर भगवदनुभव करने पर भी अतृप्त मनवाला मैं भक्तों के सत्संग में मिलकर, भगवान के यशोगान करते हुए उससे तृप्त न होकर आँखों से अविरल अश्रुप्रवाह बहाते हुए भगवान की स्तुति कर समुद्र घोष के सदृश नित्य वाद्य घोष से व्याप्त श्रीरंग दिव्य धाम के शेषशायी श्री रंगनाथ के दर्शन कर, आनन्दातिरेक में नाचते हुए मैं भूमि पर लोट जाऊँगा।"[1]

आल़्वार की मान्यता है भागवतों की गोष्ठी के दर्शन से ही आँखें धन्य होती हैं। उनकी पद-धूलि के सेवन मात्र से गंगा-स्नान का फल मिलता है। वे कहते हैं "मेरी एक ही इच्छा है कि प्रभु के सुन्दर पर्वत पर सुशोभित होने के लिए पुष्प फल से सुसज्जित एक वृक्ष बन जाऊँ।"[2]

"उर्वशी, मेनका आदि अप्सराओं के गान, नर्तन आदि भोग नहीं चाहता किन्तु भ्रमरों से गुंजित वेंकटाचल पर एक पत्थर बनने का सौभाग्य पा सकूँ।"[3]

आल़्वार स्वयं कृष्ण की बाल-लीलाओं से वंचित देवकी बनकर माता के दुख का हृदयविदारक वर्णन करते हैं। आठवें दशक में कौसल्या के शब्दों में बालक राम को हिंडोले में सुलाने का वर्णन है।

"हे कृष्ण! तुमने अपने सुन्दर माथे को हिलाते हुए, दिए जानेवाले चुम्बन को लेने तुम्हारी मनोहर कान्ति को देखकर आनन्दित होने, अपनी नन्हीं उँगलियों को छोटे मुँह में रखकर गुस्से में आकर तोतले शब्दों में जो कहा, उसे सुनने के भाग्य से सर्वथा मैं वंचित रह गई।"[4]

"यशोदा को यह सब भाग्य प्राप्त हुआ।"

नवें दशक में दशरथ का प्रलाप और दसवें दशक में रामायण-कथा का संक्षिप्त वर्णन है।

## पे॑रुमाळ तिरुमो॑लि

(1) *इरुऴ्-इरिय-च-चुडऱ्-मणिहऴ् इमैक्कुम् ने॑ऱ्रि*
*इनत्तुत्ति-अणि-पणम् आयिरङ्गऴ् आरन्द,*

---

1. पे॑रुमाळ तिरुमो॑लि–1-9
2. वही, 4-5
3. वही; 4-6
4. पे॑रुमाळ तिरुमो॑ऴि–7-5

*अरवरश-प्-पॅरुञ्-चोदि अनन्तन् ऍन्नुम्*
*अणिविळङ्गुम् उयर् वॅळ्है अणैयै मेवि,*
*तिरुवरङ्कम् पॅरु नकरुळ् तॅण्णीर्प् पोन्नि*
*तिरै-क् कैयाल अडि वरूड़-प्-पळ्ळि कॉळ्ळुम्*
*करुमणियै-क्-कोमळतै-क्-कण्डु कॉडुऍन्*
*कण-इणै हळ् ऍन्रु को`लो कळिक्कुम् नाळे।*

भावार्थ

## प्रभु की श्री सूक्ति

जिस प्रभु के ललाट की मणियों की प्रभा से अन्धकार विनष्ट हो जाता है, जो चिह्नों से युक्त सहस्र फणवाले सर्पों का राजा तथा तेजोमय सौन्दर्य से उद्‌भासित उन्नत और धवल शय्या पर सुशोभित हैं जो श्रीरंग महानगर में शयन करते हैं, जिनके चरणों को तरंग-युक्त पोन्नि नदी जल की तरंगें सहलाती हैं उन नीलमणि को, कोमल रूपवाले भगवान को देखकर, मेरे दोनों नेत्र आनन्दित होने का दिन कब आएगा।

(2) *मऱम् तिहलुम् मनम् ऑऴित्तु वञ्चम्-माऱ्ऱि वन् पुलन्गळ् अडक्कि*
*इडर् पार-त् तुन्पम*
*तुऱन्दु इरु मुप्-पोलुदु एत्ति ऍल्लै-यिल्ला-त् तॉल्-नॅरि-क्कण् निलै*
*निन्ऱ तॉण्डरान*
*अऱम् तिहलुम् मनत्तवर्-तम् गतियै-पॉन्नि अणि-अरङ्गत्तु*
*अरवणैयिल् पळ्ळि कॉळ्ळुम्*
*निऱम् तिहलुम् मायोनै-क्-कण्डु ऍन् कण्गळ् नीर् मलग ऍन्ऱू*
*कॉलो इरुक्कु नाळे।*

भावार्थ

अधर्म भावना मेरे मन को विनष्ट कर, छल कपट को त्याग कर, पंचेन्द्रियों को वश में कर पाप कर्मों से निवृत्त होकर पाँचों समय प्रभु की स्तुति कर धर्म मार्ग में दृढ़ स्थित भक्त जनों की पोन्नि नदी से अलंकृत श्रीरंग में सर्प शय्या पर शयन करनेवाले मायवी प्रभु को देखने का दिन कब आएगा?

आनन्दाश्रु बहाने का दिन कब आएगा?

(3) *एरू अडर्त्तदुम् एनमाय् निलम् कीण्डदुम् मुन् मुन् इरामनाय्*
*मारू अडर्त्तदुम् मण् अळन्दतुम् शॉल्लि-प् पाडि वण् पॉन्नि-प् पेर्*
*आरु पोल् वरुम् कण्ण नीर् को ॅण्डु अरङ्गन् कोयिल तिरु मुररम्*
*शेरू शॅय् तॉण्डर शेवड़ि-च् चॅलुम् शेरू ऍन् शॅन्निक्कु अणिवने।*

**भावार्थ**

नाप्पिन्नै को प्राप्त करने के लिए सात वृषभों का दमन करना,
वराहावतार लेकर भूमि को उठाना,
रामावतार में रावण का संहार करना,
वामनावतार में भूमि को मापना
इन लीलाओं के गुण गान करते हुए पोन्नी (कावेरी) नदी की तरह
अश्रु बहाकर श्रीरंग मन्दिर के आँगन को
पंकिल रखनेवाले दासों के साथ जाकर प्रभु के पाद-पंकज को
भूषण की तरह शिरोधार्य करूँगा।

(4) *पो ॅय शिलै-क् कुरल् एररु ऍरुरूतुम इरूत्तु-प् पोर् अरव ईर्त्त कोन्*
*शॅय्-शिलै-च् चुडर शूल़-ऑळि-तू तिण्ण मा मदिळ् तॅन् अरङ्गनाम्*
*मॅय् शिलै करु मेहम् ऑन्रू तम् नें ॅञ्जिल् निनरु तिहल़-प् पोय्*
*मॅय शिलिर्प्पवर् तम्मैये निनैन्दु ऍन् मनम् मॅय शिलिर्क्कुमे।*

**भावार्थ**

छल, कपट एवं क्रोधी वृषभ के ककुत को
भयंकर आक्रामक कालिय नाग को,
तोड़, दमन करनेवाले प्रभु!
पत्थरों के प्राकार से घिरे श्रीरंग के नाथ,
श्यामवर्ण स्वरूपी, धनुपधारी, ज्योतिर्मय हैं।
उस दिव्य रूप से जो आनन्दित होते हैं,
उन्हीं का ध्यान कर मेरा मन पुलकायमान हो उठता है।

(5) *एम् परत्तर् अल्लारोडुम् कूडलन्*
*उम्बर् वाल़वै ऑन्राह-क् करुदिलन्*
*तमुपिरान् अमरर्क्कु अरङ्ग नगर*
*ऍम् पिरानुक्कु ऍलुमैयुम् पित्तने।*

**भावार्थ**

जो अपने जैसे प्रभु से प्रेम नहीं करते,
उनकी संगति मैं नहीं चाहूँगा।
देवों के जीवन को भी मैं तुच्छ समझता हूँ
देवों के स्वामी, श्रीरंगपुरी के प्रभु का,
सात जन्मों में मैं बावला रहूँगा।

(6) *ऊनेरू शॅलवत्तु उडल्-पिऱवि यान् वेण्ड़ेन*
*आन् एऱू एल् वॅनरान् अड़िमै-त्तिरम् अल्लाल्*
*कून्-एऱु शङ्गम् इडत्तान् तन् वेङ्गडत्तु*
*कोन्-एरि वालुम् कुरुहाय-प्-पिऱप्पेने!*

**भावार्थ**

मांस भरे इस शरीर में पुनः जन्म लेना नहीं चाहता
सात वृषभों को जीतनेवाले प्रभु का दास बनना चाहता हूँ।
वामहस्त में शंख, चक्राधारी प्रभु!
वेंकट पर्वत के पुष्करिणी में रहनेवाला बक बनकर जन्म लेना चाहता हूँ।

(7) *तरु तुयरम् तडायेल् उन् शरण् अल्लाल् शरण् इल्लै*
*विरैकुलुवुम् मलर्-प् पोलि़ल शूल़ वित्तुवक्कोट्टु अम्माने।*
*अरि शिनत्ताळ् ईन्ऱ ताय् अहऱरिड़िनुम् मऱरु अवळ तन्*
*अरुळ् निनैन्दे अलुम कुल़वि अदुवे पोन्ऱु इरुन्देने।*

**भावार्थ**

हे प्रभु, तुमने जो दुख दिए, उसको यदि तुम नहीं मिटाते तो
तुम्हारी शरण के अतिरिक्त, मैं किसकी शरण में जाऊँ,
सुगन्ध पुष्पों से आवृत वित्तुवक्कोडु के क्षेत्र के स्वामी!
जन्म देनेवाली माँ गुस्से में आकर शिशु को परे हटाने पर भी
वह शिशु फिर माँ के पास ही जाता है।
उसी प्रकार माँ की दया का स्मरण करके शिशु के समान
मैं तुम्हारा कृपाकांक्षी हूँ।

(8) *वाळाल् अऱुत्-च चुडिनुम् मरुत्तुवन पाल्*
*माळाद कादल् नोयाळ्न पोल् मायत्ताल्*
*मीळा-त् तुयर् तरिनुम् वित्तुवक्कोट्टु अम्मा! नी*
*आळा उनदु अरुळे पार्प्पन् अड़ियेने।*

भावार्थ

चीरफाड़ करके शरीर को कष्ट देनेवाले
चिकित्सक के प्रति अटल प्रीति रखनेवाले रोगी की तरह
माया से अत्यधिक दुख देने पर भी
फिर बार-बार तुम्हारी सेवा के लिए तुम्हारी कृपा की प्रतीक्षा करता रहूँ।

(9) *आलै नीळ् करुम्बु अन्नवन् तालो!*
*अम्बुय-त् तडङ कण्णिनन् तालो!*
*वेलै नीर् निरत्तु अन्नवन् तालो!*
*वेऴ-प् पोदहम् अन्नवन् तालो।*
*एल वार् कुऴल ऍन् महन् तालो।*
*ऍनरु ऍन्रु उननै ऍन् वायिड़ै निऱैय त्।*
*ताऌ ऑलित्तडुम् तिरुविनै इल्ला-त् तायरिऌ कड़ैयायिन् ताये।*

भावार्थ

(कृष्ण के पुनर्दर्शन के लिए लोरी के रूप में देवकी का विलाप)

यन्त्र में पिसने योग्य लम्बे-लम्बे गन्ने जैसे
मेरे प्रभु! ता ले लो (सो जाओ)
पंकजनयन प्रभु! ता ले लो।
सागर जल के सदृश वर्णवाले मेरे प्रभु! ता ले लो
हाथी के समान सुन्दर मेरे प्रभु! ता ले लो।
सुगन्धित लम्बे कुन्तलवाले मेरे पुत्र! ता ले लो।

(10) *मन्नु पुहऴ-क् कौशलै तन् मणि वयिरू वाय्त्तवने।*
*तेन्निलङ्गै क् कोन् मुडिहळ् शिन्दुवित्ताय शॅम् पॉन् शेर्*
*कन्नि नन् मा मदिळ् पुड़ै शूल कणपुरत्तु ऍन् करुमणिये।*
*ऍन्नुडैय इन्नमुदे! इरागवने! तालेलो!*

भावार्थ

नित्य ख्यातिवाली कौसल्या के मणि उदर में रहनेवाले मेरे प्रभु!
दक्षिणी लंका के अधिपति को विनष्ट करनेवाले मेरे प्रभु!
उत्तम स्वर्ण से निर्मित नित्य उत्तम
ऊँचे-ऊँचे प्राकारों से आवृत

कणपुर के मेरे नीलमणि प्रभु!
मेरे मधुर अमृत प्रभु!
राघव! ता ले लो!
(ताल शब्द का अर्थ है जीभ! बच्चे को सुलाने के लिए माँ जीभ हिला-हिलाकर गाती है। यह गान ही तमिऴ् लोक गीत में ता ले लो-तालाट्टु (लोरी) कहलाता है।)

(11) *शुऱ्ऱम् ऍल्लाम् पिन् तॉडर-त् तॉल् कानम् अडैन्दवने!*
*अऱ्ऱवर्हटकु अरुमरुन्दे। अयोत्ति नगर्क्कु अदिपतिये!*
*कऱ्ऱवरहळ् ताम् वालुम् कणपुरत्त एन् करु मणिये!*
*शिऱवै तन् शोल् कोण्ड शीराम! ता ले लो!*

**भावार्थ**

बन्धु-बांधवों के साथ वन प्रदेश में पहुँचनेवाले मेरे प्रभु!
वियोग में तड़पनेवाले लोगों के लिए अमूल्य भेषज!
शिक्षित निवासियों के कनपुर के मेरे नीलमणि प्रभु!
छोटी माता के वचन का आदर करनेवाले
मेरे श्रीराम! ता ले लो!

(12) *वन् ताळिन् इणै वणङ्गि वळ नगरम् तोलुदु एत्त मन्नन् आवान्*
*निऱ्ऱायै अरि अणै मेल् इरुदायै नॅडुङ् कानम् पडर-प् पोहु*
*ऍनराळ् ऍम्-इरामा! ओ! उनै-प् पयन्द कैकेशि तन् शॉल् केट्टु*
*नन्राह नानिलतै आळ्वित्तेन् नन् महने! उन्नै नाने।*

**भावार्थ**

(दशरथ का विलाप)

समृद्धि से भरपूर नगर के निवासी पूजा कर
तुम्हारी स्तुति करनेवाले थे।
तुम्हारे मंगलचरणों की वन्दना कर तुम राजा बननेवाले थे!
सिंहासन पर विराजित तुम्हें देखकर कैकेयी बोली—चौदह वर्ष कानन जाओ,
मेरे बेटे राम!
कैकेयी का वचन सुनकर
मैंने तुम्हें चतुर्वेद भूमि का कितना अच्छा शासक बनवाया!
अरे! मेरे लाडले बेटे, मैंने यह क्या कर दिया?

(13) *अङ! कणेडु मदिळ् पुडै शूल् अयोत्ति ऍन्नुम् अणि नगरत्तु उलहु अनैतुम् विळक्कुम् शोदि*
*वॅङ्कदिरोन् कुलत्तुक्कु और विळक्काय् त् तोन्रि विण् मुलदुम् उय्य-क् कॉडु वीरन् तन्नै*
*चॅङ्कण् नॅडुङ करु मुकिलॅ डरामन् तन्नॅत् तिल्लै नगरत् तिरुच्चित्र कूडन्तन्नुळ*
*ऍङ्कळ् तनि मुदल्वनै ऍम् पॅरुमान् तन्नै ऍन्रु कॉलो कण् कुळिरक् काणुम् नाळे*

भावार्थ

सुन्दर बड़े-बड़े प्राकारों से आवृत अयोध्या के,
समस्त लोक के ज्योतिस्वरूप
देवों के दुख दूर कर उनको जीवन देनेवाले
सारे स्वर्ग के कृपा प्रधान करनेवाले वीर को
अरुणलोचन जलद सम श्रीराम को
चित्रकूट के प्रभु को
मेरे अद्वितीय आराध्य देव के
दर्शन का दिन कब आएगा?
इस तिल्लै नगर चित्रकूट में
प्रभु के दर्शन कर इन नेत्रों के
आनन्दित होने का दिन कब आएगा।

(14) *तॉत्तु अलर् पूञ्चु चूरि कुलल् कैकेशि शॉल्लाल्*
*तॉल् नगरम् तुरन्दु तुरैक् गंगैतन्नैप्*
*पत्ति उड़ैक् गुहन् कडत्त वनम् पोय्प् पुक्कु*
*बरदनुक्कुप् पादुकमुम् अरसुम् ईन्दु*
*चित्तिरकूडत्तु इरुन्दान् तन्नै इन्रु*
*तिल्ल् नगरत् तिरुच्-चित्तिरकूडत् तन्नुळ्*
*ऍत्तनैयुम् कण्कुळिरप् काणप् पॅऱ्र*
*इरुनिलत्तार्क्कु इमैयवर् नेर् ओव्वार् तामे॥*

भावार्थ

सुन्दर पुष्पों से अलंकृत, कुटिल कुन्तलवाली कैकेयी के वचन सुनकर,
प्राचीन नगरी अयोध्या को तजकर घाटवाले गंगा को

भक्ति भाव भरा गुह के द्वारा, गंगा पार कराने पर
वन में पहुँचकर भरत को पादुका देकर सम्पूर्ण राज्य देकर
प्रसन्न करानेवाले चित्रकूट में सुशोभित प्रभु को
आज तिल्लै नगर चित्रकूट के भीतर
दर्शन करने के दिन कब आएगा?
इस प्रकार दर्शन करनेवाले
लोकवासियों के सदृश देवगण भी नहीं होंगे।

(15) *चॆऱि तवच् चम्बुकन! तन्नैच् चॆन्ऱु कॉन्ऱु*
*चॆलु मऱैयोन् उयिर् मीट्टु तवत्तोन् ईन्द*
*निऱै मणिप् पूण् अणियुम् कॉण्डु इळवणन् तन्नैत्*
*तम्बियाल् वान् एऱ्ऱि मुनिवन् वेण्डत्*
*तिऱल् विळङ्गुम् इलक्कुमनैप् पिरिन्दान् तन्नैत्*
*तिल्लै नगरत् तिरुचित्तिरकूडन् तन्नुळ्*
*उऱैवानै मऱवाद उळ्ळन् तन्नै*
*उडैयोम् मऱरु उऱुतुयरम् अडैयोम् अन्ऱे।*

**भावार्थ**

तुम उग्र तपस्वी शम्बूक का वधकर,
उत्तम वेदविज्ञों के पुत्र को बचाकर,
तपस्वी अगस्त्य के दिए हुए मणिहार को पहनकर,
लवणासुर को अनुज के द्वारा स्वर्ग चढ़वाकर,
दुर्वासा मुनि की इच्छानुसार,
तेजस्वी लक्ष्मण से वियुक्त होनेवाले को
इस तिल्लै नगर चित्रकूट में रहनेवाले को हम कभी नहीं भूलते
हम प्रभु के प्रति दृढ़ आसक्त चित्तवाले हैं
इस दर्शन के बाद आनेवाले भक्त किसी दुख को प्राप्त नहीं करेंगे।

(16) *एर् मलर्-पू पूङ् कुऴल् आयर् मादर*
*ऐनै-प् पलर् उळ्ळ इव्-वूरिऴ् उन् तन्*
*माऱ्बु तलुवुतऱ्कु आशै इन्मै*
*अऱिन्दु अऱिन्दे उन् तन् पोय्यै-क् केट्टु*
*कूर् मऴै पोल् पनि-क् कूदऴ् ऐय्दि-क्*
*कूशि नडुङ्गि यमुनै आऱ्ऱिल्*

*वार् मणर् कुन्ऱिल् पुलर् निन्ऱेन्*
*वाशुदेवा! उन् वरवु पार्त्ते।*

भावार्थ

सुन्दर पुष्पों से विभूषित, मेरी जैसी–
मनोहर केशवाली बालाएँ,
इस ग्राम में अनेक हैं।
तुम्हारे हृदय से लगने की निराशा लेकर भी,
तुम्हारे असत्य वचनों को सुनकर,
मै वर्षा के समान, बर्फ़ीली ठंडक से ग्रस्त
सिकुड़ी, ठिठुरती हुई, यमुना नदी के रेतीले टीले पर,
प्रातःकाल तक खड़ी रही।
तुम्हारी प्रतीक्षा में रत रही।

(17) *ऍन्नै वरुह ऍन्-क् कुऱित्तिट्टु*
*इन् मलर् मुल्लैयिन् पन्दर् नीऴल्*
*मन्नियवळै-प् पुणर्-प् पुक्कु*
*मर्ररु ऍन्नै-क् कण्डु उऴरा नॆहिऴन्दाय्*
*पोन् आनिऱ आडैयै-क् कैयिल् ताङ्गि-प्*
*पोॅय् अच्चम् काट्टि नी पोदियेलुम्*
*इन्नम् ऍन् कैयहत्तु ईङ्गु ओरुनाळ्*
*वरुदियेल् ऐन् शिनम् तीर्वन नाने।*

भावार्थ

मुझे बुलाने का संकेत कर,
जूही लतामंडप में संभोग आरम्भ कर दिया,
अब मुझे देख हक्के-बक्के हो खिसक गए।
स्वर्णवर्णी रेशमी वस्त्र हाथ मे ले,
मुझे भयभीत कर,
यद्यपि तुम निकल गए,
मेरे पास जिस दिन पुनः आओगे,
तब मैं अपना क्रोध उतारूँगी।

(18) *कोॅल्लणै वेल् वरि नेड्ङ कण् कोशलै तन्*
*कुल मदलाय! कुनि विल् एन्दुम्*

*मल्लणैन्द वरै-त् तोळा! वल् विनैयेन्*
*मनम् उरुक्कुम् वहैये कऱ्ऱाय्*
*मॆल्लणै मेल् मुन् तुयिन्ऱराय् इन्नु इनि-प् पोय्*
*वियन् कान मरत्तिन् नीऴल्*
*कल्लणै मेल् तुयिल्-क् कऱ्ऱनैयो।*
*काकुत्ता। करिय कोवे।*

**भावार्थ**

हृदय को भेदने में लगे हुए, लाल डोरों से पूरित
तीक्ष्ण नयनोंवाले कौसल्या के कुल-शिशु।
नत-धनुषधारी, मल्लों से युद्ध रत, पर्वत सम भुजावाले।
मुझ अति पापी का मन भटकाने का मार्ग ही सीखा है।
तुम तो कोमल शय्या पर सोते थे,
पर अब सघन वन में वृक्षों की छाया में प्रस्तर शय्या पर
तुमने सोना सीख लिया है?
काकुत्स्थ। श्यामल वर्ण प्रभु!

(19) *मुन्नोरुनाळ् मलुवाळि शिलै वाङ्गि*
*अवन् तवत्तै मुऱ्ऱुम् शॆऱ्ऱाय्*
*उन्नैयुम् उन् अरुमैयेयुम् उन् मोयिन्*
*वरुत्तमुम् ओन्ऱाह-क् कोळ्ळादु*
*ऍन्नैयुम् ऍन् मॆय्युरैयुम् मॆय्याह-क् कॊण्डु*
*वनम् पुक्क ऍन्दाय्।*
*निन्नैये महनाह-प् पॆऱ-प् पॆऱुवेन्।*
*एऴ् पिऱप्पुम् नेडुन्तोळ् वेन्दे।*

**भावार्थ**

प्राचीन काल परशुधारी परशुराम के हाथों से धनुष लेकर,
तुमने उनकी सारी तपस्या विनष्ट कर दी,
अपने आपको, अपने उत्कर्ष को, अपनी माँ के दुःख को नहीं समझा,
मुझे और मेरे वचन को ही सत्य माना, और वन गए,
ऐसे मेरे प्रभु! तुमको ही पुत्र रूप में प्राप्त कर,
सात जन्मों तक भाग्यवान होऊँ,
आजानुबाहु नरपति!



# पे`रियाल़वार

## (विष्णुचित्त)

**साहित्य :** पे`रियाल़वार तिरुमोलि–473–पद

पे`रियाल़वार का जन्म दक्षिण के 'श्रीविल्लीपुत्तर' (श्रीधन्वीपुर) नामक नगर में ब्राह्मण के वेयरकुल में हुआ था।[1] पे`रियाल़वार की जन्म-तिथि के सम्बन्ध में अनेक मत प्रचलित हैं। गोपीनाथ राव उनका जन्म नवीं शताब्दी के प्रारम्भ मानते हैं। मु. राघवय्यंगार ने पे`रियाल़वार का जन्म 690 ईस्वी माना है।[2] श्री. अय्यंगार ने एक शिला-लेख में उल्लिखित राजा तृतीय मारवर्म को पे`रियाल़वार का समकालीन माना है। लेकिन गोपीनाथ राव ने इसका खंडन किया। वे मानते हैं कि आचार्य नाथमुनि इन्हीं के काल में रहे। पर अधिकतर विद्वान गोपीनाथ राव के मत से सहमत नहीं।[3]

वेदाध्ययन करने के उपरान्त विष्णुचित्त भगवत् कैंकर्य में रहे। विष्णुचित्त ने अपने घर में ही सुन्दर फुलवारी लगाई और प्रतिदिन भगवान श्री रंगनाथ वटपत्रशायी को एक पुष्पमाला समर्पित करते थे।[4]

पे`रियाल़वार के बारे में यह कथा अधिक प्रसिद्ध है कि पांड्यवंश के वल्लभदेव के दरबार में 'परतत्त्व' पर शास्त्रार्थ करके अन्य धर्मावलंबियों को पराजित कर स्वर्ण शुक को पुरस्कार में प्राप्त किया। उन्होंने इस सिद्धान्त को स्थापित किया कि 'श्रीमन्नारायण' ही परतत्त्व है। वही मोक्ष देनेवाला है और उसका अनुभव तथा सेवा ही परम पुरुषार्थ कहा जाता है। शास्त्रार्थ में विजय के उपलक्ष्य में उनके सम्मानार्थ राजा वल्लभ देव ने एक विराट जुलूस का आयोजन किया। परिक्रमा के समय आकाश में श्रीमन्नारायण के लक्ष्मी गरुड़ सहित दर्शन कर आनन्दातिरेक में भगवान की रक्षा हेतु 'जुग, जुग जिए'–पल्लाण्डु, पल्लाण्डु–का रक्षा-स्तोत्र के द्वारा स्तुति करने लगे।

प्रभु की मनोहर दिव्य कान्ति को देखकर विष्णुचित्त भयभीत हो गए कि कहीं इस पापी संसार में मनुष्यों के बीच आने पर उसे कोई हानि न पहुँचे। उन्होंने

---

1. *पे`रियाल़वार तिरुमोलि़*–5/4/11 9/8/11
2. *आल़वारकळ कालनिलै*–मु. राघवय्यंगार, पृष्ठ 66
3. *हिस्ट्री ऑफ श्री वैष्णवाज़*–गोपीनाथ राव, पृष्ठ 23
4. *तिरुपल्लाण्डु पे`रियाल़वार,* पद 8-9

उत्कंठित होकर प्रभु की रक्षा हेतु 'तिरुप्पल्लाण्डु' का गायन किया अतः वे पे`रियाल़वार अर्थात् 'उत्तम आल़वार' कहलाए। अधिक प्रेम में भय की आशंका होना स्वाभाविक है। वास्तव में यह भावना उत्कर्ष की चरमसीमा को सूचित करती है। इस तिरुप्पलाण्डु के बारह पदों को श्रीवैष्णव प्रतिदिन पूजा के समय श्रद्धा-भक्ति के साथ गाते हैं। विष्णुचित्त को भट्टनाथ के नाम से भी पुकारते हैं। प्रभु की लीलाओं में वे कृष्णावतार पर अधिक आकृष्ट हुए। कृष्ण की बाल लीलाओं से मोहित होकर अपने अनुभव को 'पे`रियालवार तिरुमोलि़' (विष्णु चित्र की श्री सूक्ति) में प्रकट किया है। तमिल़ में 96 तरह के गीत विधान हैं। इनमें बालकों की क्रीड़ा से सम्बन्धित वात्सल्य पदों को 'पिळ्ळैत् तमिल़' कहते हैं। इसमें अपने आराध्य देव बालक कृष्ण का सुन्दर वर्णन है। कृष्ण का जन्मोत्सव, पालने में सुलाना, लोरी, चन्दामामा दिखाना, कृष्ण का नाचना, ताली पीटना, यशोदा की पीठ पर बालक का आरूढ़ होना, दूध पीना, घुटनों के बल पर चलना आदि बचपन की क्रीड़ाएँ; दही, माखन चोरी, बछड़ों को खोल देना, दही का मटका लुढ़का देना, गाय बछड़े चराना, रास नृत्य, बंसी बजाना, गोवर्धन उठाना आदि क्रीड़ाओं का भी सजीव वर्णन पे`रियाल़वार ने चित्रित किया है। यदि पे`रियाल़वार को वात्सल्य के रसराज कहें तो वह अत्युक्ति नहीं है।

बाल वर्णन के अतिरिक्त इनके पदों में हिरण्यासुर वध, कालियदमन, पूतना का संहार, यमलार्जुन वृक्ष को तोड़ना, सात बैलों को वश में कर नप्पिन्नै से विवाह करना, धेनुकासुरों का संहार, दशावतार, पार्थ सारथी बनना, रावण संहार, तिरुविक्रमावतार, पांडवों का दूत बनना, कुब्जा का उद्धार, कंस का वध, गजेन्द्र की रक्षा; बकासुर का संहार, घट नर्तन आदि का उल्लेख और वर्णन अत्यन्त सुन्दर है। गोपियों के साथ कृष्ण का रूप वर्णन भी अद्वितीय है। गोपियों के अतुलनीय प्रेम पांचजन्य पर कही गई उक्तियाँ उत्कृष्ट हैं। उनके पदों में अयोध्या, शालग्राम, बद्रिकाश्रम देवप्रयाग, द्वारका, ब्रजप्रदेश आदि दिव्य क्षेत्रों का उल्लेख मिलता है। उन पदों में तमिल़नाडु का सुन्दर सांस्कृतिक चित्र भी उपलब्ध हैं, जैसे नवजात शिशु को नहलाना-धुलाना, हरिद्रा से जिह्वा को रंजित करना, पालने में झुलाने का उत्सव, घटनर्तन आदि।

पे`रियाल़वार के गीत प्रेम भक्ति भावना से भूषित हैं। उनके 473 पदों में रस का परिपाक तथा काव्य के शास्त्रीय गुणों का सन्निवेश है। उन्होंने कलिवृत्तम्, कोच्चकक्ककली नामक तमिल़ छन्दों में काव्य रचना की है। उन्होंने अपने समय में व्यवहत भाषा का प्रयोग किया। आल़वार की शब्द-चातुरी के कारण उनका काव्य, प्रसाद गुण सम्पन्न, मधुर एवं सरस है। संगीत की लय और ध्वनि इसमें प्रतिध्वनित होती हैं। उनकी रचना में अनुप्रास, श्लेष, यमक, उपमा, उत्पेक्षा आदि अलंकारों का सम्यक् योग हुआ है तथा तत्कालीन प्रचलित कहावतों का समावेश भी प्रचुर मात्रा में हैं। पे`रियाल़वार तमिल़ के देदीप्यमान सूरज हैं। वे नम्माल़वार के समकालीन भी माने जाते हैं।



# पेॅरियाल़्वार तिरुमोलि़

1. *पल्लाण्डु पल्लाण्डु, पल्ल़ायिरताण्डु पल़कोड़ि नूरायिरम्।*
*मल्लाण्ड तिण्डोल़ मणिवण्णा! उन् शेविड़ शेव्वि तरुक्काप्पु॥*

## श्री मंगलाशासन

(परमात्मा के रूप और गुणों से मोहित होकर भक्त भावावेश में प्रभु की स्तुति करते हैं। इस अनुभूति की दो दशाएँ होती हैं, एक ज्ञान दशा और दूसरी प्रेम दशा। ज्ञान दशा में भक्त को इस बात का ज्ञान रहता है कि प्रभु ही हमारे रक्षक हैं। उस प्रभु की कृपा के लिए भक्त प्रार्थना करते हैं। प्रेम दशा में भक्त गद्गद् होकर प्रभु की रक्षा करना अपना कर्तव्य समझता है। वे भगवान के मंगल की मनोकामना करते हुए मंगलाशासन करने लगते हैं। इस तरह प्रभु के मंगलाशासन करनेवालों में प्रमुख स्थान परियाल़वार को (विष्णुचित्त) दिया जाता है।)

**भावार्थ**

प्रभु तुम अनेक वर्ष विजयी रहो,
प्रभु तुम अनेक वर्ष विजयी रहो,
प्रभु अनेक सहस्त्र वर्ष विजयी रहो,
प्रभु अनेक कोटि शत सहस्त्र विजयी रहो,
मल्ल को हराने में समर्थ दृढ़ भुजायवोंवाले मणिवर्ण।
आपके अरुण चरणों का सौन्दर्य सुरक्षित रहे।

(पल्ल़ाण्डु शब्द का अर्थ तुम अनेक वर्ष विजयी रहो, सबके मन पर रम जाओ, इस अर्थ में मंगलाशासन करते हैं।)

(पांड्य देश की राजधानी मदुरै में राजसभा में एक शास्त्रार्थ हुआ कि कौन उत्तम देव है। पेॅरियालवार ने यह साबित किया कि श्रीमन् नारायण ही परमदेव हैं। पाण्ड्य राजा ने उन्हें हाथी पर बिठाकर एक जुलूस निकाला। तब विष्णु लक्ष्मीसहित गरुड़ारूढ़ होकर आकाश में दिखाई पड़े। तब प्रभु को देखकर पल्लाण्डु (बहु वर्ष विजयी रहो) कहकर उनका मंगलाशासन करने लगे ताकि उन पर नज़र न लगे।)

[वैष्णव लोग प्रातःकाल उठते ही यही पल्लाण्डु पद कहकर प्रभु की वन्दना करते हैं।]

(2) *अडियोमोडुम् निननोडुम् पिरिविन्रि आयिरम् पल्लाण्डु,*
*वडिवाय् निन् वल-मार्बिनिल् वाल़किन्रू मंगैयुम् पल्लाण्डु,*
*वडिवार् शोदि वलत्तु उरैयुम् शुडराल़ियुम् पल्लाण्डु,*
*पड़ै पोर् पुक्कु मुल़ङ्गुम् अप् पांच-शन्नियमुम् पल्लाण्डु।*

**भावार्थ**

हम तुम्हारे दास हैं।
तुम बिना वियोग के अनेक वर्ष विजयी रहो
तुम्हारे दक्षिणी भाग में विराजनेवाली देवी वहु वर्ष विजयिनी रहें।
ज्योतिसदृश दक्षिणी भाग स्थित सुदर्शन चक्र विजयी रहे।

(3) *वाल़ाट्पट्टु निन्ऱीर् उळ्ळरेल् वन्दु मण्णुम् मण्णुम् कॉण्मिन्,*
*कूल़ाट्पट्टु निनरीर्हळै एङ्गळ् कुलुविनिल् पहुदलॉट्टोम्,*
*एल़ाट्कालुम् पलिंप्पिलोम् नाङ्गळ् इराक्कदर् वाल् इलङ्गै,*
*पाल़ाल़ाह पड़ै पॉरुदानुक्कु-प्-पल्लाण्डु कूरुदुमे॥*

**भावार्थ**

निस्तार के लिए दास बनकर रहनेवाले हो।
आओ मिट्टी का गन्ध ग्रहण करो
भोजन के लिए मोहताज रहनेवालों को हम स्वीकार नहीं करेंगे।
सात पीढ़ियों से हम निन्दारहित हैं।
राक्षसपुरी लंका शून्य हो गया।
युद्ध वीर 'तुम बहु वर्ष विजयी रहो।'

(4) *ऍडु निलत्तिल इडुवदन् मुन्नम वन्दु ऍङ्गळ् कुल़ाम् पुहुन्दु,*
*कूडु-मनम्-उडैयीर्हळ् वरम्पॉल़ि वन्दु ओल्लै-क् कूडुमिनो,*
*नाडुम नहरमुम् नन्गऱिय नमो नारायणाय ऍनरु,*
*पाडु-मनम्-उडै-प् पत्तर्-उळळीर्! वन्दु पल्लाण्डु कूरुमिने॥*

**भावार्थ**

शरीर को मिट्टी में मिलाने के पूर्व आओ।
हमारे दल में प्रविष्ट हो जाओ।
फल प्राप्ति की इच्छा छोड़कर आ जाओ।
एक हृदय वालो!
जनपद और नगरवासी नारायण के भक्त हो जाओ।

सब मिलकर गाएँ
तुम बहु वर्ष विजयी रहो।

(5) *अण्ड-क्-कुलत्तुक्कु अदिपादयाही अशुर्र-इराक्कदरै,*
*इण्ड-क्-कुलत्तै ऍडुत्तु-क् कळैंद इरूडीकेशन्-तनक्कु,*
*तोॅण्ड-क् कुलत्तिल-उळ्ळीर् वन्दडि-तोॅलुदु आयिर-नामम् शॉल्लि,*
*पण्ड़ै-क्-कुलत्तै-त्-तविर्न्दु पल्लाण्डु पल्लायिरत्ताण्डु ऍन्मिने॥*

**भावार्थ**

प्रभु के दास भक्तो!
जो ब्रह्माण्ड के अधिपति हैं,
जो राक्षस संहारक हैं,
उस हृषीकेश के पास आ जाओ।
पुराने कुल को छोड़कर
प्रभु के चरणों में स्तुति करो
प्रभु का सहस्र नाम उच्चारण कर रहो
बहु वर्ष विजयी रहें।

(6) *ऍन्दै तन्दै तन्दै तन्दै तम्-मूत्ताप्पन् एऴ्-पड़ि काल् तोॅडङ्गि,*
*वन्दु वऴि वऴि आट्-चॅय् किन्रोम् तिरू ओण-त्-तिरू-विऴविल्*
*अन्दि-अम्पोदिल् अरि उरूवाहि अरिणै अऴित्तवनै,*
*पन्दनै तीर-प् पल्लाण्डु पल्लायिरत्तु आण्डु एन्रु पाडुदुमे॥*

**भावार्थ**

हम हमारे पिता, पिता के पिता और पितामह,
सात पीढ़ियों से आपके दास हैं,
श्रवण नक्षत्र के मंगल त्योहार पर सायंकाल के समय
प्रभु ने सिंहरूप धारण कर शत्रु का वध किया,
प्रभु तुम बहु वर्ष विजयी रहो।
तुम पर अमंगल का भाव न लगे।
(श्रवण नक्षत्र के देवता विष्णु हैं। इसी दिन भगवान ने नृसिंह का अवतार लिया।)

(7) *तीयिर् पोलिहिन्र शॅम्-शुड़र आऴि तिहऴ्-तिरु-च् चक्करत्तिन्*
*कोयिर् पॉऱियाले ऑट्रुण्डु निन्रु कुड़ि-कुड़ि आट्चेय्किनरोम्,*

*माय-प्-पोरु-पड़ै ताणनै आयिरम्-तॉळुम् मोलि कुरुदे,*
*पाय-य्-चुलररिय आलि-वल्लानुक्कु-प्-पल्लाण्डु कूरुदुमे॥*

भावार्थ

सूर्य चन्द्र से बढ़कर ज्योतिर्मय,
शोभायमान, श्री चक्र के चिह्न से अंकित
प्रभु की हम वंशानुवंश सदा सेवा करते हैं।
हम घोषित कर रहे हैं, चक्रधारी प्रभु को 'बहुवर्ष विजयी रहो।'
प्रभु ने सुदर्शन चक्र को तेज़ी से घुमाया
इससे मायावी बाणासुर विनष्ट हो गया।
उस प्रभु की स्तुति करेंगे।

(8) *नॅय्यिड़ै नल्लदु-ओर् शोरुम् नियतमुम् अत्ताणि-च्-चेवहमुम्*
*कै-अड़ैकायुम् कलुत्तुक्कु-प् पूणेडु कादुक्कु-क् कुण्डलमुम्*
*मॅय्यिड् नल्लादोर् शान्दमुम् तन्दु एन्नै वेळ्ळुयिर आक्क-वल्ल,*
*पैयुड़ै नाह-प् पहै-क् कॉड़ियानुक्कु-प्-पल्लाण्डु कुरुवने॥*

भावार्थ

घृत से तर, शुद्ध और विलक्षण अन्न,
प्रभु की सेवा,
दिया हुआ पान, सुपारी,
गले के हार के साथ कर्ण कुंडल, चन्दन देकर
प्रभु ने मुझको पवित्र आत्मा बना दिया,
उस प्रभु के ध्वज में सुन्दर
फणयुक्त सर्प का शत्रु गरुड़ है।
वह प्रभु बहुवर्ष विजयी रहे।

(9) *उडुत्तु-क् कळैन्द निन्-पीतह-आड़ै उडुत्तु-क् कलत्तुदु उण्डु,*
*तॉडुत्तु तुळाय्-मलर्-शूड़ि-क् कळैन्दन शूडुमित्त तॉण्ड़रहलोम्,*
*विडुत्त तिचैत्-क् करुमम् तिरुत्ति-त् तिरु-ओण-त्-तिरु-विळाविल,*
*पडुत्त पैन्नाहणै-प् पळ्ळि कोण्ड़ानुक्कु-प्-पल्लाण्डु कुरुदुमे॥*

भावार्थ

हम प्रभु के दास हैं,
हम प्रभु का पीताम्बर धारण करते हैं।

प्रभु की थाली का अवशिष्ट खाते हैं
प्रभु की धारण की हुई तुलसीमाला पहनते हैं
एक दिशा में निर्दिष्ट कार्य को हम पूरा करते हैं।
हम घोषित करते हैं, हे सुन्दर सर्पशय्या में शयन करनेवाले प्रभु!
तुम श्रवण के त्योहार में बहु वर्ष विजयी रहो।

(10) *ऍन्नाळ् ऍम्पेरुमान् उन्-तनक्कु अडियोम् ऍन्ऱु एलुत्तुपट्ट,*
*अन्नाळे, अडियीङ्गळ् अड़ि-क् कुड़िल वीडु पॅऱ्ऱु उय्न्दतु-काण्,*
*शॅन्नाळ् तोरऱि-त् तिरु-मदुरैयिऱ शिळै कुनित्तु, ऐन्दलैय*
*पैन्नाह-त् तलै-प् पाय्न्दवने! उन्नै-प् पल्लाण्डु कूऱुदुमे॥*

भावार्थ

हमारे प्रभु! हम तुम्हारे दास हैं।
हमारा दास कुल अहंकार की भावना से छुटकारा पाकर,
निस्तार का भाग्य बना,
पवित्र दिवस में अवतरित होकर मथुरा में तुमने धनुष तोड़ा।
पाँच सिरवाले कालिय नाग के सिर पर नाचनेवाले प्रभु!
हम घोषित करते हैं तुम बहु वर्ष विजयी रहो।

(11) *अल्-वलक्कु-ओन्ऱुम् इल्ला अणि-कोट्टियर्-कोन् अबिमान-तुङ्गन्,*
*शॅल्वनै-प-पोल-त् तिरुमाले! नानुम् उनक्कु-प् पल़वडियेन्*
*नल्-वहैयाल् नमो नारायणा ऍन्ऱु नामम् पल परवि-*
*पलवहैयालुम् पवित्तिरने! उन्नै-प्-पल्लाण्डु कुऱुवने॥*

भावार्थ

मैं चिरकाल से तुम्हारा दास हूँ
मैं दोषरहित तिरुक्कोट्टियूर के अभिमानी अधिप जैसा भक्त हूँ।
मैं तुम्हारे दास होने का गर्व करता हूँ।
हे पवित्र प्रभु मैं,
'नमो नारायण' कहते हुए,
नाम संकीर्तन करते हुए कहूँगा—
'तुम बहु वर्ष विजयी रहो'।

(12) *पल्लाण्डु ऍन्ऱू पवित्तिरनै-प्-परमट्टियै-य् चार्ङ्गम् ऍन्नुम्*
*विल्लाण्ड़ान्-तन्नै विल्लिपुत्तूर विट्टुचित्तन् विरुम्बिय शॉल्,*

*नल्लाण्डु ऍन्ऩु नविन्ऱुउरैप्पार् नमोनारायणाय ऍन्ऱु*
*पल्लाण्डुम् परमात्मनै-च् चूऴ्न्दिरुन्दु एत्तुवर् पल्लाण्डे॥*

**भावार्थ**

पवित्र प्रभु को, परमेष्टि को,
शारङ्ग धनुषधारी को,
श्रीविल्लिपुत्तूर के विष्णु चिच ने
प्रेम से मंगलशासन किया–
"तुम बहु वर्ष विजयी रहो।"
भक्त उनको भाग्यवान वर्ष समझकर
'नमो नारायण' कहते हैं।
वे भगवान के सामीप्य का अनुभव कर
प्रभु की स्तुति करते हुए घेरे खड़े रहेंगे।

(13) *वायुळ् वैयहम् कण्ड् मृड-नल्लार्,*
*आयर् पुत्तिरन् अल्लन् अरुम् देय्वम्*
*पाय-शीर्-उड़ै-प् पण्पुड़ै-प् पालहन्,*
*मायन् ऍन्ऱु महिळन्दनर् मादरे॥*

## कृष्ण जन्मोत्सव

**भावार्थ**

विनम्र सुन्दर गुणवती महिलाएँ कृष्ण के मुँह के भीतर
ब्रह्मांड को देखकर प्रसन्न होकर कहने लगीं–
यह गोपपुत्र नहीं है, दुर्जेय पुत्र है।
यह बालक जो गुण सम्पन्न है, ऐश्वर्य सम्पन्न है।
वास्तव में मायावी है, अद्भुत शक्तिशाली है।

## लोरी गीत

(श्री कृष्ण घुटने के बल पर चलने लगता है। आँगन में धूल में खेलता है। पूर्णचन्द्र को देखकर खिलौना समझता है। उसके लिए आग्रह करता है। माता यशोदा चन्द्र को सम्बोधित करती है।)

(14) *माणिक्कम् कट्टि वयिरम् इड़े कट्टि,*
*आणि-प्-पोॅन्नार् चेॅय्द वण्ण-च् चिरूत तोॅट्टिल,*

*पेणि उनक्कु-प् पिरमन् विडु-तन्दान,*
*माणि-क् कुरलने! तालेलो,*
*वैयम् अळन्दाने! तालेलो॥*

भावार्थ

## कृष्ण नाट्य लीला

मेरे कृष्ण के मुख पर लटकन झूम रहा है।
स्वर्ण किंकिणियाँ निनादित हो रही हैं।
घुटनों के बल पर जाकर धूल में खेल रहा है।
हे पूर्ण चन्द्र!
कान्हा के नृत्य को देखने की लालसा हो तो इधर आकर देखो।

(15) *नम्मुड़ै नायकने! नान्-मऱैयिन् पॉरुळे!*
*नावियुळ नऱ्-कमल नान् मुकनुक्क, ओॅरु-काल्*
*तम्मनै-आनवने! तरणि-तल-मुलुदुम्*
*तारकैयिन् उलहुम्, तडवि अदन् पुऱमुम्,*
*विम्म वळ्रन्दवने! वेऌमुम् एऌ-विडैयुम्*
*विरविय वेळै-तनुळ् वेन्ऱु वरुपवने।*
*अम्म! ऍनक्कु ओरुकाल् आडुह शॅङ्कीरै*
*आयर्हळ् पोऱ्ऱे! आडुह आडुहवे ॥*

भावार्थ

हमारे प्रभु! चारों वेदों के नायक
नाभि के सुन्दर कमल से उद्भूत ब्रह्मा के लिए
माता सदृश होनेवाले प्रभु
सारी पृथ्वी तथा नक्षत्र लोकों को पार कर
अपने कान्ति को बढ़ानेवाले प्रभु।
गज और सप्त ऋषभों पर विजयी पानेवाले प्रभु!
मेरे लिए एक बार नाचो!
गोपों के लिए लड़नेवाले ऋषभ तुल्य प्रभु नाचो नाचो।




(सात ऋषभ कुम्भ गोप राजा था। उसके नप्पिन्नै नामक एक कन्या थी। उसके विवाह के लिए शर्त रखी कि मेरी गोशाला के सात बैलों को जो वश में करेगा वही मेरी पुत्री

को प्राप्त कर सकता है। वे बैल अदम्य थे। श्रीकृष्ण ने उन सात बैलों पर आक्रमण कर उनका वध किया। नप्पिन्नै के साथ उनका विवाह सम्पन्न हुआ।

हिन्दी साहित्य में कृष्ण की प्रेयसियों में राधा का जो स्थान है वही तमिल़ साहित्य में नप्पिन्नै का है।)

(16) *तुप्पुड़ै-आयर्हळ्-तम्शॉल् वलुवादु ओरु-काल्*
*तूय-करुङ्-कुल़ल् नऱ्-तोहै मयिल्-अनैय*
*नप्पिनै-तन् तिऱमा नल्-विडै एल़्-अविय*
*नल्ल तिऱल्-उडैय नादनुम् आनवने!*
*तप्पिन-पिळ्ळैहळै-त् तन मिहु शोदि पुह-त्*
*तनि ऑरू तेर् कड़वि-त् तायोडु कूट्टिय, ऍन्*
*अप्प! ऍनक्कु ओरु-काल् आडुह शेङ्कीरै,*
*आयर्हळ् पोरेऱे। आडुह आडुहवे ॥*

**भावार्थ**

अहीरों के वंचन निभाने के लिए
सुन्दर, पंखवाले मयूर सदृश नप्पिन्नै के लिए,
सात बलों का वध करने में सफल
प्रभु, गोपों के नाथ!
पैदा होते ही ग़ायब होनेवाले पुत्रों को
माता के साथ मिलानेवाले मेरे प्रभु! मेरे लिए एक बार नाचो।
गोपों के लिए लड़नेवाले ऋषभ तुल्य प्रभु नाचो! नाचो!

(एक कृष्ण भक्त ब्राह्मण था। उसके घर में बच्चा पैदा होते ही ग़ायब हो जाता था। तीन बच्चे पैदा हुए। तीनों ग़ायब हुए। फिर जब ब्राह्मण की पत्नी गर्भवती हुई तो उसने पति से कृष्ण की सहायता लेने की प्रार्थना की। ब्राह्मण की प्रार्थना पर कृष्ण निकलनेवाले ही थे। तो अर्जुन ने कहा कि आप यज्ञ में दीक्षित हैं। आप न जाएँ, मैं जाऊँगा। अर्जुन ब्राह्मण के घर गया और धनुष-बाण बाँधकर प्रसव काल की प्रतीक्षा में था। बच्चा पैदा हुआ और ग़ायब हो गया। आकाश में बच्चे की रोने की आवाज़ सुनाई पड़ी। ब्राह्मण दुःखी होकर कृष्ण के पास गए और सारा वृत्तान्त कहा। श्री कृष्ण, ब्राह्मण और अर्जुन तीनों ब्रह्माण्ड के आवरण तक गए। कृष्ण स्वयं परमधाम पहुँचे। वहाँ लक्ष्मी ने स्वागत किया और ब्राह्मण शिशुओं को सुरक्षित दे दिया। इस प्रकार चारों पुत्रों को कृष्ण ने उनकी माता के पास पहुँचाया।)

(17) *पॉत्त उरलै-क्-कविऴ्त्तु अदन् मेल् एऱि,*
*तित्तित पालुम् तडाविनिल वॅण्णेयुम्,*
*मेत्त्-त्-तिरुवयिऱु आर विलङ्गिय,*
*अत्तन् वन्दु ऍन्नै-प्-पुऱम् पुल्हुवान्*
*आऴियान् ऍन्नै-प्-पुऱम् पुल्हुवान् ॥*

**भावार्थ**

(पीठ चिपकने की आनन्दानुभूति)

जीर्ण ओखली औंधा कर,
उस पर चढ़कर,
मीठा दूध और मटके का मक्खन,
बड़े चाव से खानेवाला बेटा
मेरी पीठ में चिपक जाता है,
चक्रधारी प्रभु! मेरी पीठ में चिपक जाता है।

(18) *'वा' एन्रु शॉल्लि ऍन् कैये-प् पिडित्तु वलियवे कादिल् कड़िप्पै,*
*नोव-त् तिरिक्किल उनक्कु इड्गु इलुक्कुऱ्रेन कादुहळ् नॉन्दिडुम किल्लेन",*
*"नावल्पऴम् कॉण्डुवैत्तेन् इवै काणाय्। नम्बी, मुन् वञ्च महळै-च्*
*शाव-प् पाल् उण्डु शकडु इऱ-प् पायन्दिट्ट दामोदरा! इङ्गे वाराय्।*

(कनच्छेदन)

**भावार्थ**

कान्हा कहते हैं–"मुझे बलात्
तुमने कान में पीड़ा पहुँचाकर, कर्णाभूषण पहनाने से तुम्हें क्या मिलता है?
मेरे कान दुखेंगे, मैं नहीं सह सकता।"
यशोदा कहती है–
"तुम्हारे लिए जामुन का फल लाई हूँ देखो!
पूतना के दूध पिया तो वह मर गई।
शकटासुर पर आक्रमण किया वह मर गया,
मेरे बेटे दामोदर, मेरे पास आओ।"

(19) *वेण्णेय् अळैन्द कुणुङ् गुम्विळैयाडु पुलुदियुम् कॉण्डु,*
*तिण्णेन इववॅिरा उन्नै-त् तेय्त्तु-क् किडक्कान् ऑट्टेन्,*

*ऍण्णेय् पुळिपलम् कॉण्डु इड्ंगु ऍत्तनै पोदुम् इरुन्देन्,*
*नण्णल् अरिय पिराने! नारणा! नीराड वाराय्।*

भावार्थ

(स्नान करने के लिए बुलाना)

बार-बार मक्खन लगाने से मक्खन की बू आती है,
खेलने से धूल लगती है,
शरीर में खुजलाहट होगी।
मैं तुमको रात में खुजलाते पड़े रहने न दूँगी।
स्नान कराने के लिए
तेल और इमली फल लेकर
तुम्हारी प्रतीक्षा में यहाँ बैठी हूँ।
तुम्हें प्राप्त करना दुर्लभ है।
प्रभु नारायण! शीघ्र स्नान करने के लिए आओ।

(20) *काडुहळ्-ऊडु पोय्-क् कन्रूहळ् मेय्तु*
*मऱि-ओडिक् काऱ-क् कोडल़-पू-च्*
*चूड़ि वरूहिन्ऱ दामोदरा!*
*कररू-त् तूळि काण् उन उडम्बु,*
*पेड़ै मयिऱ-चायल् पिन्नै मणाळा!*
*नीराट्टु अमैत्तु वैत्तेन्,*
*आड़ि अमुदु शॅय् अप्पनुम् उण्डिलन्*
*उन्नीडु उडने उण्पान्।*

भावार्थ

(कृष्ण की वापसी पर यशोदा का आनन्द)

वन मार्ग में जाकर
गाय बछड़े को चराकर
उनको रोकने के लिए दौड़कर
नील-कोडल पुष्प पहनकर
आनेवाले प्रभु दामोदर!
तुम्हारा शरीर धूलधूसरित है पुत्र!

मयूरी सदृश नप्पिन्नै के प्रियतम!
स्नान करने के लिए सभी वस्तुएँ सजा रखी हैं।
स्नान करने के बाद खाओ!
तुम्हारे पिता तुम्हारे साथ भोजन करना चाहते हैं!
इसी इच्छा से उन्होंने अभी तक भोजन नहीं किया।

(21) *ऍन्-नादन् देविक्कु अन्ऱु इन्प-प् पूईयादाळ्*
*तन् नादन् काणवे तण् पू-मरत्तिमै,*
*वन्-नाद्-प् पुळ्ळाल् वलिय-प् परित्तिट्ट,*
*ऍन्-नादन् वन्मैये-प् पाडि-प् पऱ*
*ऍम्-पिरान् वन्मै यै-प् पाड़ि पऱ।*

**भावार्थ**

मेरे प्रभु की देवी को (सत्यभामा को)
उस दिन वांछित पारिजात पुष्प न देनेवाली
इन्द्राणी के नाथ, इन्द्र के देखते-देखते,
तुमने शीतल वृक्ष को उखाड़कर फेंक दिया,
गरुड़ पर आरूढ़ होकर सत्यभामा के उपवन में,
विचरनेवाले मेरे नाथ के पराक्रम का गान करके उड़ो।
मेरे उद्धारक के पराक्रम गाते हुए उड़ो।

(इस पद के शीर्षक का नाम 'उन्दि परतल' है। यह एक प्राचीन खेल है अर्थात् गाते हुए कूद-कूदकर उड़ना। इसका उल्लेख तमिल़ संघकाल साहित्य में है। बीच में एक दीप स्तम्भ रखकर कन्याएँ गोलाकार रूप में खड़ी हो जाती हैं। ताल देते हुए कूदते हुए परिक्रमा करती हैं। पूर्व पदों को एक कन्या गाती है। शेष पदों को दूसरी कन्या गाती है।)

(22) *वाय् ऑरु पक्कम् वाङ्गि वलिप्प*
*वाऱ्न्द नीर्-क् कुलि-क् कण्गळ् मिल़ऱ*
*ताय् ऑरु पक्कम् तन्दै ओरु पक्कम्*
*तारमुम् ऑऱु पक्कम् अलऱ्ऱ*
*ती ऑरु पक्कम् शेरवदन मुन्नम्*
*शॅङ् कण मालोडुम् शिक्केन-च्चुऱ्ऱम्*
*आय् ओरु पक्कम् निऱक वल्लारक्कु*
*अरव-दण्डत्तिल् उय्यलुम् आमे।*

**भावार्थ**

मुँह एक ओर टेढ़ा हो जाता है,
आँसू गिरते हैं,
नयन दृष्टि-शून्य हो जाते हैं,
माता एक तरफ़, पिता एक तरफ़,
पत्नी एक तरफ़ रोती है,
आग की तरफ़ जुटने के पहले
अरुण-लोचन प्रभु से तुरन्त लग जाओ।
प्रभु से प्रेम करो क्योंकि बग़ल में खड़े
यमदूतों से छुटकारा पाना असम्भव है।

(23) *तुप्पु-उडैयारै उडैवदॅल्लाम्*
*शोऱ्विडत्तु-त् तुणै आवर् ऍन्ऱे*
*ऑप्पिलेन् आहिलुम् निन्-उड़ैन्देन*
*अनैक्कु नी उरुळ् शॅय्दमैयाल्*
*ऍय्प्पु ऍन्नै वन्दु नलियुम् पोदु अङ्गु*
*एदुम् नान् उन्नै निनैक्क माट्टेन्*
*अप्पोदैक्कु इप्पोदे शॉल्लि वैत्तेन्*
*अरङ्गत्तु अरवणै-प् पळ्ळियाने।*

**भावार्थ**

(श्रीरंग के भगवान श्रीरंगनाथ के चरण-कमलों के आश्रय में पहुँचकर श्रीविष्णुचित्त प्रार्थना करते हैं।)

बलवानों की शरण में जाते हैं तो यही सोचते हैं कि
वे हमारी सहायता करेंगे।
मैं उनके जैसे नहीं हूँ।
अब मैं तुम्हारी शरण में आया हूँ।
मेरी रक्षा करो।
तुमने गजेन्द्र पर कृपा की थी।
जब वृद्धावस्था आकर सताएगी
तब किसी भी तरह तुम्हारा स्मरण नहीं कर पाऊँगा।
श्रीरंग में शेषशय्या पर विराजनेवाले प्रभु!

उस समय यह बात कह नहीं पाऊँगा।
मैं अभी कहे देता हूँ।

(24) *ऍल्लैयिल् वाशल कुरुह-च् चॅन्राल्*
*ऍररि नमन् तमर् पररुम् पोदु*
*निल्लुमिन ऍन्नुम् उपायम् इल्लै*
*नेमियुम् शङ्कमुम् एन्दिनाने!*
*शॉल्ललाम् पोदे उन् नामम् ऍल्लाम्*
*शॉल्लिनेन् ऍन्नै-क् कुरिक्कोण्डु ऍन्रुम्*
*अल्लाद् पड़ा-वण्णम् काक्क वेण्डुम्*
*अरङ्गत्तु अरवणै-प् पळ्ळियाने।*

भावार्थ

अन्तिम काल में यमलोक द्वार पहुँचेंगे तो
यमदूत मुझे सताएँगे तब उनसे बचने के लिए
मेरे पास उपास नहीं।
नेमि (चक्र) और शंख को धारण करनेवाले प्रभु!
जब मुझे तुम्हारे नामों के स्मरण करने की शक्ति है
तब नामस्मरण करता हूँ।
इस बात का ध्यान रखकर मेरी रक्षा करो कि
मुझे उसके वाद दुःख का अनुभव नहीं करना पड़े।
श्रीरंग में सर्प शय्या पर शायित प्रभु!
मेरी रक्षा करो।

(25) *किड़क्किल् तॉट्टिल् किलिय उदैत्तिडुम्*
*ऍडुत्तु-क कोळ्ळिल् मरुङ्गै इरुत्तिडुम्*
*ओडुक्कि-प् पुल्हिल् उदरत्ते पाय्न्दिडुम्*
*मिडुक्किलामैयाल् नान् मेलिनदन् नङ्गाय्॥*

भावार्थ

(बालक कृष्ण का जन्मोत्सव)

पालने में लिटाऊँ तो लात चलाता है
वह चूर-चूर हो जाता है
गोद में लूँ तो कमर टूट जाती है

छाती से कसकर लगाऊँ तो
अपने चरण से मेरे पेट पर मारता है।
क्या करूँ सहेलियो?
शरीर में शक्ति न होने के कारण
मैं अत्यधिक दुखी हूँ।

(26) *वन्द मदलै-क् कुऌात्तै वलि-शेॅय्दु*
*दन्त-क् कळिरु पोल् ताने विळैयाडुम्*
*नन्दन् मदलैक्कु नन्रुम् अऴहिय*
*उन्दि इरुन्दवा काणीरे,*
*ओळि इऌैयीर्। वन्दु काणीरे।*

भावार्थ

(बालक की छवि का वर्णन)

खेलने के लिए आए सभी बालकों के सामने
स्वयं नेता बनकर उनको हराता है
उज्ज्वल आभूषण से भूषित सहेलियो,
यहाँ आकर देखो।
मदमस्त दन्तुल हाथी की तरह विहार करनेवाले
नन्द गोप के बालक की सुन्दर नाभि की
अनोखी छवि कितनी सुन्दर है।

(27) *मुऱरिलुम् तूदैयुम् मुन कैम्मेल् पूवैयुम्*
*शिऱरिल् इलैत्तु-त् तिरिदरुवोर्हलैप!*
*पऱरि-प् पऱित्तु-क् कॉण्डु ओडुम् परमन् तन्*
*नेऱरि इरुन्दवा काणीरे*
*नेर् इलैयीर्! वन्दु काणीरे*

भावार्थ

(बाल-क्रीड़ा का वर्णन)

समुचित आभूषणों से सुशोभित सहेलियो
यहाँ आकर देखो!
घरौंदा बनाकर खेलनेवाली बालिकाओं को पकड़कर
उनके सूप, घड़ा और

हाथ में ली हुई मैना छीनकर कृष्ण भाग जाता है
बालक कृष्ण के सुन्दर ललाट की
अनोखी छवि कितनी सुन्दर है।

(28) *एन् शिरु-क् कुट्टन् एनक्कु ओर् इन् नमुदु ऍम्पिरान्*
*तन् शिरु-क् कैकळाल् काट्टि-क् काट्टि अऴैक्किन्रान्*
*अञ्चन-वण्णनोडु आड्ल् आड़ उऱुदियेल्*
*मञ्जिल् मऱैयादे मामदी। महिल्न्दु ओडी वा!*

भावार्थ

(चन्दा को बुलाना)

हे पूर्ण चन्द्र!
मेरा नन्हा बालक, मेरा देव, मेरा मधुर अमृत!
तुम्हें अपने नन्हे-नन्हे हाथों से दिखा-दिखाकर बुलाता है
तुमसे खेलना चाहता है
तुम बादलों में मत छिप जाना
गदगद् होकर दौड़े-दौड़े यहाँ आ जाओ।

(29) *कोळ अरियिन् उरुवम् कॉण्डु अवुणन् उडलम्*
*कुरुदि कुऴम्बि ऍऴ-क् कूर् उहिराल् कुडैवाय्।*
*मीळ अवन् महनै मॅय्म्मै कॉळ-क् करुदि*
*मेलै अमर्र आदि मिक्कु वॅहुण्डु वर्क्*
*काळ-नन्-मेकम् अवै कल्लोडु काल् पोलिय-क्-*
*करुदि वरै-क् कुडैया-क् कालिहळ् काप्पवने।*
*आळ ऍनक्कु ऑरु-काल् आडुह शॅङ्कीरै*
*आयर्हळ् पोरेऱे! आडुह आडुहवे॥*

भावार्थ

(प्रभु के नाचने का वर्णन)

हे प्रभु!
तुमने नरसिंहावतार लेकर हिरण्यकशिपु को
अपने तीक्ष्ण नख से विदीर्ण कर दिया
इन्द्र ने कुपित होकर प्रचंड वायु सहित
पत्थरों की वर्षा की

उस पर्वत को ही छत्र बनाकर गायों की रक्षा की।
पौरुष सम्पन्न प्रभु!
मेरे लिए एक बार नाचो
गोपों की ऋषभ एक बार फिर नाचो! नाचो!

(30) *पल्-मणि मुत्तिन् पवळम् पदित्तन्न*
*ऍन् मणि वण्णन् इलङ्गु पों॑र दोट्टिन् मेल्*
*निन् मणिवाय् मुत्तु इलङ्ग निन् अम्मै-तन्*
*अम्मणि मेल् कोट्टाय् शप्पाणि*
*आली-अङ् कैयने! शप्पाणि॥*

भावार्थ

(करताली का वर्णन)

तुम्हारे दाँत मणितुल्य मोती सदृश हैं
वे कर्णभूषण में खचित मोती विद्रुम-से हैं
चक्रसहित सुन्दर हाथ वाले मेरे प्रभु!
अपनी माता की गोद में करताली बजाते हुए नाचो।

(31) *मुन् नल् ओर् वेळ्ळि-प् पॅरुमलै-क् कुट्टन्*
*मॊ॑डु-मॊ॑डु विरैन्दु ओडप्*
*पिन्नै-त् तोडर्न्ददोर् करुमलै क् कुट्टन्*
*पॅयर्न्दु अडि इडुवदु पोल्*
*पन्नि उलहम् परवि ओवा-प् पुहल्प्*
*पल देवन् ऍन्नुम्*
*तन् नम्बि ओड-प् पिन् कूड-च् चेल्वान्*
*तळर् नडै नडवानो!*

भावार्थ

(श्रीकृष्ण की चाल का वर्णन)

एक सुन्दर ऊँचा छोटा रजत गिरि
धड़ाधड़ दौड़ रहा है,
उसका पीछा करते हुए नीलगिरि मन्द-मन्द चल रहा है उसी प्रकार
दुनिया की प्रशंसा से परे
कीर्तिमान अग्रज बलदेव दौड़ रहा है।
उसका अनुगमन करनेवाला बालकृष्ण चाल चलेगा क्या?

(32) *नाऱिय शान्तम् नमक्कु इऱै नल्हु ऍन्नत्*
*तेऱि अवळुम् तिरु-उडम्बिल् पूस*
*ऊऱिय कूनिनै उळ्ळे ओ॑डुङ्ग अन्रु*
*एऱ उरुविनाय् अच्चो अच्चो*
*ऍम्पेरुमान्! वाराय् अच्चो अच्चो।*

भावार्थ

(गले लगाने का आह्वान)

हे प्रभु
तुमने कुब्जा से सुगन्धित चन्दन लेप माँगा
निर्भय होकर उसने भी
तुम्हारे सुन्दर शरीर पर चन्दन लेप लगाया।
चन्दन लेप लगाने से उसका कूबड़ ग़ायब हो गया
आओ प्रभु!
मुझे भी अपने हृदय से लगाओ।

(33) *कायुम् नीर् पुक्कु-क् कड़म्बु एऱि काळियन्*
*तीय पण्त्तिल् शिलम्बु आर्क्क-प् पाय्न्दु आड़ि*
*वेचिन् कुऴल् ऊदि वित्तकनाय् निन्र*
*आयन् वन्दु अप्पूच्चि काट्टुहिन्रान्*
*अम्मने! अप्पूच्चि काट्टुहिन्रान्॥*

भावार्थ

(श्रीकृष्ण का हौआ दिखाना)

यमुना के तप्त जल में कूदकर
कदम्ब वृक्ष पर चढ़कर
कालिय नाग के फण पर चढ़कर
उसे विदीर्ण कर दिया।
किंकिनी नाद से उस पर नर्तन किया
विदग्ध गोपबालकों को प्रसन्न किया
अब मैया री! बाल कृष्ण
मुझे हौआ दिखाता है।
मैया री! हौआ दिखाता है।

(34) *वैयम् ऍल्लाम् पे॑रुम् वार्-कडल् वालुम्*
*मकर-क् कुलै को॑ण्डु वैत्तेन्*
*वे॑य्यके कादिल् तिरियै इडुवन् नी*
*वेण्डियदु ऍल्लाम् तरुवन्*
*उय्य इव्-आयर् कुलत्तिनिल् तोनरिय*
*ओ॑ण् शुड्र् आयर् को॑लुन्दे*
*मैयन्मै शे॑य्दु इळ आय्च्चियर् उळ्ळत्तु*
*मादवने! इङ्गे वाराय्।*

भावार्थ

(कनछेदन)

मैंने कर्णाभूषण ला रखा है
यह बृहत् सागर में जीवित मकर की आकृति जैसा है
इसका मूल्य सारे संसार के मूल्यों के जैसा है
मैं इसे कान में पहानाऊँगी
तुम जो चाहो, मैं सब कुछ तुमको दे दूँगी।
गोप कुल में उज्जीवन के लिए अवतरित,
उज्ज्वल ज्योतिर्मय गोप तिलक
प्रेम में डुबाकर तरुण गोपियों के हृदय में बसनेवाले
मेरे प्रिय माधव इधर आओ!

(35) *कऱन्द नऱ्-पालुम् तयिरुम् कड़ैनदु उऱि मेल् वैत्त वेण्णेय्*
*पिऱन्दुदुवे मुदलाह-प्-पेऱ्ऱऱियेन् एम् पिराने।*
*शिऱ्न्द नऱ्राय् अलर् तूरअरुम् ऍन्पदनाल् पिऱ्ऱ् मुनने*
*मऱन्दुम् उरै-याड-माट्टेन मञ्जनम् आड नी वाराय्।*

भावार्थ

(स्नान करने के लिए आह्वान)

दुहा हुआ ताज़ा दूध, दही
मथकर छींके पर रखा मक्खन
इन सबके बारे में तुम्हारे जन्म के पूर्व
मैं बिल्कुल नहीं जानती, मेरे प्रभु!

लोग यहीं कहेंगे कि मैं तुम्हारी प्यारी माता होकर
तुझ पर दोष लगाती हूँ।
अब मैं दूसरों के आगे भूलकर भी कुछ नहीं कहूँगी।
मञ्जन करने तुम आ जाओ।

(36) *मच्चोडु माळिहै एरि मादर्हळ् तम् इड़म् पुक्कु*
*कच्चोडु पट्टै-क् किलित्तु क् काम्बु तुहिल् अवैकीरि*
*निच्चलुम् तीमैहळ् शेॅय्वाय् नीळ् तिरु वेङ्कडत्तु ऍन्दाय*
*पच्चै-त् तमनहत्तोडु पादिरि प् पू-च् चूट्ट वाराय्।*

भावार्थ

(पुष्पों से अलंकृत करना)

ऊँची अट्टालिकाओं पर चढ़कर
महिलाओं के निवास स्थान में प्रविष्ट होकर
कंचुक एवं रेशमी वस्त्रों को फाड़कर
ज़रीदार साड़ियों को चीरकर
हमेशा उद्दण्ड मचानेवाले मेरे गोपाल!
गगनचुम्बी वेंकटनाथ के स्वामी।
हरित दमनक पुष्प के साथ
पाटली पुष्प को भी तुम्हें पहनाऊँगी, आओ।

(37) *शेप्पादु मेन्-मुलैयार्हळ् शिऱु शोऱुम् इल्लुम् शिदैत्तिट्टु*
*अप्पोदु नान् उरप्प-प् पोय् अडिशिलुम् उण्डिले आळ्वाय्*
*मुप्पोदुम् वानवर् एत्तुम् मुनिवरहळ् वेॅळ्ळरै निन्राय्*
*इप्पोदुनान् ओन्रुम् शेॅय्येन् ऍम-पिरान् काप्पिड वाराय्।*

भावार्थ

(रक्षा मंगल)

कुम्भ सदृश कोमल स्तनवालियों के भोजन का छोटा पात्र
घरौंदा सब तुमने चूर-चूर कर डाला
मैंने तुम्हें डाँटा तो भोजन किए विना चल दिए
मेरे स्वामी! त्रिकाल देवताओं से स्तुत्य,
मुनिगण आश्रित तिरुवेळ्ळरै में निवास करनेवाले

हे प्रभु! अब मैं कुछ नहीं कहूँगी
मेरा उपकारक! तुम्हारा रक्षा मंगल करूँ, आओ।

(38) *पोदर् कण्डाय् इङ्गे पोदर् कण्डाय्*
*पोदरेन् ऍन्नादे पोदर् कण्डाय्*
*एदेनुम् शोल्लि अशल् अहत्तार्*
*एदेनुम् पेशनान् केट्क माट्टेन्*
*कोदुकलम्-उड़ै क् कुट्टनेयो*
*कुन्रु एडुत्ताय्। कुड्माड कूत्ता।*
*वेद प् पो॑रुळे। ऍन् वेङ्गडवा।*
*वित्तहने! इङ्गे पोदराये।*

भावार्थ

**(यशोदा मैया श्रीकृष्ण को बुलाती है)**

मेरे लाडले बेटे! इधर आ जाओ!
अब अधिक मचले बिना मेरे पास आ जाओ!
अड़ोस-पड़ोस के लोग तुम्हें बुरा-भला कहते हैं
मै इसे सुन नहीं सकती।
गिरिधारी लाल! घटनृत्य करनेवाले मेरा नटराज!
वेदमन्त्रधारी! मेरे वेंकटगिरि के स्वामी!
सबके रक्षक!
मेरे पास इधर आ जाओ।

(39) *तो॑त्तार् पूङ् कुऴल् कन्नि ओ॑रुत्तियै-च्*
*चोलै-त् तडम् को॑ण्डु पुक्कु*
*मुत्तार् को॑ङ्गै पुणर्न्दु इरा नाऴिगै*
*मूवेऴु शे॑न्ऱ पिन् वन्दाय्*
*ओ॑त्तार्क्कु ओ॑त्तन पेशुवर् उन्नै*
*उरप्पवे नाम् ओ॑न्रुम् माट्टेन्*
*अत्ता। उन्नै अऱिन्दु को॑ण्डेन् उनक्कु*
*अञ्जुवन् अम्मम् तरवे।*

भावार्थ

(श्रीकृष्ण के अलौकिक स्वरूप का स्मरण कर यशोदा का भावुक हो जाना)

पुष्पालंकृत एक कन्या को
वाटिका प्रदेश में ले जाकर
मुक्तालंकृत स्तनों का आलिंगन करके
अब तुम रात के तीसरे पहर में वापस आए हो।
लोग तुम्हारे बारे में उल्टा-सीधा कहेंगे
बेटा! मैं तो तुम्हें डाँट नहीं सकती।
तात! मैं भली-भाँति समझ गई।
तुमको मैं दूध पिलाने से बहुत डरती हूँ।

(40) *वण्ण-क् करुङ-कुऴल् मादर् वन्दु अलर् तुऱरिड-प्*
*पण्णि-प् पल शेय्दु इप्-पाडि ऍङ्गुम् तिरियामे*
*कण्णुक्कु इनियाने-क् कान् अदर् इडै-क् कन्ऱिन्-पिन्*
*ऍण्णरकु अऱियाने-प् पोक्किन्ने ऍल्ले पावमे।*

भावार्थ

(यशोदा का विलाप)

सुन्दर नील कुन्तलवाली स्त्रियो,
तुम्हारी शरारतों पर शिकायत करने से बचाने के लिए
व्रजभूमि में इधर-उधर घूमने से रोकने के लिए
मेरे नयनों को मधु लगनेवाले अप्रतिम बालक को वन-मार्ग में
गायें चराने के लिए बछड़ों के पीछे तुम्हें भेजा।
हाय! यह मेरा दुर्भाग्य है।

(41) *शाल-प् पन्-निरैप् पिन्ने तलै-क् कांविन् कील् त्*
*तन् तिरुमेनि निन्ऱु ऑळि तिहल्*
*नील नल्-नरुङ् कुञ्चि नेत्तिरत्ताल्*
*अणिन्दु पल्लायर् कुलाम् नडुवे*
*कोल-च् चेन्-तामरै-क्-कण् मिळिर-क्*
*कुऴल् उन्दि इशै पाड़ि-क् कुनित्तु आयरोडु*
*आलित्तु वरुहिन्ऱ आय-प् पिळ्ळै*
*अलुहु कण्डु ऍन् महळ् अयर्क्किन्ऱदे।*

भावार्थ

(गायों के पीछे आनेवाले मोरपंखधारी श्रीकृष्ण के दर्शन से गोपियों की प्रेमदशा)

गायों के पीछे आनेवाले मोरपंखधारी
बालक कृष्ण का शरीर शोभायमान है।
अपने सुन्दर चिकुरों का मोरपंख से श्रृंगार करके
आँखों में अंजन लगाकर
गोप बालकों के साथ
बाँसुरी बजाता बालक कृष्ण आ रहा है।
गीत गाते और नृत्य करते आनेवाले
बालक कृष्ण का सौन्दर्य देखकर
मेरी पुत्री प्रेमवश गद्‌गद हो उठती है।

(42) *नावल्-अम् पे॑रिय तीविनिल् वालुम्*
*नङ्गैमीर्गळ्! इदु ओर् अर्पुदम् केळीर्*
*तू-वलम्-पुरि युडैय तिरुमाल्*
*तूय वायिल् कुऴल ओशै वऴिये*
*कोवलर् शिऱुमियर् इळङ्-कोङ्गै*
*कुतूहलिप्प उडल् उळ् अविऴ्‌न्दु एॅङ्गुम्*
*कावलुम् कडन्दु कयिऱु मालै*
*आहि वन्दु कविऴ्‌न्दु निन्ऱनरे।*

भावार्थ

(वेणुगान)

जम्बू द्वीप की सुन्दर स्त्रियो!
एक अद्‌भुत घटना सुनो
दक्षिणावर्त शंखवाले श्रीमन् नारायण के पवित्र अधरों की
मुरली ध्वनि को सुनकर
गोपकन्याएँ अपने-अपने घरों से
लोक-लाज के नियमों को तोड़कर
बेतहाशा दौड़ी-दौड़ी आ रही हैं
उनके तरुण स्तन कुतूहल से हिल डोल रहे हैं
उनके शरीर तथा हृदय अवसन्न हो गए हैं

वे कन्याएँ रस्सी में बँधी माला के समान हैं
कान्हा के पास आकर लज्जा से सिर झुकाकर खड़ी हो गई।

(43) *करुङ्-कण् तोहै मयिल् पीलि अणिन्दु*
*कट्टि नन्गु उडुत्तु पीतक-आड़ै*
*अरुङ्-कल उरुविन् आयर् पेरुमान्*
*अवन् ओॅरुवन् कुल्ल ऊदिन-पोदु*
*मरङ्गल् निन्रु मदु तारेहळ् पायुम्*
*मलर्हळ् वीलुम् वळर् कोॅम्बुहळ् तालुम्*
*इरङ्गुम् कूम्बुम् तिरुमाल् निन्र्, निन्र*
*पक्कम् नोक्कि अवै शेॅय्युम् गुणमे।*

**भावार्थ**

मयूर पंख से सुशोभित, पीताम्बर तथा आभूषणों से अलंकृत गोपनायक अद्वितीय बालक कान्हा के मुरली बजाते समय तरुसमूह से मधुधाराएँ श्रावित होती हैं।
पेड़ों से पुष्प अपने आप गिर पड़ते हैं।
ऊँची-ऊँची टहनियाँ मुरली वादन सुनकर मदमस्त होती हैं।
वे सब विह्वल और गदगद् हो जाती हैं।
जहाँ-जहाँ श्रीमन्नारायण खड़े हैं,
उस दिशा की ओर वे मुँह मोड़कर वन्दना कर रही हैं।
कैसी अद्भुत हैं इन तरु समूहों की चेष्टाएँ।

(44) *वेॅण्णिर्-त् तोय् तयिर् तन्नै*
*वेळ् वरैप्पिन् मुन् ऍलुन्दु*
*कन् उरङ्गादे इरुन्दु*
*कढ़ैयवुम् तान् वल्लळ् कोॅलो।*
*ओॅण्णिर-त् तामरै-च् चेॅङ्कण्*
*उलहु अळन्दान् ऍन् महळै*
*पण्णरैया प् पणि कोॅण्डु*
*परिशु अर आण्डिडुङ कोलो।*

भावार्थ

(माता की पुत्री के विषय में चिन्ता)

[पुत्री को घर में न देखकर माता चिन्तित होने लगती है। यही सोचती है कि अवश्य कान्हा ही उसको अपने साथ ले गया होगा। क्या यह नियम के अनुसार उसके साथ विवाह करेगा? क्या वह ससुराल में मथने-बिलोने आदि कार्य में कुशल होगी?]

क्या मेरी बेटी सोचे बिना
उषाकाल के पहले ही जागकर
धवल वर्णनवाले दधि का मन्थन करने में सफल होगी क्या?
उज्ज्वल वर्णन अरुण लोचनवाले लोकरक्षक-कृष्ण
मेरी पुत्री को नियमरहित सेवा कार्य में लगाकर
अनादर के साथ शासन करेगा क्या?

(45) *कदिर् आयिरम् इरवि कलन्दु*
*ऍऱित्ताल् ऒॅत्त नीळ् मुड़ियन्*
*ऍदिर् इल् पॆॅरुमै इरामनें*
*इरुक्कुम् इडम् नाडुदिरेल्*
*अदिरुम् कऴल् पॊॅरु तोळ्*
*इरणियन् आहम् पिळन्दु अरियाय्*
*उदिरम् अळैन्द कैयोडु इरुन्दाने*
*उळ्ळवा कण्डार् उळर्।*

भावार्थ

[इस पद में भी विष्णुचित्त को एक विलक्षण भगवदनुभव होता है। राम, कृष्ण दोनों विष्णु के अवतार हैं। राम की खोज करनेवाले उनको नरसिंह में पाते हैं। राम कृष्ण में रूप भेद हैं पर धर्मी एक है।]

अगर तुम उस स्थान की खोज में हो
जहाँ राम रहते हैं
राम की महिमा अतुलनीय है
उनका मुकुट सहस्र किरणवाले
सूर्य से मिलकर दीप्तिमान हैं तो सुनो
युद्धप्रिय हिरण्यकशिपु के शरीर को जिन्होंने
हरिरूप लेकर फाड़ डाला।

रक्तरजित हस्तों से भक्त ने प्रभु का
साक्षात्कार किया
(यहाँ प्रश्न राम के विषय में हैं। उत्तर नरसिंह के विषय में हैं। मतलब जो राम हैं, वही नरसिंह हैं)

(46) *पल पल नाल़म् शॊल्लि-प् पलित्त शिशुपालन् तन्नै*
*अलवलैमै तविर्त्त अल्हन् अलङ्कारन् मलै*
*कुल-मलै कोल मलै कुळिर् मा-मलै कॊऱ्ऱ-मलै*
*निल-मलै नीण्ङ-मलै तिरु मालिरुञ् चोलैयदे।*

भावार्थ

[इस पद में सप्तगिरि का वर्णन है]
अनेक प्रकार से निन्दा करनेवाले
शिशुपाल का वध करनेवाले प्रभु का पर्वत है।
यह सौन्दर्यश्री और अलंकारमय पर्वत है।
यह भक्त कुलों का पर्वत है।
यह सौन्दर्य पर्वत है।
यह शीतल विपुल पर्वत है।
यह दिव्य पर्वत है।
यह हरा-भरा पर्वत है।
यह गगनचुम्बी पर्वत है।

(47) *कुरळ्-पिरम-चारियाय् मावलियै-क्*
*कुरुम्बु अदक्कि अरसु वाङ्गि*
*इऱै-प् पॊलुदिल् पाताळम् कल-विरुक्कै*
*कॊडुत्तु उहन्द ऍम्मान् कोयिल्*
*एऱिप्पु-उड़ैय मणि वरै मेल़ इळ-ञायिरु*
*एलुन्दार् पोल् अरवणैयिन् वाय्*
*शिऱप्पु उदैय पणङ्गळ् मिशै-च्*
*चेलु मणिगळ् विट्टु एरिक्कुम् तिरु-अरङ्गमे।*

भावार्थ

[इसमें श्रीरंगधाम का वर्णन है]
वामन ब्रह्मचारी का अवतार लेकर
महाबलि का गर्व भंगकर

पाताल को राजधानी बनाकर
हमें प्रसन्न करनेवाले प्रभु का आलय श्रीरंग है
इस श्रीरंगधाम में
शेष-शय्या के उत्कृष्ट फणों में
मणि प्रकाशमान है।
वह ऐसा दीख रहा है
मानो उज्ज्वल मणिपर्वत पर उदित
बाल सूर्य प्रकाशमान हो?

(48) *उऱहल् उऱहल् उऱहल्*
*ओॅण् शुड्र् आलिये। शङ्के*
*अऱ् ऍऱि नान्दक वाळे।*
*अल्गिय शारङ्कमे! तण्डे!*
*इरवु पडामल् इरुन्द*
*ऍण्मर् उलोक पालीरगाळ्*
*पऱवे अरैया! उरहल् पळ्ळि अरै कुरिक् कोॅण्मिन्*

**भावार्थ**

[इस पद में भक्त, विष्णु के शंख, चक्र, वाहन गरुड़, सबसे प्रार्थना करता है कि सोये बिना प्रभु की देखभाल करना]

सोओ मत, सोओ मत, सोओ मत,
ज्योतिर्मय चक्र! शंख!
शत्रुओं को नाश करनेवाले नन्दक खड्ग
सुन्दर शारङ्ग! गदा!
अपने कर्म से पथभ्रष्ट न होनेवाले हे पक्षीराज गरुड़ सोओ मत!
परमात्मा के शयनागार की खूब देखभाल करो!

(49) *तड वरै वाय् मिलिर्न्दु मिन्नुम्*
*तवळ नॆॅडुङ् कोॅडि पोल्*
*शुड्र ओॅळियाय् नॆॅञ्चिन् उळ्ळे*
*तोन्ऱुम् ऍन् शोदि नम्बी!*
*बड़ तडमुम् वैकुन्दमुम्*
*मदिळ् तुवरापतियुम्*
*इड़वगैगळ् इहल्न्दिट्टु*
*ऍन् पाल् इट वगै कोॅण्डनैये।*

**भावार्थ**

[प्रभु का आश्रय पाकर भक्त, स्वामी की प्रशंसा करता है]

ऊँचे पर्वत पर चमकनेवाले
धवल ध्वज के जैसे कान्तिमान होकर
मेरे हृदय के भीतर आर्विभूत मेरे ज्योति
गुणपूर्ण कृपालु भगवान्!
क्षीरसागर वैकुण्ठ प्राकार से घिरा द्वारावती
अपने इन सब निवास स्थानों को छोड़कर
मेरे हृदय में आकर तुमने स्थान ग्रहण किया है।
(तुम्हारी महिमा अपार है।)



# आण्डाळ

## (गोदा देवी)

आण्डाळ के जन्म के बारे में यह जनश्रुति प्रसिद्ध है कि आण्डाळ का जन्म सामान्य रूप से नहीं हुआ। परम विष्णुभक्त विष्णुचित्त (पे ॅरियाल़वार) को अपनी पुष्पवाटिका में तुलसी दल को पानी सींचते समय रहस्यमय ढंग से शिशु रूप में आण्डाळ प्राप्त हुई थी। शिशु का नाम गोदा 'कोदै' रखा गया। तमिल़ में 'कोदै' का शब्दार्थ पुष्प के सदृश कोमल, कमनीय होता है।

आण्डाळ की जन्मतिथि के सम्बन्ध में मुं. राघवय्यंगार के मत को अधिकतर विद्वानों ने स्वीकार कर लिया है। कात्यायनी व्रत के लिए मार्गशीर्ष में प्रतिदिन प्रातः किए जानेवाले स्नान को तमिल़ के संघकाल साहित्य में चाँद्रमान रीति के अनुसार 'पौष स्नान' कहा गया है। एक पद में सभी सखियों को जगाते हुए मार्गशीर्ष व्रत में प्रातःकाल शीतजल में आण्डाळ स्नान करने के लिए बुलाती है।

*"सभी गोप बालिकाएँ अम्बा पूजास्थल पहुँच गयी हैं। पूर्व दिशा में शुक्रोदय हो गया है और बृहस्पति अस्त हुआ है। पक्षी भी चारों दिशाओं में चहचहा रहे हैं।[1]"*

तमिल़ के प्राचीन साहित्य से शुक्रोदय की सूचना देते हुए प्रातःकाल होने की सूचना देना तो मिलता है परन्तु आण्डाळ यहाँ शुक्रोदय (Mercury) के अतिरिक्त गुरु (Jupiter) के अस्ताचल होने का भी उल्लेख करती हैं। आसमान की पूर्व दिशा में शुक्रोदय और पश्चिम दिशा में गुरु के अस्त को, एक और पश्चिम दिशा में गुरु के अस्त को एक साथ मान लें तो शुक्र और गुरु के मध्य दूर स्थिति 180 अंश है। राघवय्यंगार ने ज्योतिष शास्त्र की सहायता से पता लगाया कि सातवीं शताब्दी से नवीं शताब्दी तक किन वर्षों में मार्गशीर्ष महीने की पूर्णिमाओं के समय प्रातः पाँच बजे के पूर्व 165 से 180 अंश तक शुक्रोदय और गुरु का अस्त एक साथ हो। यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि अपनी आँखों देखी घटना का उल्लेख आण्डाळ ने अपने पदों में किया। ईस्वी 731 में 3-50 बजे से 4 बजे के बीच में शुक्रोदय गुरु का अस्त

1. तिरुप्पावै पद-13

हुआ है। इस आधार पर मान सकते हैं कि आण्डाळ का जन्म ईस्वी 715 के आसपास हुआ होगा।[1]

यह कथा बहुत प्रसिद्ध है कि प्रतिदिन गीत गाती हुई पिता के साथ बड़े प्रेम से भगवान के लिए माला गूँथा करती थी। यह माला श्रीरंगनाथ को समर्पित की जाती थी। बचपन से ही गोदा ने भगवान को मीरा की भाँति पति रूप में ही वरण कर लिया था। प्रभु के प्रेम में तल्लीन होकर गुँथी हुई माला को स्वयं पहले पहनकर भगवान के सामने खड़ी होकर कहती थी–

> "मैं सुगन्धित माला के साथ कैसी दिखती हूँ? क्या मैं आपकी योग्या पत्नी बन सकती हूँ?"

इस तरह स्वयं को सजाकर फिर उसे श्रीरंगनाथ को अर्पण करने के लिए भेजती थी। एक दिन पुष्पमाला में सिर का एक बाल चिपक जाने के कारण उसका भेद खुल गया। मन्दिर के पुजारी ने माला स्वीकार नहीं की। विष्णुचित्त को स्वप्न में एक आदेश मिला कि मुझे वही आण्डाळ की माला ही पहनाया करो। विष्णुचित्त अपनी कन्या की भगवत् भक्ति देखकर गदगद् हुए। तब से वे 'धृतमुक्तमाला नायिका' (शूडिक्कोडुत्त नाच्चियार) कहलाई।

गोदा अपने को गोपी मानकर गोपियों की तरह प्रेमानन्द होकर विरह में तड़पती रोती रहती है। कभी उनके साथ रासलीला करती है, कभी चीरहरण लीला होती, कभी पांचजन्य बजाकर वह प्रभु चित्त को चुरा लेती है। कभी वह रो-रोकर कोकिला जैसी मेघों से प्रार्थना करती है कि उसे वेंकटाद्रिनाथ से मिला दो। अपने संरक्षकों से यही कहती है–

*मेरे ये पीनपयोधर भगवान श्रीरंगनाथ के लिए उद्भूत है। उसी के लिए उपभोग्य ये स्तन हैं, साधारण मनुष्य के लिए नहीं हैं। किसी मनुष्य द्वारा इनके भोग का प्रस्ताव मात्र सुनकर मैं जीवित नहीं रह सकती। मुझे प्रभु से मिला दो।*[2]

*कृष्ण मेरे सामने आकर अपना मानस साक्षात्कार दिखाकर मुझे सता रहा है। अतः यह अपयश फैलने के पूर्व कि माता-पिता के रहते ही यह अपने मार्ग में चली गयी, मुझे श्रीकृष्ण से मिला दो।*[3]

भगवान रंगनाथ ने गोदा की भक्ति से प्रसन्न होकर उसको अपनी प्रियतमा के रूप में स्वीकार कर लिया था। विष्णुचित्त को आदेश प्राप्त हुआ कि गोदा को लेकर मन्दिर में उपस्थित हो जाए जहाँ गोदा का विधिवत् पाणिग्रहण किया जाएगा। स्वयं

---

1. आळ्वारकळ कालनिलै मु. राघवय्यंगार, विस्तृत विवरण के लिए देखें–*मीरा आण्डाल का तुलनात्मक अध्ययन,* डा. एन. सुन्दरम्, पृ. 49-52
2. नाच्चियार तिरुमोलि
3. नाच्चियार तिरुमोलि

आण्डाळ ने भी स्वप्न में देखा कि धूमधाम से उनका विवाह हो रहा है। इन्द्रादि देवगण पधारे हैं। स्वयं गिरिजा ने उसे 'मन्त्र-वस्त्र' पहनाये। गोपाल उसके हाथ पकड़कर 'अग्नि परिक्रमा' कर रहे हैं।

यह भी प्रसिद्ध है कि पेरियाल़्वार अपनी पुत्री को श्रीरंग क्षेत्र ले आये। गर्भ-ग्रह में (मूल स्थान) प्रवेश करते ही वह रंगनाथ की प्रतिमा में विलीन हो गयी।

तब से गोदा आण्डाळ के नाम से प्रसिद्ध हुई। आण्डाळ शब्द का अर्थ 'जिसने भगवान को प्राप्त किया' लिया गया है।

गोदा देवी के भगवान में विलीन हो जाने के उपरान्त पॆरियाल़्वार अपनी पुत्री के वियोग पर गद्गद् होकर कहने लगे–

*मैंने अपनी इकलौती पुत्री को लक्ष्मी के सदृश पाला-पोसा और उसे रक्तनेत्र श्रीरंगनाथ ने मुझसे छीन लिया।*

राजाजी जैसे कुछ विद्वानों का विचार है कि आण्डाळ विष्णुचित्त की पाली-पोसी पुत्री नहीं है, वह केवल उनकी मानस पुत्री है। उनकी मान्यता है कि पॆरियाल़्वार ने अपने को ही गोदा मानकर भगवान को पति रूप में वरण किया है। परन्तु यह कथन युक्तिसंगत प्रतीत नहीं होता।[1]

## आण्डाळ की रचनाएँ

आण्डाळ द्वारा विरचित दो ग्रन्थ–1. तिरुप्पावै, 2. नाच्चियार तिरुमॊऴि

## तिरुप्पावै

यह 30 सुन्दर पद्यों का मुक्तक काव्य है। तिरुप्पावै शब्द का अर्थ श्रीवृत्त। पावै का शब्दार्थ प्रतिमा होता है। भागवत् में वर्णित गोपियों के सदृश्य बालू से निर्मित कात्यायनी देवी की पूजा का अनुकरण, यहाँ आण्डाळ गोपियों के रूप में करती है। तिरुप्पावै में वर्णित देवी व्रत के रूप में श्रीकृष्ण से मिलने की प्रार्थना ही इस काव्य का विषय है। सम्पूर्ण काव्य 'कोचक्कक् कलिप्पा' नामक तमिल़ छन्द में रचित है।

तिरुप्पावै में वर्णित व्रतानुष्ठान इस प्रकार है–गोपियों का श्रीकृष्ण के साथ विहार करना व्रजभूमि के गोप-वृद्धों को अच्छा न लगा। गोप वृद्धों ने अपने-अपने घर की कोठरी में गोपियों को बन्द कर दिया। गोपियाँ कृष्ण मिलन के लिए तड़पती रहीं। दैवयोग से व्रजभूमि में अकाल पड़ गया। अकाल से बचने के लिए गोपियों को व्रतानुष्ठान करके वर्षा के लिए प्रार्थना करने की अनुमति मिली। अनुमति पाकर सभी गोपियाँ निश्चय करती हैं कि प्रातःकाल यमुना जाकर बालू से देवी कात्यायनी की

---

1. विस्तृत विवरण के लिए देखें–*मीरा आण्डाळ का तुलनात्मक अध्ययन*–डॉ. एन. सुन्दरम् पृ. 49-52

प्रतिमा उषाकाल के पूर्व के ही प्रथम जोगी दूसरी को जगाकर सब कृष्ण को जगाने के लिए नन्द गोप के यहाँ जाती हैं। द्वारपालक, नन्दगोप, यशोदा, बलराम, नप्पिन्नै (राधा) को जगाकर व्रतानुष्ठान के लिए आवश्यक व्रतोपकरण के रूप में भगवान के नित्य कैंकर्ण प्राप्त करने हेतु प्रार्थना करती हैं। तिरुप्पावै में 30 पद हैं इन पदों को मार्गशीर्ष महीने में तमिल़नाडु के भक्त भक्ति श्रद्धा के साथ गाते हैं। इसको पावै व्रत कहते हैं। यह कन्याओं का व्रत है।

## नाच्चियार तिरुमों ल़ि

## (गोदा श्रीसूक्ति)

इस ग्रन्थ में चौदह दशक अर्थात् 143 पद्य हैं। **प्रथम दशक** में गोपियाँ कामदेव से प्रार्थना करती हैं कि कृष्ण से मिला दें।

**दूसरे दशक** में गोपियाँ श्रीकृष्ण के न आने पर मान दिखाती हुई आक्रोश प्रकट करती हैं।

**तीसरे दशक** में चीरहरण लीला का मार्मिक चित्रण है।

**चौथे दशक** में मिलन के उपरान्त गोपियाँ पुनः मिलने के लिए शकुन परीक्षा की क्रीड़ा खेलती हैं।

**पाँचवें दशक** में गोदा कोकिल के पैरों पड़कर कृष्ण को बुलाने की प्रार्थना करती हैं।

**छठे दशक** में स्वप्न में रंगनाथ के साथ सम्पन्न विवाह-संस्कार का वर्णन करती हैं।

**सातवें दशक** में अकेले श्रीकृष्ण के अधर पान करनेवाले पाँचजन्य से ईर्ष्या भाव प्रकट करती हैं।

**आठवें दशक** में मेघ सन्देश का हृदय-विदारक वर्णन है।

**9, 10, 11** दशकों में विरह-व्यथा का वर्णन है।

**12वें दशक** में विरह से पीड़ित गोपियाँ अपने माता-पिता से कृष्ण के क्रीड़ा-स्थान मथुरा में पहुँचा देने की प्रार्थना करती हैं।

**13वें दशक** में कृष्ण से सम्बन्ध रखनेवाली कोई-न-कोई वस्तु अर्थात् तुलसी, पीताम्बर, अधर-रस लाकर अपने शरीर पर लेपन करने की प्रार्थना करती हैं।

**14वें दशक** में कृष्ण के संयोग का वर्णन है। इस संयोग आनन्द को सखियों के सम्भापण रूप में वर्णन करती हैं। इस अन्तिम दशक में वृन्दावन में ब्रजमोहन के साक्षात्कार का वर्णन है।



# तिरुप्पावै

(1) *मार्गलि - तिङ्गक् मदि निरैन्द नन् - नाळाल्*
*नीराड-प्-पोदुवीर्। पोदमिनो नेर्-इलैयीड*
*शीर्-मलुहम् आय्-प्पाड़ि-च्-चेलव-चिरुमीरकाळ।*
*कूर् - वेल् कॉडुम तॉलिलन् नन्दगोपन् कुमरन्*
*एरान्दे - कण्णि यशोदै - इळम् - शिङ्गम्*
*कार - मेनि-च-चेङकण् कदिर - मदियम् - पोल मुकत्तान्*
*नारयणने नमक्के पऱै तरुवान्*
*पारोर् पुगल़ - प् - पडिन्दु एलोर् - ऍम्पावाय्।*

भावार्थ

श्रीसमृद्ध दिव्य आभूषण धारिणी स्नानेच्छुक ब्रजबालाओ, सबके सब आओ!
आज मार्गशीर्ष मास के पूर्णमासी का शुभ दिन है।
तीक्ष्ण शस्त्रों से शत्रुसंहारक क्रूर नन्दगोप का सुपुत्र
सुनयना यशोदा देवी का बालसिंह
नीलमेघ सदृश कांतियुक्त, रक्त नेत्र एवं रवि चन्द्र सदृश मुखवाला
श्रीमन्नारायण ही हमें
हमारे मनोवांछित फल (पऱै) प्रदान करेगा।
हम सब इस मार्गशीर्ष के व्रत में ऐसे अवगाहन करें जिससे
संसार के समस्त जनों की प्रशंसा का पात्र बन जाएँ।

(2) *आलि - मलैक्कण्णा! ओॅन्रु नी कै करवेल्*
*आलियुळ् पुक्कु मुहन्दुकॉडु आर्तु एरि,*
*ऊलि, मुदल्वन्-उरुवम् पोल् मेय् करुतु,*
*पालि-अम्-तोलुड़ै-प्-परपनापन् कैयिल्*
*आलि पोल् मिन्नि वलम्पिरि पोल् निन्रु अदिर्न्दु,*
*ताळादे शार्ङ्गम् उदैत्त शर - मलै पोल्,*

*वाल़् उलहिनिल पॅय्दिडाय्, नाङ्गलुम्*
*माऱ्गलि़ नीराड़ महिल़न्दु एलोर ऍम् - पावाय्।*

भावार्थ

हे उदारमना, गम्भीर पर्जन्य देव,
तुम जलवृष्टि में संकोच न किया करो।
समुद्र में प्रविष्ट होकर खूब जल भरकर गर्जन करते हुए
आसमान पर चढ़कर
काल के कारणभूत, प्रलय के
आदिपुरुष भगवान के सदृश
नील वर्ण धारणकर विशाल एवं सुन्दर भुज
भगवान पद्मनाथ के हाथ में सुशोभित
चक्रायुध की भाँति चमकनेवाले वलम्पुरी शंख के सदृश गर्जनकर,
शारङ्ग धनुष की शर वर्षा की भाँति बरसकर
संसारवासियों को आनन्दित कर दो जिससे हम भी
मार्गशीर्ष व्रत का स्नान, सन्तोष के साथ कर सकें।

(3) *कीऴ़ - वानम् वॅळ्-ळॅन्ऱु ऍरुमै शिरु वीडु*
*मेॅय्वान् परन्दर काण्! मिक्कुळ्ळ पिळ्ळैकळुम्*
*पोवान् पोकिन्ऱरै-प्-पोहामल् कात्तु उन्नै-क्*
*कूवुवान् वन्दु निन्ऱोम् कॉतुकलम्-उड़ैय*
*पावाय्! ऍलुन्दिराय् पाड़ि-प्-पऱै कोण्डु*
*मावाय् पिळन्दानै मल्लरै माट्टिय,*
*देवादिदेवनै-च्-चॅन्ऱु नाम् शेवित्ताल्*
*'आ व' ऍन्ऱु आराय्न्दु अरुळ ऍलोर् एम्-पावाय्।*

भावार्थ

हे कौतूहलमयी! पौ फट गया। पूर्व दिशा प्रकाशवान हो गयी।
भैंसें घास चरने के लिए चारों दिशाओं में निकल गयी हैं।
तुम्हें छोड़कर शेष समस्त वालाएँ शय्या का त्याग कर चुकी हैं।
मार्ग में उन्हें रोककर हम तुम्हें साथ ले जाने के लिए आयी हैं।
हे प्रतिमे जागो!
कृष्ण का गुणगान गाकर

केशि और मल्ल का संहार करनेवाले
देवों का देव श्रीकृष्ण के निकट जाकर
उनका गुणगान करने से हमारे प्रार्थना-जन्य कष्टों पर खेद प्रकटकर
वे हमें कृपा प्रदान करेंगे।

(4) *तू मणि माडत्तु - च्-चुररुम् विळक्कु ऍरियत्,*
*तूपम् कमल़-त्-तुयिलणै मेल् कण्-वळरुम्,*
*मामान्! अवळै ऍल़ुप्पीरो? उम्-महळ्-तान्*
*ऊमैयो, अन्रि च् चॅविड़ो अनन्तलो*
*एम्-प्-पॅरून्तुयिल् मन्दिर-प्-पट्टाळो?*
*मा-मायन् मादवन् वैकुन्दर ऍन्रु ऍनरु*
*नामम् पलवुम् नविन्रु एलोर ऍम्-पावाय्!*

भावार्थ

धूप की सुगन्धि से सुगन्धित
अनन्त दीपकों से जगमगाती हुई
शुद्ध रत्नमयी अटारी पर कोमल शय्या पर लेटी हुई
हे ममेरी पुत्री, मणिमय कपाट खोलो।
हे मामी उसको जगाओ।
तुम्हारी पुत्री गूँगी, बहरी है, अलसाई हुई है या
मन्त्रमुग्ध है या तुमने उसे बन्दिनी बना दिया है।
हम मायावी माधव, केशव बैकुण्ठ आदि अनेकानेक नामों से
कितनी बार भगवान की स्तुति करके हम उसे जगा चुकी हैं।

(5) *पुळ्ळिन वाय् कीण्ड़ानै-प्!-पॉल्ला अरक्कनै*
*किळ्ळि-क्-कळैन्दा-क्-कीर्त्तिमै पाड़ि-प्-पोय्*
*पिळ्ळैगळ् ऍल्लारुम् पावै-क्-कळम्पुक्कार्,*
*वॅळ्ळि ऍलुन्दु वियाल़म् उऱङगिररु*
*पुळ्ळुम् शिलम्बिन काण् पोदरि क्-कण्णिनाय्!*
*कुळ्ळ-क्-कुळिर-नॅक् कुड़ैन्दु नीर्-आडादे*
*पळ्ळि किडत्तियो? पावाय् नी नन्नाळाल्*
*कळ्ळम् तविर्न्दु कलन्दु एलोर् ऍम्-पावाय्!*

भावार्थ

वकुला का मुख चीरकर जिसने वध किया है
जिसने दुष्ट रावण का संहार किया है

उस प्राणप्रिय की स्तुति करती हुई सब बालिकाएँ
अम्बा पूजास्थल पहुँचने लगी हैं।
शुक्रोदय हो गया है और बृहस्पति अस्त हो गया है।
पक्षीगण चतुर्दिक् कलरव करने लगे हैं
हे कुवलयनयने प्रतिमा-सी सुन्दरी
शीतल जलाशय में अवगाहन करने की शुभ वेला में
आओ हमारे साथ मिल जाओ!

(6) *उन्दु मद-कळिऱ्रन ओड़ाद तोळ्-वलयन्*
*नन्द गोपालन्—मरुमहळे! नप् पिन्नाय!*
*गन्दम् कमलुम् कुऴली! कड़ै तिऱवाय्*
*वन्दु एँङ्गुम् कोऴि अऴैत्तन् काण् मादवि-प्*
*पन्दऱ् मेल् पल् - काल् कुयिल् - इनङ्गळ् कूविन काण्*
*पन्दार-विरलि! उन् मैत्तुनन् पेऱ् पाड़च्*
*शेन्दामरै-क्-कैयाल् शीराऱ् वळै ऑलिप्प*
*वन्दु तिऱवाय् महिऴ्न्दु एलोऱ् ऍम्-पावाय्!*

**भावार्थ**

हे मातंग सदृश शक्तिशाली अद्वितीय बलशाली
नन्दगोप की पुत्रवधू सुगन्धित केशवाली नप्पिन्नै
सर्वत्र मुर्ग़े बाँग दे रहे हैं
माधवी कुंजों में कोकिल अनवरत कूक रहे हैं
कुन्दक हस्ते! हम तुम्हारे प्रियतम का यशोगान कर रहे हैं।
तुम अपने रक्तकमल सदृश करों के
कंकण की मधुर ध्वनि के साथ प्रसन्न चित्त, अर्गला खोलो।

(7) *कुत्तु - विळक्कु ऍरिय-क्-कोट्टु-क्-काल् कट्टिल मेल्*
*मॅत्तेन्नऱ् पञ्च शयनित्तऱ् मेल् एऱि*
*कॉत्तलर् पूङ् कुऴल् नपिन्नै-कॉङ्गै मेल्*
*वैत्तु-क्-किडन्द मलर् मार्पा! वाय् तिऱवाय्;*
*मैत्-तड़-ङ् कण्णिनाय्! नी उन् मणाळनै*
*ऍत्तनै पोदुम तुयिल ऍऴ ऑट्टाय् काण्*
*ऍत्तनैयेलुम् पिरिवु आऱ्र-किल्लाय् आल्;*
*तत्तुवम् अन्ऱु तहवु एलोऱ् ऍम्-पावाय्!*

भावार्थ

चारों तरफ़ (पंचमुखी) दीप-प्रभा के मध्य
गजदन्त से निर्मित पंचगुण (सौन्दर्य, शैत्य, मार्दव, सुगन्ध, धवलता से सम्पन्न)
शय्या पर पड़ी
विकसित सुगन्धित पुष्प गुच्छों से अलंकृत केशवाली
नप्पिन्नै के स्तन पर शयन करनेवाले
हे विकसित पुष्पसदृश प्रियतम! हमारी बातें सुनो।
हे अंजनभूषित विशालनयने! (नप्पिन्नै)
तुम अपने पतिदेव श्रीकृष्ण को
क्षणभर के लिए भी शय्या से उठने नहीं देती।
थोड़ी देर के लिए मैं उनका वियोग सहन नहीं कर सकती
ऐसा करना उचित नहीं है।

(8) *मारि मलै-मुऴैञचिल् मन्नि क् किड़न्दु उऱङ्गुम्*
*शीरिय शिङ्गम् अऱिवुऱ्रु - त् ती विऴित्तु*
*वेरि मयिर् पों ड्ग ऍप्पाडुम् पेर्न्दु उदऱि*
*मूरि निमिर्न्दु मुऴङ्गि - प् पुऱप्पट्टुप्*
*पोदरुमा पोले नी पूवैप्पू - वण्णा! उन!*
*कोयिल् निन्रु इङ्ङने पोन्दरुळि, कोप्पुडैय*
*शीरिय सिङ्गाशनत्तु इरुन्दु याम् वन्द*
*कारियम् आराय्दु अरुळ् ऍलोर् ऍम-पावाय्!*

भावार्थ

वर्षाकाल में गिरि गह्वर में
अपनी सिंहनी के साथ प्रगाढ़ निद्रा में मग्न सिंह जागकर
आग उगलती दृष्टि से इधर-उधर देखकर
केश राशि बार-बार हिलाते हुए,
अंगड़ाई लेकर गम्भीर गर्जन करते हुए
जैसे ही बाहर आता है वैसे ही
अतसी पुष्प सदृश रंगधारी श्रीकृष्ण, तुम अपने महल से निकलकर
सुन्दर कलात्मक सिंहासन पर विराजो और
यहाँ आने के हमारे उद्देश्य पर विचार करो।

(9) *अन्रु इव्उलहम् अळन्दाय् अड़ि पोऱ्ऱि!*
*शेन्ऱु अङ्गु-त् तॅन्निलङ्कै - चेराय् तिऱल् पोऱ्ऱि!*
*पॉन्ऱ-च् चकटम् उदैत्ताय् पुहऴ् पोऱ्ऱि!*
*कन्ऱु कुणिला ऍऱिन्दाय् कऴल पोऱ्ऱि!*
*वॅन्ऱ पहै कॅडुक्कुम् निन् कैयिल् वेल् पोऱ्ऱि!*
*ऍन्ऱु एन्ऱु उन् शेवकमे एत्ति-प् पऱै कॉळ्वान्*
*इन्ऱु याम् वन्दोम् इरङ्गु एलोर् ऍम्-पावाय्!*

भावार्थ

तुमने अपने जिन चरणों से तीनों लोकों को नापा
उन श्रीचरणों की जय हो, जय हो।
दक्षिणस्थित सुन्दर लंकापुरी का नाश करनेवाले
तुम्हारे पराक्रम की जय हो, जय हो
तुमने कपटी शकटासुर के शकट रूप का विनाश किया है।
तुम्हारे यश की जय हो, जय हो।
गोवर्धन पर्वत को छत्ररूप में धारण करके तुमने इन्द्र का गर्व भंग किया है।
तुम्हारी महिमा की जय हो, जय हो
शत्रुओं का संहार करके द्वेष को समाप्त करनेवाले
तुम्हारे हाथ में स्थित चक्रायुध की जय हो, जय हो
तुम्हारी (सौशील्य और सौलभ्य गुणों की) स्तुति कर
व्रत का मनोवांछित फल प्राप्त करने हेतु हम आयी हैं।

(10) *ओरुत्ति मकनाय्-प पिऱन्दु ओर् इरविल्*
*ओरुत्ति महानाय् ऑळित्तु वळरत्*
*तरिक्किलान् आहि-त् तान् तीङ्गु निनैन्द*
*करुत्तै-प् पिऴैप्पित्तु-क् कञ्चन वयिऱ्ऱिल्*
*नॅरुप्पेन्न निनर् नॅडुमाले उन्नै*
*अरुत्तित्तु वन्दोम् पऱै तरुदियाहिल्*
*तिरु-त् तक्क डॉल्वमुम् शेवकमुम् याम् पाडि*
*वरुत्तमुम् तीरन्दु मकिऴन्दु एलोर् ऍम्-पावाय्!*

भावार्थ

दूसरे के घर जन्म लेकर चुपके से
दूसरे के घर में आकर चलनेवाले और
विनाश की कामना करनेवाले (कंस) के हृदय की ज्वाला बनकर

उसकी दुराशा को मिटाते हुए उसका वध करनेवाले,
हे व्यामोही परमेश्वर,
तुमसे मनोवांछित फल पाने के उद्देश्य से हम सब आयी हैं।
यदि हमें अपेक्षित फल दे दोगे तो
तुम्हारे लक्ष्मीसम्पन्न ऐवर्श्य और पराक्रम का यशोगान करते हुए
हम सब अपने विरह दुःख को मिटाकर आनन्द प्राप्त करेंगे।

(11) *माले! मणि-वण्णा! मार्गलि नीराडुवान्*
*मेलैयार् शेयवनगळ् वेण्डुवन केट्टियेल्;*
*ञालत्तै ऍल्लाम् नडुङ्ग मुरलवन*
*पालन्न वण्णत्तु उन् पाञ्च-चन्नियमे*
*पोल्वन शङ्कङ्गळ् पोय्-प् पाडु-उडैयनवे*
*चाल-प् पॅरुम्परैये पल्लाण्डु इशैप्पारे*
*कोल-विळक्के कोॅडिये वितानमे*
*आलिन् इलैयाय्! अरुळ् एलोर् ऍम्-पावाय्!*

**भावार्थ**

हे व्यामोहक, नीलमणि सदृश श्यामल,
महाप्रलय काल में वट दल पर शयन करनेवाले
पूर्वजों के आचरण में आये
मार्गशीर्ष स्नान करने निमित्त हमारी अपेक्षित वस्तुओं को सुनो।
विश्व को विकम्पित करनेवाल, ध्वनि से संयुक्त
तुम्हारे क्षीरोज्ज्वल पांचजन्य सदृश शंख,
अत्यधिक विशाल मेरे मंगलशासन करने के लिए
वैतालिक (गायक) मंगलदीप, विजय पताका और शुभ-वितान
हमें देने की कृपा करो।

(12) *कूडारै वॅल्लुम शीर्-क् कोविन्दा! उन्-तन्नै-प्*
*पाड़ि-प् परै कॉण्डु पॅरूम् शम्मानम्;*
*नाडु पुहलम् परिशिनाळ् नन्राहच्*
*चूड़गमे तोळ्-वळैये तोड़े शॅवि-प् पूवे,*
*पाड़गमे ऍन्रनैय पल्-कलनुम् याम् अणिवोम्;*
*आड़ै उडुप्पोम् अदन् - पिन्ने पाल्-चोरु*
*मूड नॅय् पॅयुदु मुलङगै वलि वारक्*
*कूडि इरुन्दु कुळिर्न्दु एलोर ऍम्-पावॉय्!*

भावार्थ

विमुख जनों को भी आकृष्ट करने में समर्थ गुणवान
हे गोविन्द, तुम्हारी स्तुति कर व्रतोपकरण करने के अतिरिक्त
हम सब तुमसे कुछ और अपेक्षा रखती हैं।
प्रशंसनीय चूड़ी, कंकण, कर्णकुण्डल, कर्ण पुष्प, पग नूपुर (पैंजनी) इत्यादि
अनेकानेक आभूषण हम तुमसे प्राप्त करके पहनेंगी।
तदुपरान्त घृत से आपूर श्रीरान्न हम सब एक साथ तन्मयता से सेवन करेंगे।

(13) *कऱवैकळ् पिन् शॅन्ऱु कानम् शेर्न्दु उण्पोम्*
*अऱिवु - ओन्ऱुमिल्लाद आय्-क् कुलत्तु उन्-तन्नै-प्*
*पिऱवि पॅरुन्दनैप् पुण्णियम् याम् उड़ैयोम्;*
*कुऱैवु ऑन्ऱुम् इल्लाद कोविन्दा् उन् तन्नोडु*
*उऱ्वेल नमक्क इङ्गु ऑऴिक्क ओऴियादु;*
*अऱियाद पिळ्ळै गळोम् अन्पिनाल् उन्-तन्नै - च्*
*चिरु-पेर् अऴैत्तनवुम् शीऱि - अरुळादे*
*इऱैवा! नी ताराय् पऱै एलोर् ऍम्-पावाय्!*

भावार्थ

हम सब गायों के पीछे-पीछे वन में पहुँचकर भोजन करेंगी।
सर्वथा ज्ञानशून्य हम गोपों के कुल में इतना पुण्य तो है कि
तुमने उसमें जन्म लिया है।
हे निर्दोष गोविन्द! तुम्हारे साथ हम गोपियों का
किसी भी स्थिति में सम्वन्ध विच्छेद नहीं हो सकता।
ज्ञानशून्य हम बालाओं ने तुम्हें प्रेमवश ही तुम्हारा नाम लेकर पुकारा है।
हे सर्वेश्वर, हमसे रुष्ट न होना।
हे भक्तवत्सल, हमको पुरुषार्थ प्रदान करो।

(14) *शिऱुम् शिऱू - काले वन्दु उन्नै-च् चेवित्तु उन्*
*पोर्ऱामरै अड़ियै पोर्ऱुम् पॉरुळ् केळाय्*
*पेऱ्रम् मेय्त्तु उण्णुम् कुलत्तिऱ पिरुन्दु नी*
*कुर्ऱवेल् ऍङ्गळै - क् कोॅळ्ळामल् पोहादु*
*इऱ्ऱै-प्! पऱै कॉळ्वान् अन्ऱु काण् कोविन्दा!*
*ऍऱ्ऱैक्कुम् एऴ्-एऴ् पिऱविक्कुम् उन्-तन्नोडु*
*उऱ्ऱोमे आवोम् उनक्के नाम् आट्-चॅय् वोमः;*
*मर्ऱै नम्-कामङ्गळ् मार्ऱु एलोर् ऍम्-पावाय्!*

भावार्थ

प्रातःकाल में यहाँ आकर
तुम्हारे स्वर्णसदृश पादारविन्दों की स्तुति करने के पीछे
हमारा कुछ उद्देश्य है, उसे सुनो!
गो चारण पर जीवन व्यतीत करनेवाले कुल में जन्म लेकर
तुम्हें हमारे नित्य कैंकर्य से वंचित नहीं रहना चाहिए
हे गोविन्द, हम तुमसे मात्र व्रतोपकरण प्राप्त करने के लिए यहाँ नहीं आयी हैं।
हमारा तुम्हारा सम्बन्ध तो जन्म-जन्मान्तरों का है।
हम तुम्हारी सेवा में लगी रहेंगी।
इसके अतिरिक्त हमारे जो भी मनोरथ हैं, उन्हें समाप्त करो।

## नाच्चियार् तिरुमॉलि़

(15) *वानिड़ै वालुम् अव् वानवर्क्कु*
*मऱैयवर् वेळ्वियिल् वहुत्त अवि*
*कानिड़ै-त्-तिरिवोदोर् नरि पुहुन्दु*
*कड़प्पदुम् मोप्पदुम शॅय्वदोप्प*
*ऊनिड़ै आलि़ शङ्कु उत्तमर्क्कु ऍन्रु*
*उन्नित्तु ऍलुन्द एन् तड़-मुलैहळ्*
*मानिड़वर्क्कु ऍनरु पेच्चु-प्-पडिल्*
*वाल़किल्लेन् कण्डाय् मन्मदने!*

भावार्थ

हे मन्मथ! स्वर्गवासी देवताओं को ब्राह्मणों के द्वारा
याग में दिया गया हविष्य
जंगल में फिरनेवाले श्रृंगाल के सूँघने,
वहाँ से हटाये जाने पर वह अपवित्र हो जाता है।
वैसे ही शंख चक्रधर पुरुषोत्तम भगवान के लिए उद्भूत
मेरे इन पीन स्तनों का
किसी मनुष्य द्वारा उपभोग का प्रस्ताव मात्र से अपवित्र हो जाऊँगी
और मैं जीवित नहीं रह सकूँगी।

(16) *वॅळ्ळै नुणु - मणल् को`ण्डु शिऱ्रिल्*
*विचित्तिर - प् - पड़ वीदिवाय् - त्*
*तॅळ्लि नाङ्गल् इलैत्त कोलम्*
*अलि़त्तियाहिलुम् उन्-तन् मेल्*
*उळ्ळम् ओड़ि उरुहल्-अल्लाल्*
*कळ्ळ मादवा! केशवा! उन्*
*मुकत्तन कण्गळ् अल्लवे।*

**भावार्थ**

हमने वीथियों में धवल सिकता कणों से अद्भुत गृहों को बनाया है।
उन गृहों को तोड़ देने से तो हमारा हृदय टूट जाएगा।
फिर भी तुम्हारे ऊपर लेशमात्र भी क्रोधित नहीं होंगी।
ओ चोर माधव! क्रीड़ा-गृहों को नाश करने पर क्यों तुले हो?
केशव! तुम्हारे चेहरे पर आँखें नहीं हैं क्या!
इतने सुन्दर गृहों को देखकर
कोई भी उन्हें विनष्ट करना नहीं चाहेगा।

(17) *कञ्चन् वलै वैत्त अन्ऱु*
*कार् - इरुळ् ऍल्लिऱ् पिळैत्तु,*
*नेञ्ज दुक्कम् शॅय्य-प्-पोन्दाय्*
*निन्ऱ इक् कन्नियरोमै;*
*अञ्ज उरप्पाळ् अशोदै आण्*
*- आड़ विट्टिट्टु इरुकुम्*
*वञ्यक-प्-पेयूच्चि पाल्-उण्ड*
*मशिमैयिली! कूरै ताराय्।*

**भावार्थ**

सम्भवतः हम गोपियों को इस प्रकार जल में खड़ी करके
कष्ट देने के लिए ही तुम कंस से रचे मायाजाल से वचकर
गाढ़ान्धकार में छिपकर ब्रज जा पहुँचे हो।
माता यशोदा भी तुम्हें कभी नहीं डाँटती।
इसके विपरीत धूर्तता करने के लिए ही तुमको पाल-पोसकर वड़ा कर रखा है।
वंचकी पिशाची पूतना का स्तनपान करनेवाले हे निर्लज्ज! हमारे वस्त्र दे दो।

(18) *अन्रु इन्नादन् शे॑य् शिशुपालनुम्*
*निन्ऱ नीळ् मरुदुम ऍरुदुम पुळ्ळुम्*
*वे॑न्ऱि वेल् विरल्-कञ्चनुम् वील़ मुन्*
*को॑न्ऱवन् वरिल् कूड़िडु कूड़ले!*

भावार्थ

हे कूड़ल! दुष्कर्मी शिशुपाल,
यमलार्जुन रूपी वृक्ष, सप्त ऋषभ एवं बकासुर
तथा अत्यन्त शक्तिशाली कंस को विनष्ट करनेवाले भगवान श्रीकृष्ण
इधर आनेवाले हो तो मिल जाओ।
(शकुन परीक्षा को 'कूडलिलैत्तल' कहते हैं। नायिका मृत्तिका पर अनेक वृत्ताकार रेखाएँ अंकित करती हैं। अन्त में युग्म रेखाएँ शेष रह जाएँ तो प्रियतम का मिलन होगा और यदि एक ही रेखा बचे प्रियतम से मिलन नहीं होगा।)

(19) *ऍनुबु उरूहि इन वेल् नॅडुङ्-कण्गळ्*
*इमै पो॑रुन्दा पल नाळुम्*
*तुन्प-क् कड़ल् पुक्कु वैकुन्दन् ऍन्पदु ओर्*
*तोणि पे॑ऱादु उऴल्किनरेन्*
*अन्पु - उड़ैयारै-प् पिरिवुरु नोय् अदु*
*नीयुम् अरिदि कुयिले!*
*पो॑नपुरै मेनि - क् करुळ-क् को॑ड़ि-उ-प्*
*पुण्णियनै वर - क् - कूवाय्!*

भावार्थ

हे कोकिल, मेरा शरीर अस्थि में पिंजर मात्र रह गया है।
मेरी तीक्ष्ण बाण सदृश आँखों की पलकें गिरती ही नहीं।
मैं इस विरहजन्य दुःखसागर में
बैकुण्ठ नामक नाव के अभाव में भटक रही हूँ।
तुम भली भाँति जानते हो कि
प्रियतम से बिछुड़े रहने से कितनी विरह वेदना सहनी पड़ती है।
अतः स्वर्णसदृश शरीरयुक्त, गरुड़ ध्वज,
साक्षात् पुण्य रूप मेरे प्रियतम को यहाँ बुलाओ।

(20) *पो॑ङ्गिय पार् - कड़ल पळ्ळि कोळ्वानै-प्*
*पुणर्वदु ओर् आशैयिनाल् ऍन्*

*कॉड़्गै किळर्न्दु कुमैत्तु-क्-कुदुकलित्तु*
*आवियै आकुलम् शेंय्युम्*
*अङ् कुयिले! उनक्कु ऍन्न मरैन्दु उऱैवु*
*आलियुम् शङ्गुम् ओॅण्-तण्डुम्*
*तङ्गिय कैयवनै वरक्-कूविल् नी*
*शाल-त्-तरुम पेॅऱुदि।*

भावार्थ

हे सुन्दर कोकिल!
तरंगित क्षीरसागर में शयन करनेवाले प्रियतम से परिरम्भ करने निमित्त
अत्यधिक उत्साहयुक्त ये पीन पयोधर अब संश्लेष न हो पाने के कारण
मेरी आत्मा को आकुल कर रहे हैं।
मुझसे छिपकर रहने से क्या लाभ है?
शंख चक्र गदा से सुशोभित प्रियतम को यदि बुलाओगे तो
तुम्हें पुण्य प्राप्त होगा।

(21) *वारणम् आयिरम् शूऴ वलम्शेॅयुदु*
*नारण-नम्बि नड़क्किन्ऱान् ऍन्रू ऍदिर*
*पूरण-पोॅऱ् - कुडम् वैत्तु-प्-पुऱम् ऍङ्गुम्*
*तोरणम् नाट्ट-क् कना-क् कण्ड़ेन् तोऴी! नान्!*

भावार्थ

हे सखी! मैंने स्वप्न देखा कि
श्रीमन्नारायण सहस्रों हाथियों से परिवृत नगर में आ रहे हैं
मार्ग में सर्वत्र तोरण बँधे हुए हैं।
सभी लोग जल-पूर्ण स्वर्ण कलश लिए अगवानी कर रहे हैं।

(22) *नाळै वदुवै मणम् ऍन्ऱु नाळ्-इट्टु*
*पाळै कमुह परिशुड़ै-प्-पन्दऱ् कीऴ्*
*कोळ्-अरि मादवन् कोविन्दन् ऍन्पान् ओर्*
*काळै पुहुद-क् कना-क् कण्ड़ेन् तोऴी! नान्।*

भावार्थ

स्वप्न में सखी, मैंने देखा,
सबने आपस में विचार-विमर्श करके निश्चय किया
कि कल शुभ-विवाह सम्पन्न करेंगे

कदली, पूंग आदि से विवाह मण्डप सुशोभित था।
इस मण्डप में नृसिंह, माधव, गोविन्द प्रभृति नामवाले
अति सुन्दर पुरुष-ऋषभ को प्रविष्ट होते देखा।

(23) *मत्तळम् को ट्ट वरि-शङ्गम् निन्रु ऊद*
*मुत्तुड़ै–त् तामम्-निरै ताल्न्द पन्दल् कील़*
*मैत्तुनन् नम्बि मदुशूदनन् वन्दु ऍन्नै-क्*
*कैतलम् पट्र-क् कना-क् कण्ड़ेन् तोऴी नान्!–नान्।*

भावार्थ

हे सखी मैंने स्वप्न देखा,
मुक्ताओं से शोभित मण्डप में
रेखांकित शंख, मृदंग आदि बज रहे थे।
मेरे प्रियतम मधुसूदन भगवान श्रीकृष्ण ने आकर मेरा पाणिग्रहण किया।

(24) *इम्मैक्कुम् एल्-एल् पिऱविक्कुम् पट्रु आवान्*
*नम्मै उड़ैयवन् नारायणन् नम्बि*
*शे म्मै-उड़ैयतिरु-क् कैयाल् ताळ् पऱ्ऱि*
*अम्मि मिदिक्क-क् कना-क् कण्ड़ेन् तोऴि नान्!*

भावार्थ

हे सखी! मैंने स्वप्न देखा,
जन्म-जन्म के हमारे रक्षक आराध्यदेव श्रीमन्नारायण ने
अपने सुन्दर हाथों से मेरे चरणों को पकड़कर सिल पर रखा।

(25) *कुङ्कुमम् अप्पि-क् कुळिर् शान्दन मट्टित्तु*
*मङ्गल्-वीदि वलम् शेयुद् मण-नीर्*
*अङ्गु अवनोडुम् उडन् शे न्रु अङ्गु आनैमेल्*
*मञ्जनम् आट्ट-क् कना-क् कण्ड़ेन् तोऴी! - नान।*

भावार्थ

हे सखी मैंने स्वप्न देखा,
हमारे शरीर पर शीतल चन्दन, कुंकुम आदि का लेपन करके,
हम दोनों को हाथी पर बिठाया गया।
इस प्रकार नगर की अलंकृत वीथियों से परिक्रमा कराने के उपरान्त
हमें सुगन्धित जल से स्नान कराया गया।

(26) *करुप्पूरम् नारुमो कमल-प्पू नारुमो*
*तिरु-प् पवळ-च् चेव्वाय् तान् तित्तित्तु इरुक्कुमो!*
*मरुप्प ओ॑शित्त मादवन्-तन् वाय्-च् चुवैयुम् नाऱ्ऱमुम्*
*विरुप्पुऱ्ऱु-क् केटिकिन्ऱेन् शॉल् आलि वॅण्-शङ्गे!*

### भावार्थ

हे गम्भीर धवलशंख!
कुवलयापीड हाथी के दाँत तोड़नेवाले श्रीकृष्ण के
अधर का स्वाद एवं उसकी सुगन्ध के सम्बन्ध में
अधिक उत्कण्ठा होने के कारण पूछती हूँ
कहो कि सुन्दर प्रवाल सदृश प्रियतम का अधर
कर्पूर के समान सुगन्धित है या कमल पुष्पवत्
गन्धयुक्त है या मधुरतम है?

(27) *उण्पदु शोल्लिल् उलहु-अळन्दान् वाय् - अमुदम्*
*कण्-पड़ै वोऴ्ळिल कड़ल्-वण्णन् कैत् - तलत्ते*
*पॅण्-पड़ैयार् उन् मेल् पे॑रूम् पूशल - शाऱ्ऱुहिन्ऱार्*
*पण् पल शे॑य्किन्ऱाय् पाञ्जन्नियमे!*

### भावार्थ

हे पांचजन्य! तुम्हारा भोजन है, त्रिविक्रम भगवान का अधरामृत।
तुम्हारा शयन-गृह, सागर वर्णवाले भगवान का कर स्थल है।
सारा स्त्री वर्ग ही तुम्हारे ऊपर दोपारोपण कर रहा है।
तुम अधिक ही अनुचित कार्य कर रहे हो!

(28) *पदिनाऱ्ऱम् आयिरवर् देविमार् पाऱ्त्तु इरुप्प*
*मदु वायिऱ् को॑ण्डाऱ् पोल् मादवन् तन् वाय् अमुदम्*
*पो॑दुवाह उणपदनै-प् पुक्कु नी उण्डक्काल्*
*शिदैयारो उन्नोडु शे॑ल्व-प् पे॑रूम् शङ्गे!*

### भावार्थ

हे सर्वगुणसम्पन्न शंख! सोलह सहस्र देवियाँ
प्रियतम का अधरपान करने के लिए आतुर हैं।
उन सबके सामने ही यदि तुम अकेले माधव के
अधरामृत का पान करोगे तो वे तुम्हारे साथ कलह प्रारम्भ कर देंगी।

(29) *विण्णील-मेलाप्पु विरित्तार् पोल् मेहङ्गाल्!*
*तॅणणीर् पाय् वेङ्गडत्तु ऍन् तिरुमालुम् पोन्दाने?*
*कण्णीरहळ् मुलै-क् कुवट्टिर् तुळि शोर-च् - चोर्वेनैप्*
*पेण्णीर्सै ईड़लिक्कुम् इदु तमक्कु ओर पॆरुमैये?*

भावार्थ

आसमान में फैले हुए नीलवर्ण वितान के सदृश दिखाई देनेवाले हे बादलो,
निर्मल वारिधाराओं से आवृत वेंकटाचल के बिहारी
मेरे प्रियतम भगवान क्या इस ओर आये हैं?
क्या अश्रुप्रवाह से मेरे विनष्ट हो रहे स्त्रीत्व के कारण
उनके गौरव पर कलंक नहीं लगेगा?

(30) *मिन्नाहत्तु ऍलुहिन्र मेहङ्गाळ्! वेङ्गडत्तु-त्*
*तन्नाह-त् तिःरुमङ्गै शीर् मार्वर्कु*
*ऍन् आहत्तु इळङ् कॉङ्ले विरुम्बि-त् ताम नाळ्तोरुम्*
*पॊन्-आहम् पुलहुदर्कु ऍन् पुरिवुडैमै शॆप्पुमिने।*

भावार्थ

विद्युत प्रकाश से शोभायमान हे बादलो!
श्री महालक्ष्मी के आश्रय रूप वक्षस्थलवाले
वेंकटाद्रिनाथ भगवान से मेरी यह विनती कहना कि
मेरे ये बालस्तन उनके साथ आलिंगन के लिए अधिक उत्सुक रहते हैं।

(31) *करुविळै ऑण्-मलर्काळ्! काया मलर् काळ्! तिरुमाल्*
*ऊरु-ऑळि काट्टुकिन्रीर ऍनक्कु उय्-वलक्कु ऑन्रु उरैयीर्*
*तिरु-विळैयाडु तिण्-तोळ् तिरुमाल् इरुञ्चोलै नम्बि*
*वरि-वळैयि इर् पुहुन्दु वन्दि पर्रुम् वलक्कु उळदो?*

भावार्थ

हे सुन्दर काकण एवं अतसी पुष्पो,
तुम मुझे प्रियतम की कांति का स्मरण दिला रहे हो।
मुझे इससे बचने का मार्ग बतलाओ।
महालक्ष्मी के क्रीड़ास्थलरूपी दृढ़ भुज से सुशोभित
तिरुमालिरुम् सोलै के नाथ ने
मेरे यहाँ आकर हठात् मेरी चूड़ियों का अपहरण कर लिया।
ऐसा करना क्या उचित है?

(32) *तुङ्क मलर्प् पोलिल् शूल् तिरु माल्-इरुञ् चोलै निन्र*
*शेङ् कण् करु-मुहिलिन् तिरु उरुप् पोल् मलर् मेल्*
*तोङ्गिय वण्डिनङ्गाळ्! तोहु पूञ्-चुनेहाळ् शुनैयिर*
*नङ्गु शेन् तामरैहाळ्! एॅनक्कु ओर् शरण् शार्रुमिने।*

भावार्थ

पुष्पित वनों से भरे तिरुमालिरुम सोलै में शोभायमान्
कमलाक्ष मेघश्याम भगवान की दिव्य मूर्ति सदृश पुष्पाविष्ट
हे भ्रमरों के समूह! हे सुन्दर सरोवर!
उनमें विकसित कमल पुष्पो!
मुझे इस दुःख से बचने का उपाय बतलाओ।

(33) *कोङ्गु-अलरुम् पोॅलिल माल् इरुञ्-चोलैयिर् कोॅन्रैकळ मेल्*
*तूङ्गु पोॅन् मालैकळोडु उड़नाय् निरुर् तूङ्गुकिन्रेन्;*
*पूङ्कोळ् तिरुमुकत्तु मडुत्तु ऊदिय शङ्गोॅलियुम्*
*शार्ङ्ग विल् नाण ओॅलियुम् तलैप्पेॅय्वदु एञ्ञ आन्रु कोॅलो!*

भावार्थ

मैं पुष्पित तिरुमालिरुम शैल पर्वत के कोन्रै वृक्षों पर
लटकनेवाले स्वर्णिम पुष्पों की तरह व्यर्थ पड़ी हूँ।
अधर पर रखकर बजाये जानेवाले पांचजन्य शंख की ध्वनि तथा शारङ्ग
की टंकार को सुनने का सुअवसर मुझे कब प्राप्त होगा?

(34) *कार्क् कोडर् पूक्काळ! कार्क् कड़ल् वण्णन् एॅन् मेल् उम्मै-प्*
*पोर-क् कोलम् शेॅय्दु पोर विडुत्तवन् एॅङ्गु उर्रान्?*
*आर्क्को इनि नाम् पूशल् इडुवदु? अणि तुळाय्-त्*
*तार्क्कु ओडुम् नेञ्चम् तन्नै-प् पड़ैक्क वल्लेन्, अन्दो!*

भावार्थ

हे कोड़ल पुष्पों! नीलाब्धि वर्ण श्रीकृष्ण कहाँ है?
क्या उन्होंने तुम सबको युद्ध के लिए सजाकर
मेरे ऊपर आक्रमण करने हेतु भेजा है?
तुम सबसे पीड़ित मैं किसके पास जाकर अपनी विरह व्यथा को सुनाऊँ?
आह! मैं क्या करूँ?
प्रियतम द्वारा धारण की हुई माला के प्रति आसक्त होने के कारण
मेरी यह स्थिति हो गयी है।

(35) *मुल्लै-प् पिराट्टि! नी उन् मुरुवल्हल् कण्डु ऍम्मै*
*अल्लल् विळैवियेल् आलि-नड्य्! उन् अड़ैकलम्*
*को॑ल्लै अरक्कियै मूक्कु अरिन्दिट्ट कुमरनार्*
*शो॑ल्लुम् पो॑य आनाल् नानुम् पिऱन्दमै पो॑य् अऩ्ऱे।*

भावार्थ

हे गम्भीर स्वभाववाली यूथिका देवी,
तुम अपनी मन्द मुस्कान से मुझे मत सजाओ।
मैं तुम्हारी शरण जाती हूँ।
अपनी मर्यादाभ्रष्ट शूर्पणखा के नासिकाच्छेदक
श्रीरामचन्द्रजी के वचन यदि असत्य हों तो
मेरा जन्म लेना भी तो असत्य है।

(36) *पाडुम् कुयिल्हाळ्! ईदेन्न पाड़ल्? नल् वेङ् कड़*
*नाड़र् नमक्कु ओ॑रु वाऴ्वु तन्दाल् वन्दु पाडुमिन्*
*आडुम् करुळ-क् को॑ड़ि उड़ैयार् वन्दु अरुळ् शे॑य्दु*
*कूडुवर् आयिड़िल् कूवि नुम् पाट्टुक्कळ् केट्टुमे।*

भावार्थ

हे गानेवाले कोकिल!
यह कैसा कर्णकठोर गीत गा रहे हो?
यदि श्रेष्ठ श्रीवेंकटाद्रिनाथ यहाँ पधारकर
मेरे ऊपर कृपा करनेवाले हो तो इधर आकर गाओ।
नर्तक गरुड़ की ध्वजा धारण करनेवाले भगवान यदि
कृपा कर इधर पधारकर संश्लेष देंगे तो
मैं ही स्वयं बुलाकर तुम्हारे गीत सुनूँगी।

(37) *मऴैये! मऴैये! मण् पुऱम् पूषि उळ्ळाय् निन्ऱु*
*मे॑लुहु ऊऱ्निनाऱ् पोल् ऊऱ्रु नल् वेङ्कडत्तुळ् निन्ऱ्*
*अऴह-प् पिरानार् तम्मै ऍन् ने॑ञ्चत्तु अकप्पडत्*
*तलुव निन्ऱु ऍन्नै-त् तगैत्तु-क् को॑ण्डु ऊऱ्रवुम् वल्लैये।*

भावार्थ

हे बादल! हे बादल! बाहर मिट्टी से लेपन कर, अन्दर के मोम को
सारभूत पदार्थ—निकालनेवालों की तरह

पहले मुझे गाढ़ालिंगन कर पीछे विरह व्यथा से मेरे प्राण संहारक
श्रीवेंकटाद्रिनाथ भगवान से
मेरी इच्छा के अनुकूल उससे गाढ़ालिंगन कराकर खूब बरसो।

(38) *ताम् उहक्कम् तम् कैयिऱ् शङ्कमे पोलावो*
*याम् उहक्कम् ऍम् कैयिल् शङ्कमुम् एन्दिलैयीऱ्*
*ती-मुकत्तु नागणै मेल् शेरुम् तिरुरङ्गर्*
*आमुकत्तै नोक्कार् आल्! अम्मने! अम्मने!*

भावार्थ

हे आभूषणों से अलंकृत सुन्दरियो! मेरी पसन्द की ये चूड़ियाँ
प्रियतम के हाथ में स्थित शंखराज के सदृश नहीं हैं क्या?
हाय रे दुर्भाग्य! भयंकर मुखवाले शेषनाग पर शयन करनेवाले
श्रीरंगनाथ भगवान मेरा मुख भी नहीं देखना चाहते हैं।

(39) *मऱ्ऱु इरुन्दीर्हट्कु अऱियल्-आहा मादवन् ऍन्पदु ओर् अन्पु तन्नै*
*उऱ्ऱिरुन्देनुक्क उरैप्पदु ऍल्लाम् ऊमैयरोडु शॅविड़र् वार्त्तै*
*पॅऱ्ऱिरुन्दाळै ओॅऴियवे पोय्-प् पेर्त्तु ओॅरु तायिल् वळर्न्द नम्बि*
*मऱ्-पोॅरुन्दामऱ-कळम् अडैन्द मदुरै - प् पुऱत्तु ऍन्नै उय्त्तिडुमिन्*

भावार्थ

माधव के सम्बन्ध में मेरे प्रेम को
मेरे अतिरिक्त दूसरे लोग समझने में असमर्थ हैं
और आप लोगों का कथन मूक बधिर संवाद के सदृश है।
यदि आप लोग मेरे लिए कुछ करना चाहती हैं
तो कृपया जननी माता देवकी को छोड़कर
ब्रज-भूमि में यशोदा के यहाँ
आकर पलनेवाले
मल्लयुद्ध निपुण भगवान श्रीकृष्ण की मथुरापुरी के समीप
मुझे पहुँचाकर उज्जीवित कराइये।

(40) *तन्दैयुम् तायुम् उऱ्ऱारुम् निऱ्क-त् तनि वऴि पोयिनाळ ऍन्नुम् शोल्लु*
*वन्द-पिन्नै-प् पऴि काप्पु अरिदु मायवन् वन्दु उरु-क् काट्टुहिन्ऱान्*
*कोॅन्दळम् आक्कि प् परक्कु अऴित्तु-क् कुरुम्बु शॅय्वान् ओर् महनै-प् पॅऱ्ऱ*
*नन्द-गोपालन कड़ैत्तलैक्के नळ्-इरुट्ट - कण् ऍन्नै उय्त्तिडुमिन्।*

भावार्थ

इस संसार में मेरे कारण यह अपयश फैलने की सम्भावना है कि
माता, पिता तथा बन्धुओं के रहते, यह सबको छोड़कर
अपने मार्ग में चली गयी।
ऐसी घटना हो जाने के वाद उसको मिटाना अधिक कठिन है।
मायावी श्रीकृष्ण मेरे सामने आकर अपना स्वरूप दिखाकर आकृष्ट कर रहे हैं।
इसके पूर्व ही आप लोग मुझको श्रीरात्रि के अंधकार में ही
धूर्तचेष्ट-कृष्ण के पिता नन्दगोपाल जी के घर पर पहुँचाइये।

(41) *अङ्कै-त् तलत्तु-इडै आलि कॊण्ड़ान्*
*अवन् मुकत्तु अन्ऱि विलियेन् ऍन्रू*
*शॆङ् कच्चु-क् कॊण्डु कण्णाड़ै आऱ्त्तु-च्*
*चिरू मानिड़वरै-क् काणिल् नाणुम्*
*कॊङ्गे-त् तलम् इवै नोक्कि-क् काणीर्*
*गोविन्दनुक्क अल्लाल् वायिल पोहा*
*इङ्गुतै वाऴवै ऒलियवे पोय् यमुनै-क् करैक्कु ऍन्नै उय्त्तिडुमिन्।*

भावार्थ

सुन्दर हस्त चक्रधारी श्रीकृष्ण को छोड़कर दूसरे का मुखावलोकन नहीं करेंगे,
इस भावना से अरुण वस्त्र से अपने को छिपाकर
क्षुद्र मनुष्यों को देखने पर लज्जित इन मेरे स्तनों को आप ही देखिये
ये स्तन गोविन्द को छोड़कर और किसी की तरफ़ भी नहीं तकेंगे।
मेरे यहाँ के वास को समाप्त कर मुझे यमुना तीर पर पहुँचा दीजिये।

(42) *कूट्टिल् इरुन्दु किळि ऍप्पोतुम् कोविन्दा! कोविन्दा! ऍन्रु अऴैक्कुम्*
*ऊट्ट्-क् कॊडदु शॆरुप्पन् आहिल उलहु अळन्दान् ऍन्रु उयर-क् कूवुम्*
*नाट्टिल् तलैप्पलि एय्दि उङकळ नन्मै इऴन्दु तलैयिडादे*
*सूट्टु उयर् माडङ्गळ् शूऴ्न्दु तोन्रुम् तुवरापतिक्क ऍन्नै उय्त्तिडुमिन्।*

भावार्थ

मेरा पालित तोता, पिंजर में स्थित सदा 'गोविन्द', 'गोविन्द' रटता है।
यदि मैं आहार न देकर उसको सताती तो
उच्च स्वर में पुकारता है, "हे त्रिविक्रम भगवान!"
इस दशा में इन नामों को सुनने से मेरी व्यथा और भी बढ़ जाती है।
मेरे कारण आप लोगों को अपमान सहना पड़ेगा और

आप लोगों का गौरव मिट जाने की सम्भावना है।
मेरे कारण आप कहीं मुँह दिखाने योग्य नहीं रहेंगे।
उसके पूर्व ही मुझे अभी ऊँचे महलों से अलंकृत
द्वारका क्षेत्र में पहुँचा दीजिये।

(43) *कण्णन् ऍन्नुम् करुम् दे॑य्वम् काट्चिप् पऴहि-क् किड़प्पेनैप्*
*पुण्णिऱ पुळि-प् पॅय्दाऱ् पोल्-प् निन्ऱु अऴ्हु पेशांदे*
*पे॑ण्णिन् वरुत्तम् अऱियाद पे॑रुमान् अरैयिऱ् पीदह*
*वण्ण आड़ै को॑ण्डु ऍन्नै वाट्टम् तणिय वीशीरे।*

भावार्थ

कृष्ण नामक काले देव के दर्शन की अभिलाषा रखनेवाली
मुझ उपेक्षिता के साथ पराये का-सा व्यवहार कर,
घाव पर इमली रस छिड़कने के सदृश (क्षते क्षारमिव) कटुवचन मत सुनाओ
अपितु ललना दुःख अनभिज्ञ
श्रीकृष्ण भगवान के कमर के पीताम्बर को लाकर
उससे व्यसन करो, जिससे मेरा विरह ताप दूर हो सके।

(44) *पट्टि मेयन्न्दु ओर् कार्-एरु पलदेवर्क्कु कील्-क् कन्ऱाय्*
*इट्टीरु इट्टु विळैयाड़ि इङ्गे पोद-क् कण्डीरे?*
*इट्टमान पशुक्कळै इनिदु मरित्तु नीर् ऊट्टि*
*विटटु-क् कॉण्डु विळैयाड़ विरुन्दा वनत्ते कण्डोमे।*

भावार्थ

क्या तुमने अपनी इच्छा से भटकते
आनन्द विभोर अत्यधिक कोलाहल करते
इधर से गुज़रनेवाले वलदेव के अनुज श्याम-वृपभ श्रीकृष्ण को देखा?
स्त्रियाँ उत्तर देती हैं—हाँ, हमने उसको गायों को चराते
वृन्दावन में सानन्द घूमते हुए देखा।

(45) *कार्-त् तण् कमल-क् कण् ऍन्नुम् ने॑डुङ् कयिऱु पडुत्ति ऍन्नै*
*ईर्त्तु-क्-को॑ण्डु विळैयाड़ुम् ईशन् तन्नै - क् कण्डीरे?*
*पोरत्त मुत्तिन् कुप्पाय-प् पुहर् माल् यानै-क् कन्ऱे पोल्*
*वेर्त्तु निन्ऱु विळैयाड विरुन्दावनत्ते कण्ड़ोमे।*

भावार्थ

क्या तुमने उस मेघोत्पन्न कमल सदृश
शोभायमान अपने दिव्य नेत्र रूपी बड़े जाल में फँसाकर
अपने साथ ले जानेवाले
मेरे प्रियतम को इधर आते देखा।
हाँ, हमने मोती जड़े वस्त्र से अलंकृत तेजस्वी एवं करि-कलभ सदृश कृष्ण को स्वेद श्रम बिन्दुओं से सुशोभित खेलते हुए वृन्दावन में देखा।



# तोॅण्डरडप्पॉडियाल़्वार

## भक्ताङ्घ्रिरेणु

### रचनाएँ

*तिरुमालै* - 45 पद
*तिरुप्पळ्ळियेलुच्चि* - 10 पद
(प्राबोधिकी)

इस आल़्वार भक्त का वास्तविक नाम विप्रनारायण था। दक्षिण के तंजाऊर में कावेरी नदी के किनारे स्थित मण्डकुडी गाँव में ब्राह्मण कुल में इनका जन्म हुआ। श्रीरंग प्रभु के सौन्दर्य पर मोहित होकर वहीं आसपास रहकर भगवान की सेवा करने लगे। वे प्रतिदिन श्रीरंगनाथ के लिए माला बनाकर देते थे। उनकी जीवनी के बारे में अनेक कथाएँ प्रचलित हैं।

एक बार प्रभु की सेवा में डूबे रहते समय एक गणिका ने षड्यन्त्र रचकर इस आल़्वार को अपने मोहजाल में फँसा लिया। प्रभु की कृपा से आल़्वार, गणिका के प्रेम-जाल से छूटे और अपनी दशा पर लज्जित हुए। प्रायश्चित्त के रूप में भक्तों की चरण-धूलि लेकर शिरोधार्य कर लेते थे। तब से वे तोॅण्डरडप्पॉडियाल़्वर (भक्ताङ्घ्रिरेणु) अर्थात् 'भक्तों की चरण रज' के नाम से प्रसिद्ध हुए। इस आल़्वार ने प्रथम तीन आल़्वार तथा तिरुमङ्गैयाल़्वार की तरह अन्य धर्मावलम्बियों की कठोर निन्दा की, विशेषकर जैन, बौद्ध धर्मों की।[1] वे रो-रोकर भगवान की असीम कृपा कर गद्गद् होकर स्तुति करते हैं—प्रभु की भक्ति छोड़कर नीच लोगों की संगति में पड़कर स्त्री के भोग की लालसा में पड़ा रहा। श्रीरंगनाथ ने मुझे इस जाल से छुड़ाकर मेरा उद्धार किया।[2]

वे तिरुमङ्गैयाल़्वार के समकालीन थे। इनकी दो रचनाएँ हैं। *तिरुपळ्ळियेलुच्चि* में (प्रबोधकी) दस पद्य हैं। इसमें भगवान श्रीरंगनाथ की महिमा का गुणगान करते हुए

---

1. तिरुमालै-7-8 पद
2. वही-17 पद

प्रार्थना करते हैं, "तू उठ, इस दास की सेवा स्वीकार कर और अपने दासों का दास बन!" इन दसों पद्यों को श्रीवैष्णव मन्दिर में प्रातःकाल प्रभाती के रूप में गाते हैं और भगवान को जगाते हैं–

*"कावेरी से घिरे श्रीरंग में शयन करनेवाले भगवान्! सुगन्धित कमल के फूल खिल गये हैं। सूर्य भी घोषयुक्त समुद्र से निकल आया है। कृशोदरी स्त्रियाँ कावेरी में नहाकर बाल निचोड़कर सुखाकर साड़ी, धारण कर तट पर चढ़ आयी हैं। तेरे सदृश बकुलमाला लिए और कंधे पर टोकरी से प्रकाशमान तोण्डर अडिप्पोडि नामक दास पर कृपा कर और तेरे दासों का दास बना दे। इस दास के लिए श्रीरंग में विराजमान ईश्वर! जाग उठने की कृपा कर।"*[1]

इनका दूसरा ग्रन्थ *तिरुमालै* (श्रीमाला) है। इसमें 45 पद्य हैं। इसमें प्रभु की नाम महिमा का वर्णन करते हुए कहते हैं–

*"यह शरीर अन्ततः अचेतन है। एन-न-एक दिन मिट जाएगा। साधारण मनुष्य शरीर के पालन-पोषण में ही समय बिताता है। उसे छोड़कर और अन्य देवताओं की पूजा करना भी छोड़कर परतत्त्व की और श्रीरंगनाथ की भक्ति करें।" उनकी मान्यता है, ब्राह्मण जाति में जन्म लेकर, वेदों का ज्ञान रखने पर भी अगर उसमें प्रभुभक्ति नहीं हो तो वह नीच है। जन्म से नीच कुल में होने पर भी यदि उसमें यह गुण हो तो वही उच्च कुल का है। वही श्रेष्ठ ज्ञानी है। वही हमारा पूजा का पात्र है।*[2]

## तिरुप्पळिळयॆ`लुच्चि

(1) *कदिरवन् कुण-दिशै-च्-चिकरम् वन्दणैन्दान*
*कनै-इरुळ् अहन्रदु कालै-युम् पॉलुदाय्*
*मदु विरिन्दोलुहिन मा मलर् ऍल्लाम्*
*वानवर् अरशर्हळ् वन्दु वन्दीण्ड़*
*ऍदिर दिशै निऱैन्दनर् इवरोडुम् पुहुन्द*
*इरुक - कळिऱ्रीट्टमुम् पिडियो`ड्डु मुरशुम्*
*अदिर्दलिल् अलै कडल पोन्रुळदॆ`ड्गुम्*
*अरङ्गतम्मा। पळ्लि ऍलुन्दरुळाये।*

1. तिरुपळिळयेलुच्चि-10 पद्
2. तिरुमालै-42-43 पद्

# प्रबोधिकी-गीत

भावार्थ

सूर्य ने पूर्व दिशा के शिखर को गले लगाया।
गाढ़ान्धकार हट गया।
पौ फट गयी। सुन्दर समय हो चला।
मनोहर पुष्प विकसित होकर मधु बिखराने लगे।
देव तथा शासक सभी समक्ष जुड़ गये।
हाथी-हथिनियों के झुण्ड;
मुरज की ध्वनि चारों दिशाओं में
सागर उद्घोष सदृश सुनाई पड़ी।
श्रीरंगनाथ स्वामी!
शय्या से जागने की कृपा करो!

(2) *पुलंबिन पुट्कळुम् पूमपॉलि़ल्हळिन वाय*
*पोयिरु - क्-कङ्गुल् पुहुन्ददु - पुलरि*
*कलन्ददु कुणदिशै-क्-नै-कडल्-अरवम्*
*कळि-वण्डु मिल़्रिय कलंबहम् पुनैन्द*
*अलङ्गल अमृतोंडॅयल् कोण्डु अडि-इणै पणिवान्*
*अमरर्हळ् पुहुन्दनर् आदलिल् - अम्मा।*
*इलङ्गैयर्कोन् वलि़पाडु-शॅय-कोयिल्*
*ऍम्पॅरुमान् पऴ्लि एलुन्दरुळाये।*

भावार्थ

सुन्दर वाटिकाओं में पक्षी चहकने लगे
रात बीत गयी
पौ फट गयी
पूर्व दिशा में लहरों का समुद्र का उद्घोष फैल गया।
तुम्हारे चरण कमलों में वन्दना करने के लिए,
देवगण भ्रमर गुंजित मालाएँ लेकर खड़े हैं।
लंकेश्वर विभीषण से वंदित
श्रीरंगस्वामी! प्रभो!
शय्या से जागने की कृपा करो!

(3) *कोलु-ङ्-कोडि मुल्लयिन् कोॅलु मलर्-अणवि-क्*
*कूर्न्ददु गुण-दिशै-मारुतम् इदुवो!*
*एॅलुन्दन मलर्-अणै-प् पळ्ळि कोॅळ्ळन्नम्*
*ईन्-पनि ननैन्द तम् इरुञ्-चिर्हुदरि*
*विलुङ्गिय मुदलैयिन् पिलम्-पुरै पेल् वाय्*
*बेळ्ळेयिर्-उर अदन् विडत्तिनुककन्ङगि*
*अलुङगिय आनैयिन् अरुन्तुयर् केॅडुत्त*
*अरङ्गत्तम्मा। पळ्ळि ऐलुन्दरुळाये।*

भावार्थ

यह पूर्व दिशा की वायु जूही की नवलतिका के, नव प्रस्फुटित सुमनों के स्पर्श से सुगन्धित हो बहने लगी है। सुमन शय्या पर सोये हुए हंस हिम-प्रपात से भीगे पंख फड़फड़ाकर उठ गये हैं। प्रभो! तुमने ही पुराकाल में उस गजेन्द्र की असहनीय पीड़ा दूर की, जो ग्राह के गुहासम मुँह के श्वेत दन्तों से जो विषपूर्ण थे, आहत हो दुःखी था—उठने की कृपा करो!

(4) *इरवियर् मणि नेडुन्तेरोडुम् इवरो*
*इरैयवर् पदिनोरु-विडैयरुम् इवरो*
*मरुविय मयिलिनन् अरुमुहन् इवनो*
*मरुदरुम् वशुक्कळुम् वन्दु वन्दु ईण्डि*
*पुरवियोॅडु आडलुम् पाडलुम् तेरुम्*
*कुमर-दण्डम् पुहुन्दु ईण्डिय वेॅळ्ळम्*
*अरु-वरै अनैय निन्कोयिल् मुन्निवरो*
*अरङ्गत्तम्मा् पळ्लि ऐलुन्दरुळाये।*

भावार्थ

आदित्य-वर्ण-रत्नपूरित उत्तुंग रथ के साथ में हैं,
वृष-पति एकादश रुद्र में हैं,
यह है मयूर-वाहन षण्मुख
मरुत और वसुगण आ-आकर एकत्रित हुए हैं,
नृत्य-गान करते हुए तरुण देवसेना अश्व-रथों के साथ,
आकर तुम्हारे गिरि सम मन्दिर में डट गयी है।
श्रीरंग के स्वामी! शय्या से उठने की कृपा करो!

(5) *वम्बबिल् वानवर् वायुरै वलङ्ग*
*मा-निदि कपिलै ओॅण्-कण्णाड़ि मुदला*
*ऍम्पेरुमान् पडिमक्कल काण्ङर्कु*
*एऱ्प्पनवायिन कोॅण्डु नन्-मुनिवर्*
*तुम्बुरु नारदर् पुहुन्दनर् इवरो*
*तोन्ऱिनन् इरवियुम् तुलङ्गोॅळि परप्पि*
*अम्बर् तलत्तिल् निन्ऱु अहल्हिन्ऱदु इरुळ् पोय्*
*अरङ्गत्तम्मा। पळ्ळि ऐलुन्दरुळाये।*

**भावार्थ**

तुम्हें भेंट करने करने के लिए दर्शनीय नव दूर्बा-दल,
श्रेष्ट निधि, कामधेनु, निर्मल दर्पण आदि वस्तुएँ
लेकर देवतागण तथा तुम्बुरु नारद आदि महर्षि एकत्रित हैं।
सूर्य चमकती हुई किरणों को फैलाते हुए निकल आया है।
अन्तरिक्ष से अन्धकार दूर हट रहा है।
श्रीरंग के स्वामी, शय्या से उठने की कृपा करो।

## तिरुमालै-श्रीमाला

(6) *वेद नूऱ् पिरायम् नूरु मनिशर् - ताम् पुहुवरेलुम्*
*पादियुम् उरङ्गि-प् पोहुम् निनऱदिल् पदिन्-ऐ'आण्डु*
*पेदै पालहन् अदाहुम् पिणि पशि मूप्पू-त् तुन्पम्*
*आदलाल् पिऱवि वेण्डेन् अरङ्ग्-मा नहरुळाने!*

**भावार्थ**

श्रीरंग में सुशोभित मेरे प्रभु!
मानव की उम्र शतायु मान लें तो
उसमें आधा भाग निद्रा में बीत जाता है।
शेष पचास वर्ष बचपन, यौवन में बीत जाते हैं।
इस पर रोग, भूख, बुढ़ापा आदि दुख सताते हैं।
हे प्रभो!
मैं कोई जन्म ही नहीं चाहता।

(7) *वेरुप्पोडु शमणर् मुण्डर् विदियिल् शाक्कियर्हळ् निन्पाल*
*पोरुप्परियनहळ पेशिळ् पोवदे नोयदाहि*

*कुरिप्पेनक्कडैयुमाहिल् कूडुमेल् तलैये आङ्गे*
*अरुप्पदे करुमम् कण्डाय् अरङ्ग मा नहर-उळाने।*

भावार्थ

ईर्ष्या, द्वेष के कारण श्रमण, शैव,
अभागे बौद्ध तुम्हारे सम्बन्ध में
कठोर वचन कहें तो वह मेरे लिए व्याधि है
उन कटु वचनों को सुनने से पहले मरना अच्छा होता है।
अवसर मिले तो उनका शिरच्छेद करना अपना कर्त्तव्य समझूँगा।
देखो! मेरे श्रीरंग पुरी नाथ।

(8) *शूदनाय् - क्-कळ्वन् आहि-त्-तूर्त्तरोडु इशैन्द कालम्*
*मादरार्-कयल्-कण्-ऍन्नुम्! वलैयुळ् पट्टु अलुन्दुवेनैप्*
*पोदरे ऍन्रु शो॑ल्लि-प् पुन्दियुळ् पुकुन्दु तन् - पाल्*
*आदरम् पैंरुह वैत्त अलहन् - ऊर् अरङ्गम् अन्रे।*

भावार्थ

मैं जुआरी था, चोर था
धूर्तों के संग समय बिताता था।
स्त्रियों के मीन लोचन रूपी जाल में
फँसकर डूबा जा रहा था।
उस समय मेरे प्रभो।
'इधर आओ' कहकर मेरी मति में प्रविष्ट होकर आदर प्रदान किया।
वास्तव में दिव्य पुरी श्रीरंग में मेरे प्रभु विराजते हैं।

(9) *पोदेल्लाम् पोदु - को॑ण्डु उन् पो॑न्नडि पुनैय - माट्टेन*
*तीदिला मोऴिहळ को॑ण्डु उन् तिरुक्कुणम् शे॑प्प - माट्टेन*
*कादलाल् ने॑ञ्जम् अन्पु कलन्दिलेन अदु तन्नाले*
*एदिलेन् अरङ्गरक्कु ऍल्ले ऍन् शेयूवान तोन्रिनेने।*

भावार्थ

मैं तुम्हारे चरणों में पुष्पांजलि नहीं कर पाया।
निर्दोष शब्दों द्वारा तुम्हारे सुन्दर गुणों की स्तुति नहीं कर पाया।
सच्चा हार्दिक प्रेम नहीं दिखा सका
प्रभु! मेरे पास कुछ भी नहीं है।

हाय! मैंने प्रभु श्रीरंगनाथ की सेवा करने के लिए ही जन्म लिया।
(मन, वचन, कर्म से मैंने प्रभु की सेवा नहीं की)

(10) *कुरङ्गुहळ् मलैयै नूक्क - क् कुळित्तु-त् ताम् पुरण्डिट्टोड़ि*
*तरङ्ग-नीर्-अड़ैक्कलुट्र शलम् इला - अणिलम् पोलेन*
*मरङ्गळ् पोल् वलिय नेॅञ्ज-वञ्चनेन नेॅञ्जु तन्नाल्*
*अरङ्गनार्क्क आट्-शेॅय्यादे अळियत्तेन् अयर्क्किन्ऱेने।*

भावार्थ

जब बन्दरों का समूह पर्वतों को नीचे गिराते
तब एक गिलहरी समुद्र जल में रेत पर लोटते हुए,
तरंगित समुद्र बन्धन में प्रवृत्त हुई।
मैं उस निष्कपट गिलहरी के समान भी नहीं
वृक्षों जैसा कठिन हृदयवाला वंचक हूँ।
भावना के वश में आकर प्रभु श्रीरंगनाथ की दास्य वृत्ति न कर सका
मैं अधिक दुखी हो रहा हूँ।
मेरी स्थिति दयनीय है।
(प्रभु श्रीराम ने, गिलहरी की अनन्य भक्ति और सेवा को देखकर, उसे वाम हस्त में लेकर दाहिने हाथ से प्रेम से उसकी पीठ पर सहलाया। गिलहरी की पीठ पर आज भी तीन लहरें देख सकते हैं। माना जाता है कि वे प्रभु के हस्त-स्पर्श का चिह्न है।)

(11) *ऊर् इलेन् काणि-इल्लै उरवु मऱ्ऱु ऑरुवर् इल्लै*
*पारिल् निन् - पादमूलम् पऱ्ऱिलेन् परम - मूर्ति*
*कारोॅळि वण्णने! ऍन्कण्णने! कदरुहिन्ऱेन्*
*आरुळर् ककैहण्, अम्मा! अरङ्गमा नहर् उळाने।*

भावार्थ

मेरे तो न गाँव है, न क्षेत्र है।
न बन्धु है न कोई मित्र है
कृपालु प्रभु!
मैंने तुम्हारा आश्रय लिया है
जलद-सदृश कान्तिवाले, कान्ह!
मैं चीखता हूँ! चिल्लाता हूँ!
हे प्रभु! मेरा रक्षक कौन है।
मेरे आराध्य देव, श्रीरंगपुरी में वास करते हैं।

(12) *मनत्तिल् ओर् तूय्मै इल्लै वायिल् ओर इन् - शों॑ल् इल्लै।*
*शिनत्तिनाल शें॑ऱ्ऱम् नोक्कि ती विळि विळिवन वाळा*
*पुनत्तुळाय् मालैयाने। पों॑न्नि शूल तिरु अरङ्गा।*
*ऍनक्क इनि-क-कदि ऍन् शों॑ल्लाय् ऍन्नै आळुडैय कोवे।*

**भावार्थ**

मेरा मन पवित्र नहीं है।
मेरे मुँह से एक भी मीठा वचन नहीं निकलता
क्रोध में आकर द्वेष से व्यर्थ ही कठोर वचन बोलता हूँ।
तुलसी मालाधारी प्रभु! कावेरी से घिरे श्रीरंग के प्रभु!
अब मेरे लिए क्या गति है बताओ।
मुझको दास बनानेवाले श्रीरंगनाथ प्रभु हैं।

(13) *मेम्पोंरुळ् पोह-विट्टु में॑य्म्मैयै मिह उणर्न्दु*
*आम्परिशु अरिन्दु-कोंण्डु ऐम्पुलन् अहत्तु अड़क्किक्*
*काम्बअऱ-त्-तलै शिरैत्तु उन् कडैत्तलै इरुन्दु वालुम*
*शेम्बरै उहत्ति पोलुम् शूळ् पुनल् अरङ्गत्ताने।*

**भावार्थ**

जल से आवृत्त श्रीरंग प्रभु!
जो विषय वासनाओं को त्याग देते हैं।
जो सत्य स्वरूप को यथावत जान लेते हैं।
जो योग्य पदार्थों का ज्ञान प्राप्त करते हैं।
जो पाँच इन्द्रियों को अपने वश में कर लेते हैं
जो अपने सर मुंड़ाकर
तुम्हारे दर्शन के लिए पड़े रहते हैं
जो आदर्श जीवन बिताते हैं
उनपर ही तुम्हारी प्रीति है।
(सर मुंडाने का तात्पर्य यह है वासना को छोड़ देना)

(14) *नमनुम् मुऱकलनुम् पेश नरहिल् निन्ऱार्हळ् केट्क*
*नरहमे शुवर्क्कमाहुम् नामङ्कळुडैय नम्बि*
*अवनदूर् अरङ्गम् ऍन्नादु अयर्तु वीळ्न्दु अळिय मान्दर्*
*क्वलैयुळ् पडुहिन्रार ऍन्ऱु अदनुकके कवल् हिन्रेने।*

भावार्थ

हे गुणों की खान!

यम और मुद्गल तुम्हारे नाम से सम्बन्धित सम्भाषण कर रहे थे, उसे नरक में स्थित पापी आत्माएँ सुन रही थीं। इस कारण नरक ही स्वर्ग बन गया। ऐसे नामवाले का श्रीरंग निवासस्थल है। इसे भूलकर पतित होकर बेचारे मनुष्य चिन्ता में फँसे रहते हैं। यह सब देखकर मैं बहुत दुःखित होता हूँ।

(15) *पायुम्-नीऱ् अरङ्गम् तन्नुळ्*
*पाम्बणै-प्-पळ्ळि कोण्ड*
*मायनाऱ् तिरु-नन् मार्पुम्*
*मरकत-उरुवम् तोळुम्*
*तूय तामरै-क्-कण्कळुम्*
*तुवरिदऴ्-प् पवळ वायुम्*
*आय शीर् मुडियुम् तेशुम्*
*अडियरोर्क्कु अहलुामे।*

भावार्थ

प्रवाहमान जल से युक्त, श्रीरंग के अन्दर, शेष शय्या पर शयन करनेवाले मायावी सर्वेश्वर के मनोहर मंगलकारी वक्षःस्थल और मरकत मणि रूप भुजाएँ, पावन कमल लोचन, रक्तिम अधर, विद्रुम-ओष्ठ, सम्यक् परिष्कृत मुकुट और तेज को देखकर, भक्तजनों का उनसे अलग रहना सम्भव नहीं है।

(16) *कङ्गैयिऱ् पुनिदमाय काविरि-नडवु-पाट्टुप्*
*पोॅङ्गु-नीर् परन्दु पायुम् पूम्पोलिल् अरङ्गम्-तन्नुळ्*
*ऍङ्गळ् माल् इऱैवन् ईशन् किडन्ददोर् किडक्कैकण्डुम्*
*ऍङ्ङनम् मऱन्दु वाऴ्हेन् एऴैयेन् एऴैयेने।*

भावार्थ

कावेरी जो गंगा से भी पावन है,
उसके मध्य से उफन कर फैले हुए जल से सिंचित,
मनोहर उपवन से परिवृत्त श्रीरंग के भीतर
हमारे प्रभु, सर्व-नियामक सर्वेश्वर शयन कर रहे हैं।
इसका मुझे बोध नहीं है।
फिर भी प्रभु की उस सुन्दर शयनावस्था को देखकर

उन्हें विस्मृत कर कैसे जीवित रह सकता हूँ?
मैं उनपर मुग्ध हूँ।

(17) *वानुळार् अऱियलाहा वानवा् ऍन्पराहिल*
*तेन्-उलाम्-तुळप-मालै-च् चॆन्नियाय्! ऍन्पराहिल्*
*ऊनम् आयिनहळ् शॆय्युम् ऊन-कारकरकळेलुम्*
*पोनह शॆय्द शेडम् तरु वरेल् पुनिदम् अन्ऱे।*

**भावार्थ**

भले ही हीन कर्मों का आचरण करनेवाले
चाहें दूसरों से भी हीन कर्मों को करानेवाले,
स्वर्ग में स्थित देवताओं के भी ज्ञान से परे देवाधिदेव!
जिनकी विभूषित तुलसीमाला पर भौंरे मँडरा रहे हैं।
यदि वे कहते हैं तो उनकी जूठन भी मेरे लिए परम पवित्र है।

(18) *पेण्णुलाम् शडैयिनानुम् पिरमनुम् उन्नै-क् काण्पान्*
*ऍण्णिला ऊऴि ऊऴितवम् शेय्दार् वॆळ्हि निऱप्*
*विण्णुळार् वियप्प वन्दु आनैक्कु अन्ऱु अरुळै ईन्द*
*कण्णऱा। उन्नै ऍन्नो कलेहणा-क्-करुन्दु माऱे।*

**भावार्थ**

जिनकी जटाओं से गंगा संचरित हो रही है ऐसे रुद्र और ब्रह्मा,
तुम्हारे दर्शन के लिए अगणित कल्पों से तपस्या करने पर भी लज्जित खड़े हैं।
ऐसी स्थिति में तुमने आकर गजेन्द्र पर कृपा की,
इससे स्वर्ग में स्थित देवता भी आश्चर्यचकित हुए।
परन्तु तुम मुझपर कृपा नहीं करते,
तुम निर्गुण हो, तुम्हें कोई रक्षक कैसे मान सकता है।



# तिरु-प-पाण् आल़वार

## (योगिवाह)

कृति : *अमलनादि पिरान्* : पद - 10

इनका जन्म श्रीरंग क्षेत्र से चार मील की दूरी पर स्थित उरैयूर में पाणर नामक अवर्ण कुल में हुआ। पाण् नामक सुन्दर वाद्य से मधुर गीत गाकर जीविका कमाना ही पाणर् जाति का काम है। बचपन से ही यह आल़वार अपने वाद्य से भगवान का गुणगान करते थे। वे नदी के इस किनारे पर ही रहकर गाते रहते थे। वे यही सोचते थे कि मैं उस पार की पवित्र भूमि को छूकर उसे अपवित्र नहीं करूँगा। मैं इस पार ही रहकर प्रभु के गुणगान करके अपना जीवन सफल बनाऊँगा। वे प्रतिदिन हाथ में पाण (वीणा सदृश वाद्य) लेकर कावेरी जाते, स्नान से निवृत्त होकर गाने लगते थे। वे गाने में इस प्रकार तन्मय हो जाते थे कि वाहरी संसार का ज्ञान ही नहीं रहता था। इस आल़वार को नॉण्डरडिप्पोड़यालुवार के पद के आधार पर उनके समकालीन मानते हैं। 'अमलनादिपिरान' नामक दस पद्य ही उनकी रचना है। सूरदास की भाँति इन्होंने प्रभु से इच्छा प्रकट की श्रीरंगनाथ मेघ सदृश स्वभाव तथा कान्तियुक्त हैं। इसी ने गोपाल का रूप लेकर मक्खन चुराया। इस प्रभु ने अपने सौलभ्य से मेरे हृदय को चुराया। वे सभी आत्माओं का ईश्वर है। श्रीरंग में विराजमान मेरे प्रभु के दर्शन के उपरान्त ये नेत्र किसी दूसरे को नहीं देखेंगे।

इस आल़वार के जीवन के बारे में यह कथा प्रसिद्ध है कि एक दिन आल़वार भावोन्मत होकर गाते समय मन्दिर के कर्मचारी वहाँ आये और उसे अवर्ण समझकर दूर हटने को कहा। उसका प्रभाव न होते देखकर ग़ुस्से में आकर कर्मचारी ने उस पर छोटा-सा पत्थर उठाकर फेंका। थोड़ी देर में पाणन् अपने ध्यान से सचेत हुए। कर्मचारी क्षमा-याचना कर वहाँ से हट गये। पर मन्दिर के अन्दर पहुँचते ही पुजारी ने देखा कि प्रभु के माथे से रक्त बह रहा है। प्रभु का आदेश पाकर पुजारी भक्ति श्रद्धा से पाणन को मन्दिर ले आये। अपने प्रियतम आराध्य देव के दर्शन से गद्‌गद् होकर दस पद गाए और अन्त में भगवान में विलीन हो गये।

अमलन् आदि पिरान्

(1) *अमलन आदि पिरान् अडियारक्कु ऍन्नै आट्-पडुत्त*
*विमलन विण्णवर् - कोन् विरै - आर् पॊऴिल वेङ्कडवन्*
*निमलन् निन्मलन् नीदि-वानवन्*
*नीळ् मदिळ् अरङ्गत्तु अम्मान तिरु-क्*
*कमल पादम् वन्दु एन् कण्णिन् उळ्लन ऑक्किन्रदे*

भावार्थ

अमल, आदि, उद्धारक,
दासों का दास बनानेवाले विमल
मोक्ष लोक के अधीश्वर
सुगन्धि से आवृत, वेंकट गिरी के नाथ,
निर्मल प्रभु, परमधाम के प्रभु
ऊँचे प्रकारवाले श्रीरंग प्रभु के
चरणकमल, मेरी आँखों के भीतर
बसे हुए जैसे प्रतीत होते हैं।

(2) *मन्दि पाय् वड वेङ्कड मामलै वानवरहळ्*
*शन्दि शॆय्य निन्रान् अरङ्गत्तु अरविन् अणैयान्*
*अन्दि - पोल् निर्त्त आड़ैयुम् अदन्*
*मेल, अयनै-प् पड़ैत्तदु ओर ऍलि्ल*
*उन्दि मेलदु अन्रो अडियेन् उळळत्तु इन् उयिरे।*

भावार्थ

जहाँ बन्दर कूदते रहते हैं, उस
वेंकटगिरि पर विराजमान प्रभु
जहाँ देवगण पूजा करते रहते हैं,
उस श्रीरंग में सर्प शय्या पर
शयन करनेवाले प्रभु
सांयकाल के आकाश सदृश वर्णवाले वस्त्र एवं
उस वस्त्र के ऊपर ब्रह्मा की सृष्टि करनेवाले सुन्दर नाथ हैं।
इस दास के हृदय में मेरे प्राण प्रिय
प्रभु की आत्मा विद्यमान है।

(3) *शदुर मा मदिल् शूल् इलङ्गैक्कु इऱैवन् तलै पत्तु*
*उदिर ओट्टि ओर् वेङ्कणै उय्त्तवन् ओद-वण्णन्*
*मदुर मा वण्डु पाडमा-मयिल्*
*आडु अरङ्गत्तु अम्मान् तिरु-वयिऱ्रु*
*उदर बन्दम् ऍन् उळ्ळत्तुळ् निन्ऱु उलाहिन्ऱदे।*

भावार्थ

जिसके परित सुहृदय प्राचीर रहा ऐसी लंका के राजा के दसों सिर गिर गये,
ऐसे उग्र बाण को सफल करनेवाले सागरवर्ण।
नील भ्रमरों के मधुगुंजन, नील मयूरों के नर्तन से युक्त
श्रीरंग के अधीश्वर के उदर पर स्थित मेखला,
मेरे मन के अन्दर स्थित होकर संचरण करती रहती है।

(4) *कैयिन् आर् शुरि शङ्गु अनल् आऴियार नीळ् वरै पोल्*
*मेय्यनार् तुळप-विरै आर् नीळ् मुडि ऍम्*
*ऐयिनार् अणि अरङ्गनार्*
*अरविन् अणै मिशै मेय मायनार्*
*शेय्य वाय् ऐयो! ऍन्नै-च् चिन्दै कवरन् ददुवे।*

भावार्थ

हाथ में उद्भासित आवर्तनवाला शंख रखनेवाले,
अग्नि सम चक्रवाले,
उन्नत पर्वत सम शरीरवाले,
तुलसी के सौरभ से सुगन्धित उन्नत किरीटवाले,
हमारे स्वामी! सुन्दर श्रीरंग के प्रभु!
शेष शय्या पर प्रेम सहित रहनेवाले मायापूरित के
अरुण अधर ने, अहो! मेरा मन हर लिया है।

(5) *परियन् आहि वन्द अवुणन् उडल् कीण्ड अमरर्क्कु*
*अरिय आदि-प् पिरान् अरङ्गत्तु अमलन् मुहत्तुक्*
*करिय आहि-प् पुडै परन्दु*
*मिळिर्न्दु शॆव्वरि ओडिनीण्ड अप्*
*पेरियवाय कण्गळ् ऍन्नै-प् पेदैमै शॆय्दनवे।*

भावार्थ

सामने आये हुए हृष्ट-पुष्ट असुर के शरीर को विदीर्ण करनेवाले,
देवताओं के लिए भी दुर्लभ, आदि और उपकारक
श्रीरंग में विराजित स्वामी के निर्मल मुख में विद्यमान काले,
लाल चमकीले
लाल डोरों से युक्त नयनों ने मुझे बावला बना दिया।

(6) *आल मा मरत्तिन् इलै-मेल् ओॅरु बाल हनाय्*
*ञालम् एॅलुम् उण्डान् अरङ्गत्तु अरविन् अणैयान*
*कोल मा मणि-आरमुम् मुत्तु-त्*
*साममुम् मुडिवु-इल्लदु ओर् एॅलिल्*
*नील मेनि ऐयो! निरै कोॅण्डदु एॅन् नेॅञ्जिनैये।*

भावार्थ

महान वटवृक्षों के एक पत्र पर सोनेवाले बालक हो,
सात लोकों को निगलनेवाले हो,
श्रीरंग में सर्पशय्या पर निवास करनेवाले हो,
तुम्हारे सुन्दर नील मणिहार, मुक्तादाम और
अनन्त सौन्दर्य से युक्त नीलवर्ण शरीर ने
मेरे मन को घायल कर, उसे चंचल कर दिया है।



# तिरुमंगैयाल़्वार

## परकाल



| | |
|---|---|
| पेॅरियतिरुमोलि | 1084 पद |
| तिरुक्करुन्ताण्डकम् | 20 पद |
| तिरुनेॅडुन्ताण्डकम | 30 पद |
| तिरुवेलुकूर्रिरुकै | 1 पद |
| शिरिय तिरुमडल | 40 पद |
| पेॅरिय तिरुमडल | 78 पद |

परकाल का जन्म तमिल़ प्रदेश के चोल़ मण्डल में 'कुरैपलूर' में चतुर्थ वर्ण में हुआ। इनके पिता चोल़राज की सेना में अधिपति थे। वे प्रारम्भ में कलियन के नाम से प्रसिद्ध थे। इस आल़्वार ने अपने को आलि़ प्रदेश का शासक बतलाया है।[1] वे बड़े ही युद्धप्रिय लड़ाकू हैं।[2] वे बड़े दानी स्वभाव के हैं। हमेशा वैष्णव भक्तों की सेवा में रत रहनेवाले हैं। अन्य देवताओं की वन्दना भूलकर भी नहीं करनेवाले कठोर वैष्णव भक्त हैं।

गुरु परम्परा के अनुसार परकाल, सन्त पेॅरियाल़्वार के समकालीन हैं। वरदराज अय्यर जैसे विद्वान् परकाल का समय आठवीं शताब्दी के अन्तिम भाग का मानते हैं।[3] ऐतिहासिक आधार पर दिखाकर मु. राघवय्यंगार कहते हैं कि परकाल ईस्वी 795 के पूर्व रहे होंगे।[4]

कहा जाता है कि कट्टर वैष्णव भक्त यह आल़्वार प्रतिदिन हज़ारों भक्तों को खिलाते थे और अन्त में भक्तों का उच्छिष्ट भोजन खाकर आनन्द पाते थे। भोजन खिलाने के लिए धनाभाव होने पर इनको अपने आश्रित राजा से लड़ना पड़ता था। कभी-कभी यात्रियों को लूटकर भक्तों की सेवा करते थे। गुरु परम्परा के अनुसार यह

---

1. *पेॅरिय तिरुमोलि़*, तिरुमंगैयाल़्वार पद - 7/3/10
2. वही, पद् 3/9/10
3. *तमिल़ इलक्किय वरलरु* (तमिल़ साहित्य इतिहास) वरदराजय्यर, पृष्ठ 374
4. *आल़्वार काल निलै*, मु. राघव अय्यंगार

कथा प्रचलित है कि भगवान श्रीरंगनाथ गोदा देवी से विवाह करके लौटते समय इस आल़वार ने उन्हें भी लूटा। अन्त में भगवान के दर्शन से आनन्दित हुए। तब से लूटना छोड़ दिया। आनन्दातिरिक वे गद्गद् होकर गाने लगे–

*मैं मुरझा गया था। मन में अत्यधिक व्यथित भी हुआ था और इस असीम जन्म मार्ग में भटक रहा था। अब तुम्हारी कृपा से जागृत हुआ। खोजकर पाया 'नारायण'।*

इस आल़वार की कुल रचनाएँ छह हैं। इस आल़वार ने कुल 1253 पद्य रचे। कहा जाता है कि इस आल़वार ने श्रीरंगम, (तिरुच्चिराप्पल्लि) मन्दिर के जीर्ण भागों को मरम्मत करवाई और भगवान के उत्सवों का प्रबन्ध किया। ये ही पहले पहल तिरुनगरी से नम्माल़वार की मूर्ति को आदर सत्कार के साथ ले आये और मार्गशीर्ष महीने में 'अध्ययनोत्सव' मनाया। इस में तमिल़ वेदों की भाँति मिल़ गाथाओं को प्रश्रय मिला। परकाल ने अपनी रचनाओं में कई तरह के प्रचलित छन्दों का प्रयोग किया। इनकी उक्तियाँ बड़ी ही लुभावनी एवं मार्मिक हैं।

परकाल की मान्यता है कि जीव का स्वरूप परमात्मा के अधीन है और परतन्त्र है जितना एक स्त्री का अपने प्यारे पति से। परकाल कभी-कभी नायिका बनकर प्रियतम से मिलन के लिए तड़पते हैं, कभी नायिका के रूप में, कभी नायिका की माता के रूप में, कभी सहेली के रूप में। जो विरह वर्णन आल़वार ने प्रस्तुत किया है वह हृदय विदारक हैं। कभी नायिका विरहोन्मत्त होकर अपने प्रियतम के पास भ्रमर, सारस, बादल आदि के द्वारा सन्देश भेजती है, कभी यशोदा का रूप धारण करके श्याम सुन्दर को दूध पीने के लिए बुलाती है।

**पॆरिय तिरुमॊलि** में भगवान के दिव्य गुणों का वर्णन करते हैं। **तिरुकुरुन्ताण्डकम** में प्रपंच की हेयता पर दुःखित होकर इससे अपने को छुड़ाने की प्रार्थना करते हैं। **तिरुवेलुकूर्रिरुक्कै** में प्रपत्ति मार्ग का वर्णन करते हैं। **शिरिय तिरुमडल** में नायिका, पति से रूठकर प्राण त्याग करने की धमकी देती है। प्रणय में निराश व्यक्ति के प्राण त्याग को तमिल़ साहित्य में 'मडलूर्दल' के नाम से पुकारते हैं। तमिल़ साहित्य में पुरुष को ही प्राण त्यागने का अधिकार है और स्त्रियों को प्राण त्यागने की अनुमति नहीं दी गयी है। इस विधि के विरुद्ध आल़वार की नायिका ईश्वर प्रेम में प्राण त्यागना चाहती है। **पॆरिय तिरुमडल** में प्रणय रोष में नायिका कहती है कि मेरे प्रियतम को अर्चा रूप में (मन्दिर में मूर्ति) अधिक गर्व हो गया है। मैं अब उसको चूर-चूर कर दूँगी।

### तिरुनॆडुन्ताण्डकम्

विरह से व्यथित आल़वार को भगवान के दर्शन मिलते हैं। उससे आनन्दित होकर भगवान की प्रशंसा करते हैं।

## पॆरिय तिरुमॊऴि

(1) *वाडिनेन् वाड़ि वरुन्दिनेन् मनत्ताल्*
*पॆरुन्तुयर् इडुम्वैयिल पिऱन्दु*
*कूडिनेन् कूड़ि इळैयवर् तम्मोडु*
*अवर् तरुम् कलवियै करुदि*
*आड़िनेन् ओड़ि उय्वदोर् पॊरुळाल्*
*उणर्वु ऍनुम् पॆरुम् पदम् तिरिन्दु*
*नाड़िनेन् नाडि नान् कण्डु कॊण्ड़ेन्*
*नारायणा ऍन्नुमु नामम्।*

**भावार्थ**

मैं मुरझाता रहा; मुरझाकर रमन में व्यथित होता रहा।
इस दुखमय संसार में जन्म लेकर उससे उलझता रहा।
कामिनियों के पीछे उनकी वासना की कामना से भटकता रहा।
भागते समय भगवान की कृपा से ज्ञान प्राप्त कर,
उसके बारे में विवेचन करता रहा। विवेचन के बाद मैंने अनुभव किया
भगवान का प्रसिद्ध नाम नारायण ही
उज्जीवन के लिए श्रेष्ठ है।

(2) *शेममे वेण्डि - त् - ती विनै पॆरुक्कि - त्*
*तॆरिवैमार् उरुवमे मरुवि*
*ऊमनार् कण्ड़ कनविलुम् पलुदाय्*
*ऒऴिन्दन कऴिन्द अन्-नाळ्हळ्*
*वामनार् तादै नम्मुड़ै अड़िहळ्*
*तम्मड़ैन्दार् मनत्तु इरुप्पार्*
*नामम् नान् उय्य नान् कण्डु कॊण्ड़न्*
*नारायणा ऍन्नुम् नामम्।*

**भावार्थ**

क्षेम लाभ की इच्छा के लिए, बुरे कर्मों को बढ़ाकर
कामिनियों के रूप में मोहित होकर गूँगों के स्वप्न सदृश
मेरा जन्म बेकार होता रहा।
कामदेव के पिता हमारे महिमामय स्वामी

आश्रितों के हृदय में रहनेवाले
प्रभु का नाम नारायण ही उज्जीवन के लिए श्रेष्ठ है।
(तमिल़ साहित्य के लक्षण ग्रन्थों में भिन्न-भिन्न आयु-वर्ग की स्त्रियों के लिए भिन्न-भिन्न शब्द हैं।)
पेदै–पाँच वर्ष से सात वर्ष तक की आयु की बालिका
पेदुम्बै–आठ से बारह साल तक की बाला।
मंगै–तेरह साल की कन्या
मड़न्दै–चौदह साल से उन्नीस तक की स्त्री
अरिवै–बीस साल से पच्चीस साल तक स्त्री
तेरिवै–छब्बीस वर्ष से बत्तीस तक की स्त्री
इस पद में तेरिवै शब्द का प्रयोग हुआ है।

(3) *कुलम तरुम् चॆल्वम् तन्दिडुम् अड़ियार् पडु तुयर् आयिन ऍल्लाम्*
*निलन्तरम् शॆय्युम् नीळ् विशुम्बु अरुळुम् अरुळोडु पॆरु निलम् अळिक्कुम्*
*वलम् तरुम् मऱ्ऱुम् तन्दिडुम् पॆऱ्ऱ तायिनुम् आयिन शॆय्युम्*
*नलम् तरुम् शौल्लै नान् कण्डु कॊण्डेन् नारायणा ऍन्नुम नामम्।*

भावार्थ

प्रभु नारायण हमको समृद्धि देता है।
वे ही वैभव प्रदान करता है,
समस्त दुखों को मिटाकर भक्तों को सुख देता है,
वही हमको मोक्ष प्रदान करता है,
भगवान की कृपा से उन्नत पद मिलता है
प्रभु ही बल प्रदान करता है और सब कुछ देता है।
जन्म देनेवाली माता से भी बढ़कर हमारी सभी इच्छाओं को पूरा करता है।
मैंने अनुभव किया प्रभु का प्रसिद्ध नाम नारायण ही हितप्रद है।

(4) *कलैयुम् करियुम् परि मावुम् तिरियुम् कानम् कड़न्दु पोय्*
*शिलैयुम् कणैयुम् तुणैयाह - च् चेन्ऱान् वॆन्ऱि - य् चरू - क् - कळत्तु*
*मले कौंणडु अले नीर् अणै कट्टि मदिळ् नीर् इलङ्गै वाळ् - अरक्कर्*
*तलैवन् तलै पत्तु अरुत्तु उहन्दान् शाळक्किराम् अड़ै नॆञ्चे।*

भावार्थ

हिरण, हाथी, घोड़ा जैसे जानवरों से संचरित,
वन को पार करके धनुष बाण का सहारा लेकर,

विजय रूपी युद्ध क्षेत्र में जो पहुँचे हैं,
पर्वतों के सहारे तरंगोंवाले सागर पर सेतु बाँधकर
चारों तरफ़ समुद्र से घिरे लंका के अधिपति
शस्त्रधारी रावण के दस सिर काटकर
जो आनन्दित हुए, हे मन! उनके उस
शालग्राम क्षेत्र पर पहुँचो।

(5) *शूदिनै - प् पॅरुक्कि - क् कळविनै-त् - तुणिन्दु*
*शुरिकुलल् मड़न्दैयर् तिरत्तुक्*
*कादले मिहुत्तु-क् कण्ड़वां तिरिन्द्*
*तॉण्डनेन् नमन् तमर् शॅय्युम्*
*वेदनैक्क ऑडुङ्गि नडुङ्गिनेन् वेलै*
*वेण्तिरै अलमर-क् कड़ैन्द*
*नादने् वन्दु उन् तिरुवड़ि अड़ैन्देन्*
*नैमिशारणियत्तुळ् ऍन्दाय्।*

भावार्थ

जुआ अधिक खेलकर चोरी में वीर होकर,
कुटिल कुन्तलवाली स्त्रियों पर,
वासना के कारण भटकनेवाला यह दास
अब यमदूतों की दी हुई पीड़ा से भयभीत होकर काँप रहा है।
प्रभु से सागर की धवल तरंगे उद्वेलित हुईं,
इस प्रकार सागर का मन्थन करनेवाले प्रभु!
मैंने तुम्हारे श्रीचरणों को प्राप्त किया।
मेरे स्वामी नैमिषारण्य में सुशोभित हैं।

(6) *तरुक्किनाल् शमण् शॅय्दु शोरु तण् - तयिरिनाल् तिरळै मिड़र्रिड़े*
*नॅरुक्कुवार् अलक्कण् अदु कण्डु ऍन् नॅञ्चम् ऍन्पाय्!*
*मरुळ्कळ् वण्डुहळ् पाण्डुम् वेङ्कटम् कोयिल् कॉण्डु-अदनोड़ुम् वानिड़ै*
*अरुक्कन् मेवि निर्पारकु अड़िमै - त् तोलिल् - पूण्ड़ाये।*

भावार्थ

तर्क से श्रमण सिद्धान्तों को स्थापित करनेवाले,
ठण्डे दही के साथ अन्न के बड़े-बड़े कौर
कंठ में भूसनेवाले श्रमणों की पीड़ा देखकर मन दुखी होता है।

प्रभु जहाँ भ्रमर 'मरुळ्' (मीठी गूँज) गान से गूँजते हैं
उस वेंकट को आलय बनाकर
आकाश में सूर्यमण्डल में नित्य विराजित होनेवाले भक्तों ने
प्रभु की दास्य-वृत्ति स्वीकार कर ली।

(7) *काशै आड़ै मूड़ि ओडि - क् कादल् शॆय्दान् - अवनूर्*
*नाशमाह नम्बवल्ल नम्बि नम् पॆरुमान्*
*वेयिन् अन्न तोळ् मड़वार् वॆण्णेय् उण्डान् - इवन् ऍन्रु*
*एश निन्र् ऍम् पॆरुमान् ऍव्वुळ् - किड़न्दाने।*

भावार्थ

काषाय वस्त्र से शरीर को ढककर,
रावण ने पंचवटी क्षेत्र पर पहुँचकर सीता का अपहरण किया
प्रभु ने कामुक उस रावण की लंकापुरी को ध्वस्त किया।

हमारे उस प्रभु को देखकर,
बांस के समान सुन्दर भुजाओंवाली ये कामिनियाँ,
उपहास कर रही हैं—"इसने मक्खन की चोरी की है।"
वे प्रभु ऍव्वुळ् क्षेत्र में विराजमान एवं शोभायमान हैं।
(ऍव्वुळ् क्षेत्र—मद्रास शहर से तीस मील की दूरी पर स्थित है।)

(8) *पॆण् आहि इन् अमुदम् वच्चित्तानै-प्*
*पिरै ऍयिऱ्रु अन्रु अड़ल् अरियाय् - प् पॆरुहिनानै*
*तण् आर्न्द वार् पुनल् शूल् मेय्यम् - ऍन्नुम्*
*तड़ वरै मेल् किड़न्दानै-प् पणङ्गळ् - मेवि*
*ऍण्णानै ऍण्णिरन्द मुहलिनानै*
*इलङ्गु ऑळि शेर् अरविन्दम् - पोन्रु नीण्ड*
*कण्णानै, कण्णार - क् कण्डु कॊण्डेन्*
*कड़ि पॊलिल् शूल् कडल् मलले - त् तल शयनत्ते।*

भावार्थ

हमारे प्रभु स्त्री वेष धारणकर, असुरों को वंचित करनेवाले हैं।
प्राचीन काल में सिंह के रूप में (नरसिंह अवतार) अवतार लेनेवाले हैं
शीतल जल से, घिरे हुए विशाल पर्वत पर,
सर्प-कणों के नीचे शयन करनेवाले हैं।
वे कान्तियुक्त तेजोमय स्वरूपवाले हैं, अरविन्द के समान नयनवाले हैं

मैंने उस प्रभु को आँख भर देख लिया
वे प्रभु सुगन्धित वाटिकाओं से घिरे
कड्ल-मल्लै-त्-तल् में शयन करते हैं।

(9) *गन्द मा मलर् ऍट्टुम् इट्टु निन् कामर् - शेवड़ि कै तॊ`लुदु ऍलुम्*
*पुन्दियेन् मनत्ते पुहुन्दायै - प् पोहल् ओ`ट्टेन्*
*शन्दि वेळ्वि शड़ङ्गु नान् मरै ओदि ओदुवित्तु आदियाय् वरुम्*
*अन्दणाळर् अऱा अणि आलि अम्माने।*

भावार्थ

सुगन्धित और श्रेष्ठ आठ प्रकार के पुष्प[1] को प्रभु को समर्पित कर,
प्रभु के सुन्दर अरुण चरणों को हाथ जोड़कर,
मोक्ष पाने के लिए मेरा मन व्यथित हो रहा है।
पर तुमको मैं अपने मन में ही रखूँगा
मन में प्रविष्ट तुमको बाहर जाने नहीं दूँगा
मेरे प्रभु त्रिकाल के स्वामी हैं
वे सन्ध्या, यज्ञ, अज्ञ, कर्मों के प्रतिपादक हैं।
चारों वेदों से पूजनीय हैं
अध्ययन करनेवाले ब्राह्मणों से घिरे आलि नगर में विराजमान हैं।

(10) *शिरै आर् उवण - प् पुळ् ओ`न्रू एरि - अन्ऱु*
*तिशै नान्गुम् नान्गुम् इरिय शॆ`रुविल्*
*करै आर् नॆ`डु वेल् अरक्कर् मड़िय - क्*
*कडल् शूल् इलङ्गै कडन्दान् इडन्दान्*
*मुऱैयाल् वळर्क्किनर् मुत्तीयर नाल्वेदर्*
*ऐवेळ्वि आऱु आङ्गर् ऍल़ इन् - इशैयोर्*
*मऱैयोर् वणङ्ग - प् पुहल़ ऍय्दु नाङ्गूर्*
*मणि माड़-क कोयिल् वणङ्गु ऍन् मनने।*

भावार्थ

पंखों से शोभायमान गरुड़ पर आरूढ़ होकर सुशोभित हैं।
राक्षसों का संहार करनेवाले, लंका को जीतनेवाले वे प्रभु,

1. अष्टविध पुष्पः 1. करुमुगै, 2. कर्पकम् - (कल्पक), 3. नाकल् - (कर्णिकार), 4. मन्दारम् - (मन्दार), 5. सौंगधि, 6. शेड्कलुनीर् - (कल्हार), 7. तामरै (कमल), 8. कैदै-(केतकी), *दिव्य-प्रबन्ध,* भाग-3

तिरुनाङ्गूर में सुशोभित हैं,
उस दिव्य नगर में स्थित मन्दिर की कीर्ति वेदविज्ञों से होती रहती है।
ये वेदविज्ञ तीनों बार आहुति अर्पित करनेवाले हैं
अग्निहोत्र करनेवाले हैं,
चारों वेदों का अध्ययन करनेवाले हैं
पंच यज्ञ तथा षट् अंगवाले हैं और सप्त स्वरवाले हैं
मेरे मन! उस नाङ्गूर मन्दिर की वन्दना करो।

(तीन अग्नियाँ—आह्वनीय, गार्हस्पत्य और दक्षिणाग्नि।)
चार वेद—ऋक्, यजु, साम और अथर्व
पंच (महा) यज्ञ—देवयज्ञ, ऋषियज्ञ, पितृयज्ञ, मनुष्ययज्ञ और भूतयज्ञ।
षट् अंग—शिक्षा, व्याकरण, छन्द, निरुक्त, ज्योतिष और कल्प।
सप्त स्वर—षट्ज, ऋषभ, गान्धार, मध्यम्, पंचम, धैवत् और निषाद।
संगीत—सा रे ग म प ध नि
*दिव्य-प्रबन्ध,* भाग-3, पृष्ठ 163

(11) *शॆऩ्रु शिन विड़ै ऍलुम् पड़ अड़्ऱ्तु - पपिऩ्नै*
*शॆव्वि-त् तोळ् पुणरन्दु उहन्द तिरुमाल् - तऩ् कोयिल*
*अऩ्रु अयनुम् अरऩ् शॆयुम् अनैयवर्हळ् - नाङ्गूर्*
*अरि मेय विण्णगरम् अमर्न्द शॆंलुम् - कुऩ्ऱै*
*कऩ्रि नॆंडु वेल् वलवऩ् मङ्गैयर् तम् कोमाऩ्*
*कलि कऩ्रि ओंलि मालै ऍन्दिनोडु - मूऩ्ऱुम्*
*ओंऩ्रिनोडुम् ओऩ्ऱुम् इवै कऱ्ऱु वल्लार उलहत्तु*
*उत्तमर्हटकु उत्तमराय् उम्बरुम् आवर्हळे?*

**भावार्थ**

प्राचीन काल में क्रोधित होकर, सात वृषभों का दमन कर,
नप्पिऩ्नै की सुन्दर भुजाओं का आलिंगन कर, प्रसन्न होनेवाले प्रभु का मन्दिर
नांगूर अरिमेय विण्णगरम् है,
इस नगर के मन्दिर में अज तथा शिवपुत्र वास करते हैं
इस मन्दिर में विराजमान ऊँचे गिरि के प्रभु के प्रति
आनन्दित तेज बरछा चलाने में समर्थ
मङ्गै के अधीश्वर कलिविमर्दन ने प्रभु की प्रशस्ति में माला रची।
इस माला के पदों के पाँच के साथ तीन और एक के सहित एक
(अर्थात् दस पद)

सीखकर उनको कहने में जो सफल होते हैं
वे भगवान के भक्तों में उत्तम होकर
नित्यसूरी की तरह हो जाएँगे।
(पाँच पद–कृष्णविषयक पाँच पद–2, 3, 7, 8, 6
तीन–नरसिंहविषयक तीन पद–4, 5, 6
एक–अर्चावतार विषयक
एक-एक फल श्रुति जो अन्तिम है, कुल दस पद)
*दिव्य-प्रबन्ध*–भाग-3, पृष्ठ 181

(12) *नुम्मै - त् तॊलुदोम् नुम् तम् पणि शॆयदिरुक्कुम् नुम् अड़ियोम्*
*इम्मैक्कु इनुबम् पॆ.ररोम ऍन्दाय्! इन्दळूरीरे!*
*ऍम्मै - क् कड़िदा-क् करुमम् अरुळि 'आ आ' ऍन्रु इरङ्गि!*
*नम्मै ओंरु काल् काट्टि नड़न्दाल् -नाङ्गळ् उऱ्योमें!*

**भावार्थ**

हमने की, तुम्हारी वन्दना।
हम तुम्हारी सेवा करनेवाली दासियाँ हैं।
हमने इस जन्म में आनन्द प्राप्त किया।
हमारे स्वामी इन्दळूर के स्वामी!
हमें शीघ्र ही अपने अनुकम्पा से कृपा प्रदान करो।
एक बार दर्शन देकर चले जाओगे तो क्या हम कृतार्थ नहीं हो जायेंगी।

(13) *कळ्वनेन् आनेन् पडिरु शॆय्दु इरुप्पेन्*
*कण्डवा तिरितन्देन्लुम्*
*तॆळ्ळियेन् आन्ने शॆल्-गतिक्कु अमैन्देन्*
*शिक्केन-त् तिरुवरुळ् पेऱ्रेन्*
*उळ्ळेलाम् उरुहि-क् कुरल् तलुत्तु ओंलिन्देन्*
*उडम्बेलाम् कण्णा-नीर् शोर्*
*नळ्-इरुळ् अळवुम् पहलुम् नान् अलैप्पन्*
*नारायणा ऍन्नुम् नामम्।*

**भावार्थ**

चोरी करता था, दुष्कर्म करता था, इच्छाओं के वशीभूत होकर भटकता रहता था, फिर भी आज विशद ज्ञान से पूर्ण हो गया हूँ। जिस पथ पर जाना है, उसके योग्य बन गया हूँ। श्री कृपा को सुदृढ़ रूप से प्राप्त कर लिया है। मेरा सम्पूर्ण

अन्तःकरण द्रवीभूत हो जाता है। स्वर गदगद हो जाता है। सम्पूर्ण शरीर पर अश्रुधारा प्रवाहित होती रहती है। गहरी रात और दिन भर प्रसिद्ध नाम 'नारायण' का जाप करता रहता हूँ।

(14) *मऱ्म् कोॅळ् आळ-अरि उरुवेन वेॅरुवार*
*ओॅरुवनदु अहल् माऱ्वम्*
*तिऱन्दु वानवर् मणिमुडि पणिदऱ्*
*इरुन्द नल् इमयत्तुळ्*
*इऱङ्गि एनङ्गळ् वळै मरुप्प इडन्दिड-क्*
*किडन्द अरुहु ऐरि वीशुम्*
*पिऱङ्गु मामणि अरुवियोडु इलि तरु*
*पिरिदि शेन्ऱु अडै नेञ्चे।*

**भावार्थ**

नरसिंह के क्रोधित रूप के उल्लेख मात्र से जो काँप उठता था, उसके विशाल वक्ष को विदीर्ण करनेवाले को, मणिमय मुकुटवाले देवता नतमस्तक होते हैं। वह हरि हिमालय के क्षेत्र में विराजमान है और उससे झरने बह निकलते हैं उसके साथ उज्ज्वल मणि भी बहकर आते हैं। उस हिमालय के क्षेत्र में जा पहुँचो।

(15) *इरवु कूऱ्न्द इरुळ् पेॅरुहिय वरै मुलै*
*इरुम् पशि अदु कूर*
*अरवम् आविक्कुम् अहम् पोॅलिल् तलुविय*
*अरुवरै इमयत्तु*
*'परमन् आदि एम् पनि मुहिल् वण्णन् ऍन्ऱु*
*ऍण्णि निन्ऱु इमैयोऱ्गळ्*
*पिरमनोडु शेॅन्ऱु अडि तोॅलुम् पेॅरन्तहै प्*
*पिरिदि शेॅन्ऱु अडै नेॅञ्चे।*

**भावार्थ**

जहाँ लम्बी रात में गहन अन्धकार रहता है। अत्यधिक भूख लगने के कारण अजगर गुहाओं में फुफकारते हैं। ऐ मन! ऐसे घने उपवनों से पूर्ण दुर्गम ढालवाले उस हिमालय के क्षेत्र में जा पहुँचो। उस क्षेत्र की महिमा ऐसी है कि देवतागण ब्रह्मा के साथ वहाँ जाकर, खड़े होकर, परमात्मा का ध्यान कर, उस शीतल जलदवर्ण के चरणों में प्रणत होते हैं।

(16) *पप्प अप्पर् मूत्तवारु पालप्पदु शीत्-तिरळै*
*ओॅप्प ऐक्कळ् पोद उन्द उन् तमर् काण्मिन् ऍन्रु*
*शेॅप्प् नेर् मेॅन् कोॅङ्गै नल्लार ताम् शिरियाद मुन्नम्*
*वैप्पुम् नङ्गळ् वाल़्वुम् आनान् वदरि वणङ्गुदमे।*

**भावार्थ**

अरे बाप रे!
बाबा की वृद्धावस्था कैसी मन में जुगुप्सा उत्पन्न करती है,
पूय पिंड सम श्लेष अधिक मात्रा में निकलता है।
अपने प्रेमी को देखो।
कलशों के समान कोमल पयोधरवाली कामिनियों के हास्य का पात्र बनने से पूर्व,
हमारी निधि तथा जीवन देनेवाले प्रभु के बदरिकाश्रम को प्रणाम करें।

(17) *कानिडै उरुवै-च् चुडु शरम् तुरूदु*
*कण्डु मुन् कोडन्तेॅलिल्-उरवोन्*
*ऊनुडै अहलत्तु अडु कर्ण कुळिप्प*
*उयिर् करवून्दु उहन्द एम्मोरुवन्*
*तेनुडै-क् कमलत्तु अयनोॅडु देवर्*
*शेॅन्रु इरैञ्चिड पेॅरुगु*
*वानिडै मुदुनीर्-क् कङ्गैयिन् करै मेल्*
*वदरियाच्चिरमत्तु उळ्ळाने।*

**भावार्थ**

वन में हिरन को देख अग्निबाण चलाया,
निकृष्ट कर्म करनेवाले बालि के मांसल वक्ष पर तीक्ष्ण शर चला,
उसके प्राण हरे और प्रसन्न हुए।
ऐसे हमारे अद्वितीय प्रभु,
आकाश में अनादिकाल से बहनेवाली गंगा के किनारे
बदरिकाश्रम में विराजमान हैं।
जहाँ मधुपूर्ण कमल पर विराजमान ब्रह्मा के साथ
देवतागण जा-जाकर प्रणाम करते हैं।

(18) *कलैयुम् करियुम् परि मावुम्*
*तिरियुम् कानम् कडन्द पोय्*

*शिलैयुम् कणैयुम् तुणैयाह-च्*
*चे॑न्रान् वे॑न्ऱि-च् चे॑ऱु-क् कळत्तु*
*मलै को॑ण्डु अलै नीर् अणै कट्टि*
*मदिळ् नीर् इलङ्गै वाळअ अरक्कर्*
*तलैवन् तलै अरुत्तु उहन्दान्*
*शाळक्किरामम् अडै ने॑ञ्चे!*

भावार्थ

हिरण, हाथी और अश्व जैसे मृग जहाँ संचार करते हैं, उस गहन वन को पार कर, धनुष तथा बाण का आश्रय ले, विजय देनेवाले युद्ध क्षेत्र में जो गए, शैलों द्वारा तरंगायित सागर पर सेतु बाँधा, प्राकारों और सागर द्वारा घिरी लंका के खड्गधारी राक्षसराज के दस सिर काटकर प्रसन्न हुए, उनके शालग्राम क्षेत्र में ऐ मन! जा पहुँचो।

(19) *मानेय् कण् मडवार् मयक्किल् पट्टु मा निलत्तु*
*नाने नाना विदनरकम् पहुम् पावम् शे॑य्देन्*
*तेनेय् पूम् पो॑ऴिल् शूऴ् तिरुवङ्कट मा मलै ऍन्*
*आनाय् वन्दडैन्देन् अडियेनै आट् को॑ण्डरुळे।*

भावार्थ

मृगनयनी रमणियों के मोह में पड़कर मैंने स्वयं अनेक प्रकार के नरक में ले जानेवाले पाप किए, भ्रमरों से गुंजित, मनोहर पुष्प उद्यानों से घिरे श्रीवेंकट महापर्वत के मेरे हाथी! मैंने आकर शरण ली। मुझ दास को अपना सेवक बनाने की कृपा करो।

(20) *मानेय् मड नोक्कि तिऱत्तु ऍदिर् वन्द*
*आनेऴ् विडै शे॑ऱ्ऱ अणि वरै-त् तोळा!*
तेने! तिरु वेङ्कट मामलै मेय
*कोने! ऍन्न मनम् कुडि को॑ण्डिरुन्दाये।*

भावार्थ

हरिण सम मनोहर नयनवाली नपिन्नै हेतु, युद्धरत सात वृषभों का संहार करनेवाले, पर्वत के समान भुजाओंवाले, मधु! श्रीवेंकट महापर्वत में प्रेम के साथ निवास करनेवाले मेरे स्वामी! मेरे मन को अपना निवास स्थान बना विराजित हो।

(21) *तञ्जम् इवर्क्कु ऍन् वळैयुम् निल्ला*
*ने॑ञ्जम् तम्मदे चिन्दित्तेरकु*

*वञ्जि मरुङ्गल् ने॑रुङ्ग नोक्कि*
*वाय् तिरन्दु ओन्रु पणित्तदु उण्डु*
*नञ्जम् उडैत्तु इवर् नोक्कुम नोक्कम्*
*नान् इवर् तम्मै अरिय माट्टेन्*
*अञ्जुवन् मर्रु इवर् आर् को॑ल्? ऍन्न*
*अट्ट पुयकरत्तेन ऍन्रारे।*

**भावार्थ**

इसमें सन्देह नहीं है कि इनके कारण ही मेरे हाथों में कंगन टिक नहीं पाते, समीक्षा करती हूँ तो मन भी इनका हो जाता है, इस प्रकार देखा कि लता जैसी कटि झुक गई। मुँह खोलकर एक वचन बोले। इनकी दृष्टि बहुत तीक्ष्ण है। मैं इनको समझने में अक्षम हूँ। भय लगता है। न जाने, ये कौन है? मेंने कहा, तो वे बोले, "मैं हूँ अष्टभुजाधारी!"

(22) *को॑ण्डु अरव-त् तिरै उलवु कुरै कडल् मेल् कुल वरैपोल्*
*पण्डु अरविन् अणे-क् किडन्दु पार् अळन्द पण्बाळा!*
*वण्डु अमरुम् वळर् पो॑ऴिल् शूल वयलालि मैन्दा!*
*कण् तुयिल् नी को॑ण्डायुक्कु ऍन् कनवळैयुम् कडवेनो!*

**भावार्थ**

गर्जनापूर्ण लहरों के संचार से युक्त महासागर से प्रेम करके, पुराकाल में गिरि सम सर्पशय्या पर शयन करनेवाले, धरती को मापनेवाले, उत्कृष्ट गुणों से पूर्ण, भ्रमरपूरित उपवनों से परिवृत्त खेतवाले आलि के तरुण। मेरे नयनों से निद्रा हरनेवाले, क्या अब तुम्हारे हाथ, मैं अपने सोने के कंगनों को भी खो बैठूँ?

(23) *कन्रु अदनाल् विळवु ऍऱिन्द कनि उदिर्तकाळै*
*कामरु शीर् मुहिल् वण्णन् कालिकळ् मुन् काप्पान्*
*कुन्रु अदनाल् मलै तुड्त्तु-क् कुडम् आडु कूतम्*
*कुलवुम् इडम् को॑डि मदिळ्कळ् माळिहै गोपुरङ्गळ्*
*तुन्रु मणि मण्डगङ्गल् शालैहळ् तू मरैयोर्*
*तो॑क्कु ईण्डि-त् तो॑लुदियोडु मिह-प् पयिलुम् शोलै*
*अन्रु अलर् वाय् मदु उण्डु अङ्गु अळि मरलुम् नाङ्गूर्*
*अरि मेय विण्णगरम् वणङ्गु मड ने॑ञ्चे।*

**भावार्थ**

बछड़े को कपित्थ वृक्ष पर फेंककर फलों को गिरानेवाले नवयुवा! गुणी श्यामा गायों की रक्षा हेतु गिरिधारण कर वर्षा का निवारण करनेवाले! आनन्दित हो घट-नृत्य करनेवाले का स्थान नाङ्गूर अरित्रेय विण्णगरम् है, जिसमें ध्वज धारण किए प्राचीर, महल, गोपुर, सघन मणिमंडप और शालाएँ हैं। पावन श्रोत्रिय समूह के समूह इकट्ठा होकर विहग-ध्वनि के साथ उसके आरामों में वेदों का अभ्यास करते हैं जिसके ताज़े खिले पुष्पों का मधुपान कर भ्रमर गुंजायमान रहते हैं। ऐ विनीत मन! उस नाङ्गूर् अरिमेय विण्णगरम् की वन्दना करो।

(24) *अन्ऱिय वाणन् आयिरम् तोळुम्*
*तुणिय अन्ऱु आऴि तोॅट्टानै*
*मिन् तिहऴ् कुडुमि वेङ्कट मलै-मेल्*
*मेविय वेद-नल् विळक्कै*
*तेन् तिशै-त् तिलदम् अनैयवर् नाङ्गै-च्*
*चेॅम्पोन् शेय् कोयिलिन् उळ्ळे*
*मन्ऱु अदु पोॅलिय महिऴ्न्दु निन्ऱानै*
*वणङ्गि नान् वाऴ्न्दु ओॅऴिन्देने।*

**भावार्थ**

क्रोधी बाणासुर की हज़ार भुजाओं को काटने के लिए पुराकाल में जो चक्र का प्रयोग करनेवाले हैं, विद्युत्-शिखरों से पूरित वेंकट गिरि पर निवास करनेवाले वेद हैं तथा उत्तम दीपक के समान हैं, दक्षिण दिशा के तिलक तुल्य पवित्र सज्जन लोगों के नाङ्गै जनपद के शेम्पोन् शेये के महान मन्दिर में जन-समूह की शोभा बढ़ाते हुए जो प्रसन्नता के साथ विराजमान हैं, उनकी प्रार्थना करके ही मैं सफल हो पाया।

(25) *वार् आरुम् मुलै मडवाळ् पिन्नैक्कु आहि*
*वळै मरुप्पिल् कडुम् शिनत्तु वन् ताळ् आर्न्द*
*कार् आर् तिण् विडै अडऱप्पु वदुवै आण्ड*
*करुमुहिल् पोल् तिरु निरत्तु ऍन् कण्णर् कण्डीर्*
*एर् आरुम् मलर्-प् पोॅऴिलऍहळ् तऴ्वि ऍङ्गुम्*
*ऍलिल् मदियै-क् काल् तोॅडर् विळङ्कु शोदि*
*शीर् आरुम् मणि माडम् तिहलुम् नाङ्गुर्-त्*
*तिरु-त् तेॅऱ्ऱि यम्बलत्तु ऍन् शेॅङ्कण् माले।*

### भावार्थ

कंचुकीबद्ध स्तनवाली, गुणसम्पन्न नपिन्नै के लिए तिरछे सिंह सदृश क्रोधी और बलिष्ट काले वृषभों का दमन कर, नपिन्नै से विवाह करनेवाले, नील-मेघ सम वर्ण वाले मेरे रक्षक, देखो नाङ्गूर तिरु-त्तेररि अम्बलम् में विराजमान अरुणलोचन प्रभु हैं—नाङ्गूर् जिसमें मनोहारी पुष्पों से भरे उपवन सर्वत्र फैलकर, शोभन चन्द्र की गति को रोकते-से दीखते हैं और जो कान्तिपूरित तथा वैभव से सम्पन्न प्रासादों से शोभायमान हैं।

(26) *एवु इळम् कन्निक्कु आहि इमैयवर् कोनै-च् चॆ॑र्रु*
*कावळम् कडिदु इरुत्तु-क् कर्पकम् कॊ॑ण्डु पोन्दाय।*
*पूवळम् पॊ॑लिल्कळ् शुल्न्द पुरन्दरन् शॆ॑यूत नाङ्गै-क्*
*कावळम् पाडि मेय कण्णने कळैकण् नीये।*

### भावार्थ

तरुणा सत्यभामा को सन्तुष्ट करने के लिए युद्ध में इन्द्र को हराकर, उसके नन्दन वन की समृद्धि को नष्ट कर, कल्प वृक्ष उठा लानेवाले, जो पुष्पों से पूर्ण उपवनों से घिरे और जिसका निर्माण पुरन्दर ने किया था, उस नांगै जनपद के कावलम् तण् पाडि में प्रेम के साथ वास करनेवाले कृष्ण! तुम ही मेरे रक्षक हो।

(27) *वाराहम् अदु आहि इम् मण्णै इडन्दाय्*
*नारायणने! नल्ल वेदियार्नाङ्गूर् च्*
*शीरार् पॊ॑लिल् शूल् तिरुवळ्ळ-क् कुळत्तुळ्*
*आरा अमुदे! अडियेर्कु अरुळाये।*

### भावार्थ

वराह बनकर धरती का उद्धार करनेवाले! नारायण! वेद ज्ञाता ब्राह्मणों से पूरित नाङ्गूर् में समृद्धि से पूर्ण उपवनों से घिरे तिरु-वळ्ळ-क-कुळम् में निवास करनेवाले तुम वह अमृत हो, जिससे कभी तृप्ति नहीं होती अर्थात् जो अपर्याप्त ही रहता है। ऐसे प्रभु! मुझ दास पर कृपा करो।

(28) *उलहम् एत्तुम् ओर्रुवन् ऍन्रुम्*
*ऑ॑ण् शुडरॊ॑डु अम्बर् ऍयदा*
*निलवुम् आलि-प् पडेयन् ऍन्रुम्*
*नेशन् ऍन्रुम् तॆ॑न् दिशैक्कु*
*तिलदम् अन्न मरैयोर् नाङ्गै-त्*
*देवदेवन ऍन्रु ऍन्रु ओदि*

*पलरुम् एश एन् मडन्दै*
*पार्त्तन् पळ्लि पाडुवाळे।*

**भावार्थ**

संसार द्वारा समर्थित अद्वितीय प्रभु! मेरे प्रियतम हैं, सूर्य चन्द्र आदि से अधिक ज्योतिर्मय हैं, जो देवों को भी प्राप्त नहीं होते, प्रबल चक्रधारी हैं, स्नेही नाङ्गै जनपद में विराजित देवाधिदेव, जो जनपद दक्षिण दिशा का तिलकतुल्य है और श्रोत्रियों का निवास स्थान है। इस प्रकार कह-कहकर मेरी गुणवान कन्या प्रभु के आवास पार्थन-पळ्लि का गान करती है जिससे अनेक लोगों द्वारा निन्दित हो रही है।

(29) *कुडैया विलङ्गल् कोण्डु एन्दि*
*मारि पलुदा निरै कात्तु*
*शडैयान् ओड अडल् वाणन्*
*तडम् तोळ् तुणित तलैवन् इडम्*
*कुडिया वण्डु कळ् उण्ण क्*
*कोल् नीलम् मट्टु उहकुम्*
*पुडैयार् कलूनि ऍलिल् आरुम्*
*पुळ्ळम् पूदङ् कुडि ताने।*

**भावार्थ**

पर्वत को छत्र के समान धारण कर मूसलाधार वर्षा को व्यर्थ कर दिया और गो-समूह की रक्षा की, जटाधर रुद्र को भगाकर बाणासुर की पुष्ट भुजाओं को काट डाला, उन स्वामी का निवासस्थान पुलूलम् पुदङ्कुडि है जो चारों ओर विशाल खेतों की शोभा से सम्पन्न है। मनोहर कुवलय मधु-मधु बहते हैं, जिसका झुण्ड-के-झुण्ड आकर मधुकर पान करते हैं।

(30) *वशैयिल् नान् मऱैकॆडुत्त अम्मलर्*
*अयऱक्कु अरुळि मुन् परिमुकमाय्*
*इशै कोळ् वेदनूल् ऍन्ऱु ऍन्ऱु इवै पयन्दवने।*
*ऍनक्कु असळ् पुरिये*
*उयर् कॊळ् मादवि-प् पोदोडु*
*उलाविय मारुतम् विदियिन् वाय्*
*तिशै ऍल्लाम् कमलुम् पॊऴिल्*
*शूऴ् तिरु वॆळ्ळऱै निन्ऱाने।*

**भावार्थ**

जिस ब्रह्मा ने दोषविहीन चार वेदों को खोया, उस पर कृपा कर, हँसमुख होकर तुमने कहा, "ये वेदशास्त्र स्वरसम्पन्न हैं" और उन्हें पुनः प्रदान किया, ऐसे प्रभु! मुझ पर कृपा करो। उपवनों से घिरे तिरुवेल्लरै में खड़े रहनेवाले प्रभु! तिरुवेल्लरै क्षेत्र की वीथियों में उच्च माधवी-पुष्पों का स्पर्श कर पवन संचरित होता है और सभी दिशाओं को सुगन्धित करता है।

(31) *शेयन् ऍन्रुम् मिह-प् पॆरियन् नुण नेर्मैयिनाय् इम्*
*मायै यारुम् अऱिया वहैयान् इडम् ऍन्बर् आल्*
*वेयिन् मुत्तुम् मणियुम् कॊणर्न्दु आर् पुनल् काविरि*
*आय पॊन् मा मदिळ् शूऴ्न्द अऴहु आर् तॆन् अरङ्गमे।*

**भावार्थ**

जो दूरस्थ रहनेवाले हैं, बहुत बड़े हैं, जिनका स्वभाव अत्यन्त दुरूह है, जिनकी माया कोई भी नहीं जान पाता कि वह किस प्रकार की है। अरे! कहते हो, उनका निवास स्थान मनोहरता से पूर्ण दक्षिणी श्रीरंग है, जो कावेरी नदी से घिरा है, जिसका प्रबल जलप्रवाह बाँस के मोती और मणि बहा लाता है तथा जो श्रीरंग उत्तम सुवर्ण के विमल प्राकारों से घिरा है।

(32) *पॊय् वण्ण् मनत्तु अहर्रि-प् पुलन् ऐन्दुम् शॊल् वैत्तु*
*मॆय् वण्णम् निनैन्दवर्क्कु मेय्न् निन्ऱ वित्तहनै*
*मै वण्णम् करु मुहिल् पोल् तिहल् वण्ण मरतहत्तिन्*
*अव् वण्णवण्णनै यान् कण्डदु तॆन् अरङ्गत्ते।*

**भावार्थ**

झूठे प्राकृत विषयों से मन को दूर कर, और पाँचों इन्द्रियों को विषयों से दूर कर सत्य-रूप भगवान का जो ध्यान करते हैं, उनके लिए सत्यरूप तेजस्वी, अंजन वर्ण श्याम मेघ वर्ण, मरकत वर्ण उपमित जो प्रभु हैं उन्हें मैंने जहाँ देखा, वह स्थान सुन्दर श्रीरंग है।

(33) *ऒरुवनै उन्दि-प् पू मेल् ओङ्गुवित्तु आहम् तन् नाल्*
*ऒरुवनै-च् चापम् नाक्कि उम्बर् आळ् ऍन्ऱु विट्टान्*
*पॆरु वरै मदिमळ्हळ् शूऴ्न्द पॆरु नहर् अणै मेल्*
*करु वरै वण्णन् तेन् पेर् करुदि नान् उय्न्दवारे।*

### भावार्थ

एक चतुर्मुख ब्रह्मा को जिन्होंने अपने नाभिकमल से उत्पन्न किया तथा शरीर से निकलनेवाले रक्त से दूसरे का शाप मोचन कर, यह कहकर उसे भेज दिया कि तुम पहले की तरह देवों पर शासन करो और जो विशाल पर्वत जैसे प्राचीरों से घिरे महानगर में सर्पशय्या पर शयन करते हैं, उन अंजनगिरि वर्ण का ध्यान कर मेरे समुज्जीवित होने की रीति ही विचित्र है।

(34) *मूळ ऐरि शिन्दि मुनिवु ऍयूदि अमर्*
*शॆयूदुम् ऍन् वन्दु अशुरर्*
*तोळुम् अवर् ताळुम् मुडियोडु पॊंडि*
*आह नॊंडियाम् अळवु ऍयूदान्*
*वाळुम् वरि विल्लुम् वळै आऴि गदै*
*शङ्गम् इवै अम् कै उडैयान्*
*नाळुम् उऱै हिनऱ नहर् नन्दिपुर*
*विण्णहरम् नण्णु मनमे।*

### भावार्थ

क्रोधी असुर यह कहते हुए आए कि वे अग्निमय समर करेंगे, उनके भुज, चरण शीश क्षणमात्र में ही चकनाचूर हों प्रभु ने ऐसे बाण चलाए, उनके हाथों में खड्ग, धनुष्, गोल चक्र, गदा तथा शंख शोभायमान है, वे प्रभु सदैव जिस नगर में वास करते हैं वह नन्दिपुर विण्णगरम् है। ऐ मन! तुम वहाँ पहुँच जाओ।

(35) *पू मरु पॊंलिऌ् अणि विण्ण हर् मेऌ्*
*कामरु शीर्-क् कलि कनऱि शॊंन्न*
*पा मरु तमिऴ् इवै पाड वल्लार्*
*वामनन् अडि इणै मरुवुवरे।*

### भावार्थ

पुष्पों से पूरित, समृद्ध उपवनों से शोभायमान, विण्णगर के प्रति मनोहर मंगल गुणों से युक्त कलि विमर्दन सन्त परकाल ने तमिऴ् के ये छन्दमय पद्य रचे। इनका गान करने में जो समर्थ हैं, उन्हें वामन भगवान के चरण युगल प्राप्त होंगे।

(36) *कलऌ्ला ऐम् पुलन्गळ् अवै कण्डवारु शॆंय्य किलऌ्लेन्*
*मलऌ्ला! मल् अमरुल् मलऌ्लर् माळ मल् अडर्त्त*

*मल्ला! मल्ल अम् शीर् मदिळ्नीर् इलङ्गै अलित्त*
*विल्ला! निन् अडैन्देन् तिरु विण्णहर् मेयवने।*

भावार्थ

अनियमित पंच इन्द्रियों की प्रेरणा के अनुसार चलने की शक्ति मुझमें नहीं है। सर्वशक्तिमान! द्वन्द्व युद्ध में जिस प्रकार मल्लों का अन्त हो, वैसा उनके बल को नष्ट करनेवाले पराक्रमी! ऐश्वर्य, सौन्दर्य तथा उन्नति से युक्त प्राचीरों से और सागर से घिरी लंका को ध्वस्त करनेवाले धनुषधारी! मैं तुम्हारी शरण में आया हूँ—श्री विण्णगर में प्रेम के साथ निवास करनेवाले प्रभु!

(37) *तुऱन्देन् आर्व-च् चॆ॒ऱ्ऱ-च् चुऱ्ऱम् तुऱन्दमैयाल्*
*शिऱन्देन् निन् अडिक्के अडिमै तिरुमाले।*
*अऱम् तानाय्-त् तिरिवाय्! उन्नै ऍन् मनत्तु अहत्ते*
*तिऱम्बामल् कॊ॒ण्डेन् तिरु विण्णहराने।*

भावार्थ

राग और द्वेष से पूरित बाँधवों को मैंने त्याग दिया।

त्यागने से ही मैं तुम्हारे चरणों की सेवा के योग्य बना, श्रीमन्नारायण। स्वयं सनातन धर्म होकर विचरनेवाले भगवान! तुम्हें मैंने अपने मन के भीतर दृढ़ता के साथ रख लिया हैं श्रीविण्णगर में विराजमान प्रभु!

(38) *पारै ऊरुम् पारम् तीर्-प् पार्त्तन तन्*
*तेरै ऊरुम् देवदेन् शॆ॒रुम् ऊर्*
*तारै ऊरुम् तण् तळिर् वेलि पुडै शूऴ्*
*नारै ऊरुम् नल् वयल् शूऴ्न्द नरैयूरे।*

भावार्थ

धरती का दुःखद भार हटाने के लिए, पार्थ के सारथी बननेवाले प्रभु से सुशोभित नगर है—नरैयूर जो समृद्ध खेतों से घिरा है, जो खेत मधुधारा प्रवाहित वृक्षों से घिरे हैं और जिनमें बगुले संचार करते हैं।

(39) *पन्दु आर् विरलाळ् पाञ्चालि कूदल् मुडिक्क बारदत्तु*
*कन्दार् कळिऱ्ऱुक् कऴल् मन्नर् कलङ्ग-च् चङ्गम् वाय् वैत्तान्*
*शॆ॒न्तामरै मेल् अयनोडु शिवनुमे अनैय पॆ॒रुमैयोर्*
*नन्दा वण् कै मऱैयोर् वाऴ् नरैयूर् निन्ऱनमन्बिये।*

**भावार्थ**

कन्दुक क्रीड़ा में रत उँगलियों वाली द्रौपदी के खुले केश बँधवाने के लिए जिन्होंने शंखनाद किया, जिससे मदमत्त गजों पर सवार, तथा पैरों में जैत्र कटक धारण करनेवाले राजा भी क्षुब्ध हो उठे, वे ही नरैयूर में स्थित नम्बि हैं, जहाँ गौरवशाली श्रोत्रिय वास करते हैं जो अरुण कमलासन पर विराजमान ब्रह्मा तथा शिव दोनों से उपमित हैं और जो मुक्तहस्त से देनेवाले हैं।

(40) *कल़लार् मदिळ् शूल् कडि इलडगै-क् कार् अरक्कन्*
*वल्लाहम् कीळ वरि वॆम् शरम् तुऱन्द*
*विल्लानै शॆल्व विभीसणऱ्कु वेराह*
*नल्लानै नाडि नऱैयूरिल् कण्डेने।*

**भावार्थ**

शिला प्राचीरों एवं सागर से घिरी लंका के भयंकर राक्षस रावण का प्रबल शरीर जिससे बिंध गया, ऐसा भयंकर बाण चलानेवाले प्रभु! जो वैभवपूर्ण विभीषण के प्रेमी हैं उनकी खोजकर मैंने उन्हें नरैयूर में देखा।

(41) *तिण् कनक मदिळ् पुडै शूल् तिरु नऱैयूर् निन्ऱानै*
*वण् कळहम् निलवु ऍरिक्कुम् वयल् मङ्गै नगर् आळन्*
*पण्गळ् अहम् पयिन्ऱ शीर्-प् पाडल् इवै पत्तुम् वल्लार्*
*विण्गळ् अहत्तु इमैयवराय् वीऱ्ऱिरुन्दु वाऴ्वारे।*

**भावार्थ**

सुदृढ़ और चूने से लिप्त प्राचीरों से घिरे तिरुनरैयूर में जो विराजमान हैं, उन पर मंगै नगर के स्वामी सन्त परकाल ने ये दस पद रचे, जो रागों में उत्तम् राग से पूरित हैं। मंगै ऐसा नगर है जहाँ खेतों में कलहंस अपनी रूपहली कांति फैलाते हैं। सन्त के इन पदों के गायन में जो समर्थ हैं वे तीनों लोकों में महान परमधाम में नित्यसूरियों के साथ रहकर प्रसन्नचित्त होकर रहेंगे।

(42) *वऱ्ऱा मुदु नीरोडु माल् वरै ऍलुम्*
*तुऱ्ऱु आह मुन् तुऱ्ऱिय तॊल् मुहलोने।*
*अऱ्ऱेन् अडियेन् उन्नैये अऴक्किन्ऱेन्*
*पॆऱ्ऱेन् अरुळ् तन्दिडु ऍन् ऍन्दै पिराने!*

**भावार्थ**

शोषित न किए जानेवाले सागर के साथ सात महापर्वतों को एक ही ग्रास में

निगलने के कारण शाश्वत कीर्ति प्राप्त प्रभु! मैं तुम्हारा हो चुका हूँ। मैं दास बनकर तुम्हीं को पुकारता हूँ। सौभाग्यशालियों में मेरा भी स्थान है। हे मेरे स्वामी मुझ पर दया करो, उपकार करो।

(43) *ऍप्पोदुम् पॅन् मलर् इट्टु इमैयोर् तॉलुदु तङ्गळ्*
*कै-प् पोदु कॉण्डु इऱैञ्जि-क् कऴल् मेल् वणङ्ग निन्राय्*
*इप्पोदु ऐन् नॅञ्जिन् उळ्ळे पुहुन्दायै-प् पोहल् ऑट्टेन्*
*नल् पोदु वण्डु किण्डुम् नऱैयूर् निन्ऱ नम्बीयो।*

**भावार्थ**

स्वर्ण पुष्पों को समर्पित कर, देवतागण सभी
कालों में तुम्हारी सेवा करते हैं।
अपने पुष्प सम करों से अञ्जलि भेंटकर,
वन्दना करते हैं। ऐसे वन्दनीय स्थित प्रभु
तुम मेरे हृदय के अन्दर प्रविष्ट हो चुके हो
अब तुम्हें बाहर नहीं जाने दूँगा। जहाँ मनोहर
पुष्पों पर भ्रमर विहार करते हैं ऐसे नरैयूर
में स्थित हे नम्बि!

(44) *आङ्गु वॅम् नरकत्तु अलुन्दुम् पोदु अञ्जेल् ऍन्ऱु*
*अडियेनै अङ्गे वन्दु*
*ताङ्गु तामरै अन्न पॉन् आर् अडि ऍम् पिरानै*
*उम्बकर्क अणियाय् निन्ऱ*
*वेङ्गडत्तु अरियै-प् पारि कीरियै वॅण्णेय्*
*उण्डु उरलिन् इडै आप्पुण्ड*
*तीम् करुम्बिनै तेनै नन् पालिनै अन्ऱि*
*ऍन् मनम् शिन्दै शॅय्यादे।*

**भावार्थ**

घोर नर्क में जब मग्न होकर मैं रह रहा था,
उस स्थान में आकर, भय मत करो, कहकर,
मुझ दास की रक्षा करनेवाले, कमल सम
कमनीय चरणवाले, मेरे उपकारक, देवलोकों से
भी विभूषित वेंकटगिरि पर निवास करनेवाले

हरि, केशी नामक श्व को विदीर्ण करनेवाले,
मक्खन खा ओखल बन्धन को प्राप्त
आनन्द! उत्तम मधु और उत्तम दूध तुम्हारा ही रूप है
यह सब त्यागकर मेरा मन और किसी का चिन्तन नहीं करेगा।

(45) *तेऱ् आळुम् वाळ् अरक्कन् ते॑न् इलङ्गै वेम् शमत्तु-प् पो॑नऱि वीळ्*
*पोऱ् आळुम् शिलै अदनाल् पोरु कणैहळ्*
*पोक्कुवित्ताय्! ऍन्रु नाळुम्*
*ताऱ् आळुम् वरै मार्बन् तण्*
*शेरै ऐम् पेरुमान् उम्बर् आळुम्*
*पेराळन् पेर् ओदुम् पे॑रियोरै*
*ओरु कालुम् पिरिहिलेने॥*

**भावार्थ**

जिससे समर्थ रथचालक राक्षस रावण की मनोहारी लंकापुरी ध्वस्त हो पतित हुई तुमने ऐसे अचूक बाणों का युद्ध में प्रयोग किया, ऐसा कहते हुए शीतल क्षेत्र के भगवान के नामों का जो जप करते हैं, उन महात्माओं से मैं कभी अलग नहीं होना चाहता। हे ईश्वर! तुम्हारा शैलसम वक्ष वनमाला से शोभायमान है। तुम देवगणों के शासक होने के महत्त्व से समन्वित हो।

(46) *पू माण् शेऱ् करुम् कुऴलाऱ् पोल् नडन्दु*
*वयल् निन्ऱ पे॑डैयोडु अन्नम्*
*ते माविन् इन निऴलिल् कण् तुयिलुम्*
*तण् शेरै अम्मान् तन्नै*
*वा मान् तेऱ्-प् परकालन् कलि कन्ऱि*
*ओ॑लि मालै को॑ण्डु तो॑ण्डीर्!*
*तू माण् शेऱ् पो॑न् अडि मेल् शूट्टुमिन्*
*नुम् तुणै-क् कैयाल् तो॑लुदु निन्ऱे।*

**भावार्थ**

जहाँ अति सुन्दर नीलकेशी ललनाओं के समान गमन कर खेतों में खड़ी हुई हँसियों के साथ राजहंस मधुर आम्र वृक्षों की मनोहर छाया में सोते हैं, वहाँ कलिकाल को नष्ट करनेवाले, सरपट दौड़नेवाले अश्वों से युक्त रथ के स्वामी सन्त परकाल ने नादमाला रची। ईश्वर भक्तों! यह माला लेकर पवित्र महिमामुक्त भगवान के सुन्दर चरण पर अंजलि हस्त से प्रणति समर्पित करो।

(47) *नॆॅल्लिल् कुवळै कण् काट्ट नीरिल् कुमुदम् वाय् काट्ट*
*अल्लि-क् कमलम् मुहम् काट्टुम् कऴनि अलुन्दूर निन्रानै*
*वल्लि प् पोदुम् बिल् कुयिल् कुवुम् मङ्गै वेन्दन् परकालन्*
*शॊॅल्लिल् पोलिन्द तमिऴन् मालै शोऴल पावम् निल्लावे॥*

**भावार्थ**

जहाँ खेतों में शालि-पौधों के मध्य कुवलय पुष्प सुन्दर नयनों के समान दिखते हैं, दलों से युक्त कमल उनके मुख के समान दिखते हैं। उस अलुन्दूर में स्थित सन्त परकाल ने शब्द सुशोभित तमिऴ् माला रची। यह परकाल तिरुमंगै जनपद के नृपति हैं। इस जनपद में बल्लियों झाड़-झंखाड़ों में कोयलें कूकती हैं। रचित माला के जप से समस्त पाप मिटते हैं।

(48) *तिरुवुक्कुम् तिरु आहिय शॆॅल्वा!*
*देय्वत्तुक्कु अरशे! शॆॅम्य्य कण्णा।*
*उरुव-च् शॆॅम् शुडर् आऴि वल्लाने!*
*उलहु उण्ड ओरुवा! तिरु मार्बा!*
*ऒॅरुवर्कु आऱरि उय्युम् वहै इन्रु आल्।*
*उडन् निनऱु ऐवर् ऎॅन् उळ् पुहुन्दु ऒॅऴियादु*
*अरुवि-त् तिन्रिड अञ्जि निन् अडैन्देन्*
*अलुन्दुर् मेल् निशै निन्र् अम्माने।*

**भावार्थ**

हे श्रीमन्! तुम लक्ष्मी के लिए लक्ष्मी के समान हो,
देवताओं के अधिराज हो,
तुम्हारे लोचन रक्त कमल के समान है,
हे रूपवान तुम ज्योतिर्मय चक्र चलाने में निपुण हो,
तुम अद्वितीय हो, तुम्हारे लोक को निगलने की क्षमता है,
तुम अपने वक्ष पर लक्ष्मी का आलिंगन करते हो,
एक इन्द्रिय संयम भी दुष्कर कार्य है,
मेरी पाँचों इन्द्रियाँ पीड़ा पहुँचाकर मुझे नष्ट किए दे रही हैं,
इसलिए हे अलुन्दूर की पश्चिम दिशा में
खड़े भगवन! मैं तुम्हारी शरण में आया हूँ।

(49) *कऱुत्तु-क् कञ्जनै अञ्ज मुनिन्दाय्।*
*कार् वण्णा! कडल् पोल् ओळि वण्णा।*

*इऱुत्तिट्टु आन् विडे ऍलुम् मुन् वॆन्राय्!*
*ऍन्दाय्! अन्दरम् ऍलुम् मुन् आनाय्!*
*पॊरुत्तु-क् कॊण्डु इरुन्दाल् पॊरुक्कोणा-प्*
*पोहमे नुहर्वान् पुहुन्दु ऐवर्*
*अऱुत्तु-त् तिन्ऱिड अञ्जि निन् अडैन्देन्*
*अलुन्दूर् मेल् निशै निन्ऱ अम्माने।*

भावार्थ

तुम्हारे क्रोध को देखकर कंस भी भयभीत हो गया,
तुमने उसका संहार किया।
सागर के समान कान्तिवाले, शीलवन्त, मेघवर्ण प्रभो!
तुमने प्राचीन काल में सात गोवृषभों का दमनकर, उन पर विजय पाई,
अन्तरिक्ष आदि सप्त लोकों के निर्वाहक पुराकाल में तुम ही हुए।
सहन करने का प्रयत्न करने पर भी,
मेरी पाँचों इन्द्रियाँ मुझे असहनीय पीड़ा पहुँची रही हैं,
इससे भयभीत होकर, हे पश्चिम दिशा में खड़े अलुन्दूर के भगवन!
मैं तुम्हारी शरण मैं आया हूँ।

(50) *तेरुविल तिरि शिऱु नोन्बियर् शॆम् रोडु कञ्जि*
*मरुवि पिरिन्दवर् वाय् मॊऴि मदियादु वन्दु अडैवीर्।*
*तिरुविल् पॊलि मऱैयोर् शिऱु पुलियूर्-च् चल शयनत्त*
*उरुव-क् कुरळ् अडिहल् अडि उणर्मिन् उणर्वीरि!*

भावार्थ

जो गलियों में भटकते हुए क्षुद्रव्रतधारी हैं,
जो मीठे अन्न के साथ मांड की भी इच्छा रखते हैं और
सज्जनों से अलग होकर रहते हैं,
उनके वचनों का आदर न करके,
परमात्मा के चरणों की शरण ले लो। ऐ विवेकी लोगो!
ऐश्वर्यपूरित, रूपवान। शिरुपुलियूर जलशयन में विराजमान,
वामन स्वामी के चरणों का ध्यान करो।

टिप्पणी :

*गलियों में भटकते क्षुद्रव्रतधारी संकेत जैनों के लिए हैं।*

(51) *शे॑रुवरै मुन् आशु अरुत शिलै अन्रो?*
*कैत्तलत्तदु एन्किन्राळ् आल्!*
*पो॑रु वरै मुन् पोर् तोलैत्त पोन्*
*आलि मर्रु ओ॑रु कै ऍन्आकन्राळ् आल्!*
*ओ॑रुवरैयुम् निन् ओ॑प्पार्*
*ओ॑प्पिला ऍन् अप्पा! ऍन्किन्राळ आल्!*
*करुवरै पोल् निन्रानै-क्*
*कण्ण पुरत्तु अम्मानै-क् कण्डाळ् को॑लो?*

**भावार्थ**

त्वरित गति से युद्धवीरों का विनाश करनेवाला धनुष उनके हाथ में है। उनके दूसरे हाथ में दीप्तिमान चक्र है, जिसने पुराकाल में पर्वत सम योद्धाओं के युद्ध का अन्त किया। मेरे अतुल स्वामी! लोग किसी को भी तुम्हारे समान नहीं मान सकते। यह हाय, हाय! करके तुम्हारे गुणों का वर्णन करती है—क्या सम्भव है इसने नीलगिरि के समान खड़े कण्णपुर के स्वामी को देखा हो?

(52) *ते॑ळ्ळियीर्! देवर्क्कुम् देवर् तिरु त् तक्कीर्*
*वे॑ळ्ळियीर्! वे॑य्य विलु निदि वण्णर् ओ!*
*तुळ्ळु नीर्-क् कण्ण पुरम् तो॑लुदाळ् इवळ्*
*कळ्वियो! कै वळै को॑ळुवदु तक्कदे?*

**भावार्थ**

हे सर्वज्ञ भगवान!
देवों के अधिदेव!
लक्ष्मी के अनुरूप पति!
दीप्तमान, निर्मल स्वभाववाले!
ऐ तपे सोने के समान वर्णवाले!
पूर्णतः जलयुक्त तालावों से समन्वित कण्णपुरम्
क्षेत्र की वन्दना करती यह, क्या चोरनी है?
इसके हाथों के कंगन चुराना क्या तुम्हारे लिए समुचित है।

(53) *कलड्ग मा-क् कडल् कडैन्दु अडैत्तु*
*इलङ्गैयर् कोनदु वरै आहम्*
*मलङ्ग वे॑म् शमत्तु अड्डु शरम्*
*तुरन्द ऍम् अडिहळुम् वारान् आल्!*

*इलङ्गु वेम् कदिर् इळ मदि अदनोडुम्*
*विडै मणि अडुम् आयन्*
*विलङ्गल् वेयिन्दु ओशैयुमाय्*
*इनि विळैवदु ओॅन्रु अरियेने।*

**भावार्थ**

जिन्होंने महासागर का ऐसा मन्थन किया जिससे वह क्षुब्ध हो उठा। जिन्होंने महासागर बन्धन किया, जिन्होंने युद्ध में ऐसे बाण चलाए जिससे पर्वतकार रावण भी क्षुब्ध हो उठा। ऐसे हमारे स्वामी नहीं आते। मुझे बालचन्द्र की किरणें भी उष्म लगती है। वृषभों की घंटिका पीड़ा देती है। गोपाल की पर्वतों पर बजाई गई वंशी की ध्वनि भी सुनाई पड़ रही है। इससे कौन फल मिलेगा, इसका मुझे भान नहीं।

(54) *करुमा मुहिल् तोय् नेॅडु माड-क्*
*कण्णपुरन्तु ऍम अडिहळै*
*तिरु मा महळाल् अरुळ् मारि*
*शेॅलु नीर् आलि बळ नाडन्*
*मरुवार् पुयल् कै-क् कलि कन्रि*
*मङ्गै वेन्दन् ओॅलि वल्लार्*
*इरु मा निलत्तुक्कु अरशु आहि*
*इमैयोर् इरैञ्ज वाल्वारे।*

**भावार्थ**

श्याम जलदों से आच्छादित उच्च महलों से शोभायमान, कण्णपुर में निवास करनेवाले हमारे स्वामी तिरुमंगै नगर के राजा कलिमर्दन ने गीतनाद रचा। कलिमर्दन पर श्री महालक्ष्मी की कृपादृष्टि है, वे स्वच्छ जलाशयों से समृद्ध आलिजनपद के नृपति हैं। जो नित्यवर्षा करनेवाले जलदों के समान उदार हस्त हैं, गीतनाद के गायन में समर्थ हैं, वे विशाल भूमि और स्वर्ग के राजा होकर, देवों द्वारा वन्दित होकर, चिरंजीवी होंगे।

(55) *कण्णार् कण्णपुरम् कडिहै कडि कमलुम्*
*तण् आर् तामरै शूल़ तलै-च् चङ्गम् मेल् तिशैयुळ्*
*विण्णोर् नाळ् मदियै विरिहिन्र वेॅम् शुडरै*
*कण्णार्-क् कण्डु कोॅण्डु कळिक्किन्रदु इङ्गु ऍन्रु कोॅलो?*

**भावार्थ**

नयनों को आकर्षित करनेवाला कण्णपुर, जो सुगन्धित शीतलताओं से युक्त

कमलों से घिरा हे, उस तलै-च्-चङ्गम की पश्चिम दिशा, उन क्षेत्रों में हैं—जहाँ देवों का अभिनवचन्द्र है, जो उष्णकिरणों से सम्पन्न सूर्य के समान है, उन्हें नयनभर देखकर आनन्दित होने का समय कब आएगा।

(56) *पॉ॑न् इवर् मेनि मरकतत्तिन्*
*पॉ॑ङ्गु इळम् शोदि अहलत्तु आरम्*
*मिन् इवर् वायिल् नल् वेदम् ओदुम्*
*वेदियर् वानवर् आवर् तोली*
*ऍन्नैयुम् नोक्कि ऍन् अलुहुळुम् नोक्कि*
*एन्दु इळम कॉ॑ङ्गैयुम् नोक्कुहिन्रार्*
*अन्नै ऍन् नोक्कु ऍन्रु अञ्जुहिन्रेन*
*अच्चो! ऑ॑रुवर् अलहिय वा!*

**भावार्थ**

स्वर्णमय इनका विग्रह है,
मरकत आभा से दीप्त वक्ष पर हार चमक रहा है,
ये अपने मुँह से उत्तम वेद पाठी, वैदिक देव हैं।
ऐ सखि! मुझे देखते ही ये मेरा नितम्ब देखते हैं।
और मेरे पुष्ट, तरुण स्तनों को भी देखते हैं,
मुझे भय लगता है कि माता मन में क्या
सोचती होगी? आश्चर्य है अद्वितीय
पुरुष के सौन्दर्य का ढंग भी कैसा अद्भुत होता है।

(57) *कॉ॑ङ्गु उण् वण्डे करियाह वन्दान् कॉ॑डियेऱ्कु मुन्*
*नङ्गळ् ईशन् नमक्के पणित्त मॉ॑ऴि शॅ॑यदिलन्*
*मङ्गै नल्लाय्! तॉ॑लुदुम् ऍलु पोय् अवन् मन्नुम् अर्*
*पॉ॑ङ्गु मुन्नीर् करैक्के मणि उनदु पुल्लाणिये।*

**भावार्थ**

मधु पीनेवाले भ्रमरों को साक्षी मानकर,
मुझ पापिन के पास आकर,
मेरे स्वामी ने जो प्रथम वचन कहे—
उनका मैंने पालन नहीं किया,
ऐ मेरे अनुकूल प्रिय सखी!
आओ चलकर पुल्लाणि की प्रार्थना करें,

उनके नित्यवास स्थान पर चलो,
जहाँ जलधि अपनी तरंगों से अपने
किनारे पर मणियों को ढकेलता है।

(58) *वाल़-क् कण्डोम् वन्दु काणिमन् तोॅणड़ीर्हाळ्!*
*केॅल्ल शेङ्कण् मा मुहिल् वण्ण्र मरुवुम् ऊर्*
*एॅल़ै-च् चेॅङ्काल् इन् तुणै नारैक्कु इरै तेडि*
*कूल़ै-प् पार्वै-क् कार् वयल् मेयुम् कुरुङ् गुडिये॥*

भावार्थ

मैंने अपनी मुक्ति का मार्ग देख लिया है,
ऐ दासो! तुम भी आकर देखो।
अरुणलोचन, नील मेघवर्ण वाले वराह भगवान
का नगर कुरुंगुडि है—जिसके श्यामल
खेतों में लाल कोमल चरणवाली, चंचल
लोचनी सारस धान चुगते हुए
अपने प्रियतम् के लिए आहार खोजती है।

(59) *दानवन् वेल्वि तन्निल् तनिये कुरळाय् निमिर्न्दु*
*वानमुम् मण् अहमुम् अलन्द तिरि विक्किरमन्*
*तेॅन् अमर् पूम् पोॅल़िल् शूल् तिरु मालिरुञ् शौले निन्र*
*वानवर् कोनै इन्रु वणङ्गि-त् तोल़ वल्लळ् कोलो?*

भावार्थ

जो राक्षसों के यज्ञ में अद्वितीय वामन होकर आए,
और बढ़कर आकाश, भूमि को मापनेवाले
त्रिविक्रम बन गए, वे मधुयुक्त पुष्पों से
सम्पन्न उपवनों से घिरे तिरुमालिरुचोलै
में स्थित देवों के स्वामी हैं। क्या उनकी प्रार्थना कर
आज सेवा करना भी सम्भव नहीं?

(60) *शोत्तुॅन निन्नै-त् तोॅलुवन् वरम् तर*
*पेय्च्चि मुलै उण्ड पिळ्ळाय्! पेॅरियन्*
*आय्च्चियर् अप्पम् तरुवर् अवर्काक-च्*
*चाऱ्रि ओर् आयिरम् शप्पाणि*
*तडम् कैहळाल् कोॅट्टाय् शप्पाणि।*

**भावार्थ**

स्तोत्र पाठ करते हुए मैं तुम्हारी प्रार्थना करती हूँ,
जिससे तुम वरदान दोगे।
ऐ राक्षसी का स्तन्यपान करनेवाले बालक!
गोपियाँ सौन्दर्य प्रदान करेंगी, उनको सन्तुष्ट करने के लिए
एक सहस्र शप्पाणि* बजाओ,
विशाल हाथों से बजाओ।

(61) *अळैन्दिट्टु ऍलुन्दु मदु कैटवर्हळ्*
*उलप्पिल् वलियार् अवर् पाल् वयिरम्*
*विळैन् दिट्टदु ऍन्रु ऍण्णि विण्णोर् पख*
*अवर् नाळ् ओ`ल्त्ति पे`रुमान् मुन नाळ्*
*वळैन्दिट्ट विल्लाळि वल् वाळ् उहिराल्*
*अळैन्दिट्टवन काण्मिन् इन्रु आयच्चियराल्*
*अळै वेण्णेय् उण्डु आप्पुण्डु इरुन्दवने।*

**भावार्थ**

असीम शक्ति के कारण मधु और कैटभ में अहंकार
जग गया और वह देवगणों के विरुद्ध हो गया,
देवतागणों ने भयभीत होकर, परमात्मा से
रक्षा की प्रार्थना की तब उन्होंने उन असुरों
का अन्त किया, वे ही परमात्मा पुराकाल में प्रबल धनुर्धरी राम थे। और
उसी परमात्मा ने शक्तिशाली, पर्वताकारी सुर हिरण्यकशिपु का शरीर
तीक्ष्ण नखों से विदीर्ण किया। वे ही परमात्मा आज देखो,
दही, मक्खन खाकर, गोपियों के हाथों बँधकर रहते हैं।

(62) *अन्न नडै मड आय्च्चि वयिरु अडित्तु*
*अञ्ज अरु वरै पोल्*
*मन्नु करम् कळिरु आर् उयिर् वव्विय*
*मैन्दनै मा कडल् शूल्*
*कन्नि नन् मा मदिळ् मङ्गैयर् कावलन्*
*कामरु शीर्-क् कलि कन्रि*
*इन् इशै मालैहळ् ईर् ऍलुम् वल्लवक्कु*
*एदुम् इडर् इल्लैये।*

---

* तालियाँ बजाना

**भावार्थ**

महापर्वताकारी काला हाथी कुवलयापीड, जिसे देखकर हंसगामिनी मुग्ध गोपियाँ और यशोदा भयभीत होकर उदर पीटती हैं, ऐ पराक्रमी कृष्ण! तुमने उसके भी प्रिय प्राण हरे। श्रीकृष्ण पर कलिविर्मदन सन्त परकाल ने मधुर द्विसप्तक गीत-मालाएँ रचीं—कलिविमर्दन, जो कामनाओं के पूर्ण करनेवाले मंगल गुणों से युक्त हैं और नील सागर से घिरे सुदृढ़ उत्तम प्राचीरों से परिवृत मंगैवासियों के राजा हैं। इन गीतमालाओं के गायन में निपुण लोगों के लिए कोई क्लेश नहीं है।

(63) *करैयाय् काक्कै-प् पिळ्ळाय्*
*करु मा मुहिल् पोल् निरत्तन्*
*उरै आर् तो॑ल् पुहऴ् उत्तमनै वर*
*करैयाय् काक्कै-प् पिळ्ळाय्!*

**भावार्थ**

ऐ काकपोत! तुम काँव-काँव करो,
काले मेघ के समान जिनका वर्ण है,
जो शब्दों में गायन योग्य हैं,
जो उत्तम शाश्वत कीर्तिमान हैं,
उनके आगमन के लिए,
ऐ काकपोत! तुम काँव-काँव करो।

(64) *कूवाय् पूङ्कुयिले!*
*कुळिर् मारि तडुत्तु उहन्द*
*मा वाय् कीण्ड मणि वण्णनै वर*
*कूवाय् पूङ् कुयिले!*

**भावार्थ**

ऐ सुन्दर कोकिलो! कूको,
जो शीतल वर्षा-धार को रोककर प्रहृष्ट हुए,
जिनका मणि के समान वर्ण है,
जिन्होंने अश्वमुख को विदीर्ण किया,
उनके आगमन के लिए—
ऐ सुन्दर कोकिलो! कूको

(65) *शो॑ऌलाय् पैङ् किळिये!*
*शुडर् आऴि वलन् उयर्त्त*

*मल्लार् तोळ् वड वेङ्गडवनै वर*
*शो॑ल्लाय् पैङ् किळिये।*

भावार्थ

ऐ हरित शुक! बोलो,
जो अपने दाहिने हाथ में तेजोमय चक्र धारण करते हैं,
प्रबल भुजाधारी हैं,
उत्तर वेंकटाचल के नायक हैं,
उनके आगमन के लिए–
ऐ हरित शुक! बोलो

(66) *इङ्गे पोदुम् को॑लो?*
*इन वेल् ने॑डुम् कण् कळिप्प*
*कोङ्गु आर् शोलै-क् कुडन्दै-क् किडन्द माल्*
*इङ्गे पोदुम् को॑लो?*

भावार्थ

क्या वे इधर आएँगे भी?
जिससे मेरे बरछे सदृश आयत्त नयन प्रहृष्ट होवें,
ऐसे कुडन्दै क्षेत्र में शयित सर्वेश्वर,
क्या इधर आएँगे भी?
जो मधुभरे उपवनों से समन्वित है।

(67) *केज्ण्डै ओ॑ण् कुणम् तुयिलुम् ऍन् निऱम्*
*पण्डु पण्डु पोल् ओ॑क्कुम् मिक्क शीर्-त्*
*तो॑ण्डर् इट्ट पूम् तूळविन् वाशमे*
*वण्डु को॑ण्डु वन्दु ऊदुमाहिले।*

भावार्थ

मेरे मीन के समान तड़पते नयन तभी सोएँगे,
मेरा वर्ण पूर्व रूप को तभी प्राप्त करेगा,
जब महान सुगुणों से युक्त भक्तों को समर्पित–
मनोहारी तुलसी की सुगन्ध,
मधुकर लाकर, मुझपर फूँकेगा।

(68) *नल् नें़ज्जे! नम् पेॅरुमान् नाळुम् इनिदु अमरुम्*
*अन्नम् शेर् कानल् अणि आलि कै तोॅलुदु*
*मुन्नम् शेर् वल् विनैहळ् पोह मुहिल् वण्णन्*
*पोॅन्नम् शेर् शेवडि मेल् पोदु अणिय-प् पे़ररोमे।*

भावार्थ

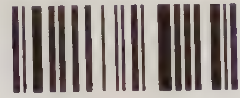
ऐ शुभ मन!
हमारे भगवान् नित्य जहाँ आनन्द के साथ विराजमान हैं,
जो हंस आश्रित सागरानूप देश है,
उस सुन्दर आलि जनपद को हमने हाथ जोड़े
जिससे पूर्व संचित घोर पाप दूर होते हैं
ऐसे मेघ वर्ण के, स्वर्णाभामय, अरुण
चरणों पर समर्पित, पुष्पों को धारण करने का
सौभाग्य हमें प्राप्त हुआ।

## तिरुनेॅडुन्ताण्डकम्

(69) *मु़ऱारा वन मुलैयाळ् पावै मायन्*
*मोॅय् अहलत्तुळ् इरुप्पाळ् अह्दुम् कण्डुम्*
*अऱ्ऱाळ् तन् नि़ऱै अलिन्दाळ् आविक्किन्ऱाळ्*
*अणि अरङ्गम् आडुदुमो? तोऴी! ऍन्नुम्*
*पेॅ़ररेन् वाय्-च् शोॅल् इरैयुम् पेश्-क् केळाळ्*
*पेर् पाडि-त् तण् कुडन्दै नहरुम् पाडि*
*पोॅर् तामरै-क् कयम् नीर् आड-प् पोनाळ्*
*पोॅरुवु अऱ़ाळ् ऍन् महळ् उम् पोॅन्नुम् अह्दे।*

भावार्थ

सुन्दर पुष्ट पयोधरों से युक्त प्रतिमा के समान,
महालक्ष्मी भगवान् के सुन्दर वक्ष पर वास करती हैं।
यह देखकर भी मेरी पुत्री भगवान की ही होकर रही है।
उसने अपना संयम त्याग दिया हे, निःश्वास भरती है
सखी से पूछती है कि क्या वह सुन्दर श्रीरंग जाकर,
रंगनाथ के गुण सागर में स्नान कर सकेंगी?
माँ उसके वचन नहीं सुनती।




वह शीतल कुडंदै क्षेत्र के गुण गाती है।
स्वर्ण कमल सरोवर में स्नान कर निकली,
निस्सम्मान है मेरी पुत्री।
क्या तुम्हारी सुन्दर पुत्री भी ऐसी ही है?

(70) *उळ् ऊरुम् शिन्दै नोय् ऍनक्के तन्दु ऍन्*
*ऑळि वळैयुम् मा निऱमुम् कॉण्डार् इङ्गे*
*तॅळ् ऊरिम् इळम् तॅङ्गिन् तेरल् मान्दि-च्*
*चेल् उहलुम् तिरु अरङ्गम् नम् ऊर् ऍन्न*
*कळ् ऊरुम् पैम् तुऴाय् मालैयानै-क्*
*कनाविडत्तिल् यान् काण्बन कण्ड पोदु*
*पुळ् ऊरुम् कळ्वा! नी पोहेल् ऍन्बन्*
*ऍन्रालुम् इदु नमक्कु ओर् पुलवि ताने?*

भावार्थ

मेरे अन्दर फैलनेवाली मानसिक व्याधि देकर, मेरे चमकीले कंगन और मेरी कान्ति उन्होंने हर ली, जाते समय कहा—कि जहाँ बाल नारिकेल वृक्ष से बहनेवाले मधु का पान कर मत्स्य संचार करते हैं, वह श्रीरंगम हमारा नगर है। मधुस्यदि हरित तुलसी माला से शोभित प्रियतम् को मैंने स्वप्न में देखा, देखकर मैंने कहा—ऐ गरुड़ पर सवार चोर मान जाओ! इतना होने पर भी यह अल्प संयोग मेरे लिए दुःखकारी ही रहा।

## तिरुक्कुरुन्ताण्डकम्

(71) *पायिरुम् परवै तन्नुळ्*
*परु वरै तिरित्तु वानाक्कर्*
*आय् इरुन्दु अमुदम् कॉण्ड*
*अप्पनै ऍम् पिरानै*
*वेय् इरुम् शोलै शूळ्न्दु*
*विरि कदिर् इरिय निन्ऱ*
*मायिरुञ् चोलै मेय*
*मैन्दने वणङ्गिनेने।*

भावार्थ

विशाल पर्वत को सागर में घुमाकर, मन्थन कर,
देवताओं के पक्ष में रहकर, अमृत ग्रहण कर,
बाँटकर उपकार करनेवाले मेरे स्वामी को,
जहाँ सूर्य किरणें नहीं पहुँचती हैं
ऐसे वेणुवनों से घिरे तिरुमालिरुंचोलै में
आनन्द के साथ वास करते युवक को देखकर,
मैंने प्रार्थना की।

## शिरिय तिरुमडल्

(72) *पोरार् नॆॅडु वेलोन् पोॅन् पॆॅयरोन् आहत्ते कूरान्द*
*वळ् उहिराल् कीण्डु कुड़ल् मालै*
*शीरार् तिरु मार्बिन् मेल् कट्टि शॆॅम् कुरुदि*
*शोरा-क् किड़न्दानै-क् कुड़्गुम-त् तोळ् कोॅट्टि*
*आरा ऍलुन्दान, अरि उरु आय् अन्रियुम्*

भावार्थ

"मैं भी तुम्हारी सीता के समान हूँ", यह कहती हुए शूर्पणखा आई
उसकी दीर्घ नासिका और दोनों कानों को तलवार से काटकर उसे भगा दिया।
शूर्पणखा के अग्रज खर को धनुष खींचकर मार डाला।
जिससे वे घोर नरक में नहीं पहुँचे
(मतलब नरकयातना यहीं पर भोगी)
रक्ताधर कंचुकबद्ध पीन पयोधर वैदेही के कारण
दीर्घ भुज रावण के दसों सिरों को काटकर कमलनयन प्रभु प्रसन्न हुए।

## पॆॅरियतिरुमडल्

(73) *मन् नुम् कडल् मल्लै मायवने-वानवर् तम्*
*शॆॅन्नि मणि-च् चुडरे-तण् काल् विरल वलियै*
*तन्नै-पिर्र अरिया-त् तत्तुवत्तै, मुत्तिनै*
*अन् नन्तै मीनै अरियै अरु मरैयै,*
*मुन् इत् उलहु उण्ड मूर्त्तियै-कोवलूर्*

*मन् नुम् इड़ै कलि एँम् मायवनै, पेय् अलऱ-प्*
*पिन् नुम् मुलै उण्ड् पिळ्ळैयै अळ्ळल्वाय*
*अन्नम् इरै तेर अळुन्दूरए लुम शुडरै,*
*तेॅन् तिल्लै-चू चित्तरकूडत्तु एॅन शेॅल्वनै।*

भावार्थ

जो नित्यसूरियों के समान ज्योतिर्मय हैं
जो तण्काल क्षेत्र के प्रभु हैं
जो अविनाशी एवं अविज्ञात हैं
जो मुक्ताफल हैं,
जो हंस हैं,
जो मीन सदृश हैं,
जो हरि हैं,
जो दुर्ज्ञेयवेद हैं,
जो इस जगत् को निगलनेवाले हैं।
जो कोवलूर क्षेत्र में वास करनेवाले मायावी हैं।
जो पूतना के रोते रहने पर भी उसके स्तनपायी बालक हैं।
जो अळुन्दूर में स्थित ज्योति हैं जहाँ हंस चारा खोजता रहता है।
जो दक्षिण तिल्लै चित्रकूट में विराजमान हैं वे प्रभु मेरे स्वामी हैं।



*दिव्य प्रबन्ध* रचना-संग्रह नाथमुनि के समय में सम्पादित हुआ था। आऴ्वन्दार ने नम्माऴ्वार को आचार्य के स्थान पर प्रतिस्थापित किया। रामानुजाचार्य ने *दिव्य प्रबन्ध* की सहायता से अन्य धर्मावलम्बियों को पराजित कर वैष्णव धर्म की प्रतिस्थापना की थी एवं आऴ्वारों द्वारा रचित प्रबन्ध को आधार बनाकर *ब्रह्मसूत्र भाष्य* की रचना की और भाष्यकार नाम से प्रसिद्ध हुए।

*दिव्य प्रबन्ध* 'दक्षिण वेद' कहलाता है। चौदहवीं शताब्दी के आसपास श्रीवेदान्त देशिक ने *दिव्य प्रबन्ध* की निन्दा करनेवाले अन्य धर्मावलम्बियों को पराजित कर यह सिद्ध किया कि 'दक्षिण वेद' (*दिव्य प्रबन्ध*) संस्कृत में विरचित वेद की तुलना में किसी भी स्तर में कम नहीं कहा जा सकता है।

समस्त *दिव्य प्रबन्ध* के लिए संस्कृत मिश्रित तमिऴ् में, जिसे 'मणिप्रवाऴ शैली' कहते हैं, टीका लिखनेवालों में 'पॅरियवाच्चान रिऴै' का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

प्रस्तुत संकलन के लिए पदों को चुनते समय भक्ति के विविध रूप, आऴ्वारों का नाना प्रकार के अनुभव, शैली, सिद्धान्त आदि का ध्यान रखा गया है। साथ ही, पौराणिक कथाएँ और सांस्कृतिक शब्दावलियों के लिए आवश्यक पाद टिप्पणी देकर समझाने का प्रयास किया गया है। साथ ही, प्रत्येक आऴ्वार के साहित्य से कुछ चुने हुए पद मूल रूप के साथ लिप्यन्तरण एवं भावानुवाद सहित दिए गए हैं।

प्रस्तुत कृति में अनुवाद के लिए शान्तिनिकेतन विश्व-भारती से प्रकाशित पं. श्रीनिवास राघवन कृत *दिव्य प्रबन्ध* के अनूदित ग्रन्थों से पूरी सहायता ली है।

प्रस्तुत संग्रह के लिए आऴ्वार प्रणीत पदों का संकलन, सम्पादन एवं रूपान्तर तमिळ और हिन्दी के यशस्वी विद्वान **डॉ. एन. सुन्दरम** ने किया है। आप विभिन्न हिन्दीसेवी संस्थाओं के लिए पिछले पचास वर्षों से कार्यरत हैं और अपनी सेवाओं के लिए कई प्रतिष्ठानों से सम्मानित एवं अलंकृत हैं।